रजिस्ट्री सं० डी- 222 REGISTERED No. D-222

भारत का राजपत्र
The Gazette of India

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 7] नई दिल्ली, शनिवार, फरवरी 12, 1966 (माघ 23, 1887)

No. 7] NEW DELHI, SATURDAY, FEBRUARY 12, 1966 (MAGHA 23, 1887)

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके

Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation

सूचना
NOTICE

नीचे लिखे भारत के असाधारण राजपत्र 31 जनवरी 1966 तक प्रकाशित किये गये थे :—

The undermentioned *Gazettes of India Extraordinary* were published up to the 31st January 1966 :—

अंक Issue No.	संख्या और तारीख No. and Date	द्वारा जारी किया गया Issued by	विषय Subject
22	No. 16-ITC(PN)/66, dt. 25-1-66	Min. of Commerce	Import Policy for April 1965 March 1966 condition on utilisation of licences.
	No. 17-ITC(PN)/66, dt. 25-1-66	Do.	Import of Taxi/Fare meters falling under S. No. 293, 295 & 297/IV April/65-March/66.
	No. 18-ITC(PN)/66, dt. 25-1-66	Do.	Import policy for books, periodicals and journals falling under S. Nos. 169-170/IV for the period April 1965-March/66.
	No. 19-ITC(PN)/66, dt. 25-1-66	Do.	Import of Capital Goods & other items under National Defence Remittance Scheme.
23	No. 8-Pres/66, dt. 26-1-66	Presidents Secretariat	Awards by the President.
24	No. 31/17/65-Ad. III-B, dt. 26-1-66	Min. of Finance	President awards on appreciation certificate to Shri T. A. Krishnanswamy, Deputy Supdt. of Central Excise Pondicharry for exceptionally meritorious service.
	सं० 31/17/65—ए० डी०-3-बी, दिनांक 26-1-66	वित्त मंत्रालय	श्री टी० ए० कृष्णस्वामी, केन्द्रीय उत्पादन शुल्क के उप-अधीक्षक को राष्ट्रपति ने असाधारण प्रशस्त सेवा के लिये प्रशंसा प्रमाण-पत्र प्रदान किया ।
25	No. 20-ITC(PN)/66, dt. 29-1-66	Min. of Commerce	Import policy for P. G. Red Oxide falling under S. No. 34-37 (d)/V of the I.T.C. Schedule for the period April/65-March/1966.
	No. 21-ITC(PN)/66, dt. 29-1-66	Do.	Import Policy for emery grain, emery powder, abrasive and carborundum grain, and powder falling under S. No. 25(d) II during April/65-March/66.
26	No. 22-ITC(PN)/66, dt. 31-1-66	Min. of Commerce	Import policy for Bismuth metal falling under S. No 17 (a)(i)/II-April/65-March/66

ऊपर लिखे असाधारण राजपत्रों की प्रतियां प्रकाशन प्रबन्धक, सिविल लाइन्स, दिल्ली के नाम मांगपत्र भेजने पर भेज दी जाएंगी । मांगपत्र प्रबन्धक के पास इन राजपत्रों के जारी होने की तारीख से दस दिन के भीतर पहुंच जाने चाहिएं ।

Copies of the *Gazettes Extraordinary* mentioned above will be supplied on Indent to the Manager of Publications, Civil Lines, Delhi. Indents should be submitted so as to reach the Manager within ten days of the date of issue of these Gazettes.

विषय-सूची
(CONTENTS)

	पृष्ठ (Pages)
भाग I—खंड 1—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों तथा उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधीतर नियमों, विनियमों तथा आदेशों और संकल्पों से संबंधित अधिसूचनाएं ..	101
भाग I—खंड 2—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों तथा उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई सरकारी अफसरों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि से संबंधित अधिसूचनाएं	129
भाग I—खंड 3—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी की गई विधीतर नियमों, विनियमों, आदेशों और संकल्पों से संबंधित अधिसूचनाएं ..	9
भाग I—खंड 4—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी की गई अफसरों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि से संबंधित अधिसूचनाएं ..	83
भाग II—खंड 1—अधिनियम, अध्यादेश और विनियम	—
भाग II—खंड 2—विधेयक और विधेयकों संबंधी प्रवर समितियों की रिपोर्ट	—
भाग II—खंड 3—उप-खंड (i)—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और (संघ राज्य क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) केन्द्रीय प्राधिकारों द्वारा जारी किए गए विधि के अन्तर्गत बनाए और जारी किए गए साधारण नियम (जिनमें साधारण प्रकार के आदेश, उप-नियम आदि सम्मिलित हैं)	225
भाग II—खंड 3—उपखंड (ii)—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और (संघ-राज्य क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) केन्द्रीय प्राधिकारों द्वारा विधि के अन्तर्गत बनाए और जारी किए गए आदेश और अधिसूचनाएं	375
भाग II—खंड 4—रक्षा मंत्रालय द्वारा अधिसूचित विधिक नियम और आदेश	31
भाग III—खंड 1—महालेखापरीक्षक, संघ-लोक-सेवा आयोग, रेल प्रशासन, उच्च न्यायालयों और भारत सरकार के संलग्न तथा अधीन कार्यालयों द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं ..	107
भाग III—खंड 2—एकस्व कार्यालय, कलकत्ता द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं और नोटिसें ..	53
भाग III—खंड 3—मुख्य आयुक्तों द्वारा या उनके प्राधिकार से जारी की गई अधिसूचनाएं ..	17
भाग III—खंड 4—विधिक निकायों द्वारा जारी की गई विविध अधिसूचनाएं जिसमें अधिसूचनाएं, आदेश, विज्ञापन और नोटिसें शामिल हैं ..	115
भाग IV—गैर-सरकारी व्यक्तियों और गैर-सरकारी संस्थाओं के विज्ञापन तथा नोटिसें ..	31
पूरक सं० 7—	
5 फरवरी 1966 को समाप्त होने वाले सप्ताह की महामारी संबंधी साप्ताहिक रिपोर्ट ..	217
15 जनवरी 1966 को समाप्त होने वाले सप्ताह के दौरान भारत में 30,000 तथा उससे अधिक आबादी के शहरों में जन्म, तथा बड़ी बीमारियों से हुई मृत्यु से संबंधित आंकड़े ..	229

PART I—SECTION 1.—Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations and Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court	101
PART I—SECTION 2.—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc., of Government Officers issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court	129
PART I—SECTION 3.—Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions, issued by the Ministry of Defence	9
PART I—SECTION 4.—Notifications regarding Appointments. Promotions, Leave, etc., of Officers issued by the Ministry of Defence	83
PART II—SECTION 1.—Acts, Ordinances and Regulations	—
PART II—SECTION 2.—Bills and Reports of Select Committees on Bills	—
PART II—SECTION 3.—SUB-SECTION (i)—General Statutory Rules (including orders, bye-laws, etc. of a general character) issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than the Administrations of Union Territories) ..	225
PART II—SECTION 3.—SUB-SECTION (ii)—Statutory Orders and Notifications issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than the Administrations of Union Territories) ..	375
PART II—SECTION 4.—Statutory Rules and Orders notified by the Ministry of Defence ..	31
PART III—SECTION 1.—Notifications issued by the Auditor General, Union Public Service Commission. Railway Administration, High Courts and the Attached and Subordinate Offices of the Government of India	107
PART III—SECTION 2.—Notifications and Notices issued by the Patent Offices, Calcutta ..	53
PART III—SECTION 3.—Notifications issued by or under the authority of Chief Commissioners	17
PART III—SECTION 4.—Miscellaneous Notifications including Notifications, Orders, Advertisements and Notices issued by Statutory Bodies	115
PART IV—Advertisement and Notices by Private Individuals and Private Bodies ..	31
SUPPLEMENT No. 7—	
Weekly Epidemiological Reports for week-ending 5th February 1966	217
Births and Deaths from Principal diseases in towns with a population of 30,000 and over in India during week-ending 15th January 1966	229

भाग I—खण्ड 1

PART I—SECTION 1

(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों तथा उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधीतर नियमों, विनियमों तथा आदेशों और संकल्पों से संबंधित अधिसूचनाएं

Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court

---

राष्ट्रपति सचिवालय

नई दिल्ली, दिनांक 1 जनवरी 1966

सं० 9 प्रेज/66—राष्ट्रपति निम्नांकित व्यक्तियों को, पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रिया में प्रदर्शित वीरता के लिए "महा वीर चक्र" प्रदान करने का अनुमोदन करते हैं :—

1. ब्रिगेडियर जोरावर चंद बक्शी, (आई सी–1510), वीर चक्र, 5 वीं बटालियन, गोरखा राईफल्स।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—5 अगस्त, 1965)

ब्रिगेडियर जोरावर चंद बक्शी एक ब्रिगेड के कमान्डर थे जिसने जम्मू एवं काश्मीर में तनमार्ग और पत्तन क्षेत्र और बाद में उड़ी-पूंछ के उभरे हुये क्षेत्र में 5 अगस्त 1965 से 23 सितम्बर 1965 को युद्धविराम होने तक कार्रवाई की।

ब्रिगेडियर बक्शी को बसाली, हाजी पीर दर्रा और कहूता पर कब्जा करने का कठिन काम सौंपा गया। हाजी पीर लगभग 9,000 फुट की ऊंचाई पर है और इस पर अधिकार करना उड़ी-पूंछ को एक दूसरे से मिलाने के लिये जरूरी था। हाजी पीर के रास्ते से उड़ी और पूंछ को मिलाने वाली सड़क प्रयोग में न आने के कारण खराब हो गई थी और कुछ एक स्थानों पर टूट-फूट गई थी। हाजी पीर पहुंचने के लिये पश्चिम में सांक और लेडवाली गली और पूर्व में बडोरी, कुथनरदी गली और किरण के पहाड़ी स्थलों के ऊपर से होकर जाने के अतिरिक्त और कोई सीधा रास्ता न था। सिलीकोट से, जहां उनका ब्रिगेड हैडक्वार्टर था, हाजी पीर 14 मील की दूरी पर था। इसके आगे और दायें बायें शत्रु की सुरक्षित चौकियां थी।

सारे रास्ते ब्रिगेडियर बक्शी सब से आगे रहे। जैसे ही एक ध्येय पर अधिकार हो जाता, वह स्वयं पुनर्गठन में सहायता करते और रास्ता दिखाते। बहुत बार, शत्रु की ओर से भारी और लगातार की जा रही गोलाबारी में अपनी निजी सुविधा या बचाव की परवाह न करते हुए वह सबसे आगे रहे। हाजी पीर पर अधिकार कर लेने के पश्चात् उन्होंने अपना युद्ध कौशल का हैडक्वार्टर तत्काल आगे भेज दिया यद्यपि वह जानते थे कि शत्रु निश्चय ही इस पर खूब जोर से जवाबी हमला करेगा।

इस कार्यवाही में ब्रिगेडियर जोरावर चंद बक्शी ने असा रण नेतृत्व, दृढ़ संकल्प और अपने जवानों के साथ मिलकर कठिनाइयां सहने के साथ-साथ जिस उच्च स्तर की योजना बनाने और युद्ध कौशल का प्रदर्शन किया वे सब भारतीय सेना की उच्चतम परम्पराओं के अनुरूप हैं।

2. लेफ्टिनेंट कर्नल अरुण कुमार श्रीधर वैद्य (आई सी–1701) दक्कन हार्स (9 हार्स)।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—6 सितम्बर, 1965)

लेफ्टिनेंट कर्नल अरुण कुमार श्रीधर वैद्य पाकिस्तान के विरुद्ध हाल ही में की गई कार्यवाहियों में असाल उत्तर और चीमा (पंजाब) में 6 से 11 सितम्बर 1965 तक अपनी यूनिट द्वारा लड़ी गई लड़ाइयों में दक्कन हार्स की कमान कर रहे थे। लड़ाई में उन्होंने उत्साहवर्धक नेतृत्व का प्रदर्शन किया। अपनी यूनिट को तरतीब देने और भारी कठिनाइयों का मुकाबिला करने और शत्रु के पैटन टैंकों को भारी हानि पहुंचाने में सराहनीय ढंग से काम लिया।

अपनी निजी सुरक्षा की परवाह किये बिना अपने अनथक प्रयत्नों से वह एक सैक्टर से दूसरे सैक्टर में जाते रहे और इस प्रकार अपने निजी उदाहरण से अपने जवानों को प्रेरित करते रहे। असाल उत्तर की लड़ाई में शत्रु के बख्तर बंद हमलों को रोकने और बाद में चीमा में 10–11 सितम्बर, 1965 को शत्रु के टैंकों को तहस-नहस करने के लिये बड़ी हद तक आप ही जिम्मेदार थे।

3. लेफ्टिनेंट कर्नल रघुबीर सिंह (आई सी—6596), 18 वीं बटालियन।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—7 सितम्बर, 1965)

असाल उत्तर की लड़ाई में लेफ्टिनेंट कर्नल रघुबीर सिंह राजपूताना राइफलस रेजिमेंट की एक बटालियन की कमान कर रहे थे। क्षेत्र की रक्षा करने वाले ब्रिगेड की पश्चिमी अग्रिम स्थिति पर यह यूनिट तैनात थी। 7 से 10 सितम्बर 1965 तक के समय में इस यूनिट पर पाकिस्तानी सेना ने बख्तरबन्द गाड़ियों तथा तोपों की जबरदस्त गोलाबारी के साथ दो बार दिन में तथा दो बार रात में आक्रमण किया।

9 सितम्बर को रात्रि के 9 बजे चांद की रोशनी में शत्रु सेना ने टैंकों के साथ जोरदार आक्रमण किया और हमारी अग्रिम कम्पनी की चौकियां ले लीं। स्थिति गम्भीर हो गई और इन कम्पनियों से सम्बन्ध टूट गया। लेफ्टिनेंट कर्नल रघुबीर सिंह शत्रु के टैंक आक्रमण की सम्भावना देख कर अपनी कमान चौकी से निकल कर तथा अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की चिन्ता किए बिना शत्रु के तीन टैंकों के बीच में से होते हुए उन कम्पनियों में पहुंचे। शत्रु की जोरदार गोलाबारी के बीच में से वह आगे बढ़े और कम्पनी कमाण्डरों के साथ सम्बन्ध स्थापित किया। कमांडिंग अफसर के इस साहस, दृढ़ संकल्प तथा नेतृत्व से जवानों को प्रेरणा मिली जिससे उनकी कमान में उन्होंने शत्रु के 20 टैंक नष्ट कर दिए।

4. ब्रिगेडियर टामस कृष्णन त्यागराज (आई सी—4321), आर्मर्ड कोर।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—8 सितम्बर, 1965)

8 सितम्बर 1965 को पाकिस्तानी सेना ने खेमकरन क्षेत्र में बहुत बड़ा आक्रमण किया। पैटन टैंकों के प्रयोग से शत्रु ने हमारे क्षेत्र में दूर तक आने की इच्छा से हमारे सैनिकों को घेरे में डालने की चेष्टा की। ब्रिगेडियर टामस कृष्णन त्यागराज की कमान में आर्मर्ड ब्रिगेड को तुरन्त शत्रु को आगे बढ़ने से रोकने के लिये भेजा गया।

शत्रु का मुकाबिला करने के लिये ब्रिगेडियर त्यागराज ने अपने टैंकों को ठीक ढंग से तैनात किया और शत्रु के बड़े आक्रमणों के विरुद्ध दृढ़तापूर्वक वहां डटे रहे। लड़ाई के अन्त में शत्रु के 40 पैटन तथा शैफी टैंक या तो नष्ट कर दिये गये या ठीक हालत में अधिकार में ले लिये गये और शत्रु की लगभग दो पैटन रेजिमेंटें नष्ट हुईं।

शत्रु को बहुत हानि के साथ पीछे हटना पड़ा और इस क्षेत्र में हमारी चौकियों पर फिर कभी इतने बड़े आक्रमण की चेष्टा नहीं की।

ब्रिगेडियर टामस कृष्णन त्यागराज के साहस, नेतृत्व तथा दृढ़ता से यह निस्चात्मक विजय शत्रु की बख्तरबन्द सेना के विरुद्ध सम्भव हुई।

5. 3940154 लांस हवलदार नौबत राम, 6 वीं बटालियन, 6 डोगरा रेजिमेंट।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—8 सितम्बर, 1965)

8–9 सितम्बर, 1965 की रात को लांस हवलदार नौबत राम एक कम्पनी की आगे बढ़ रही प्लाटून के कमान्डर थे जिसे जम्मू एवं कश्मीर में हाजी पीर दर्रा के दक्षिण पूर्व में चन्द मील पर एक-एक पहाड़ी पर अधिकार करने का कार्य सौंपा गया। जब आगे वाली कम्पनी अभी मोर्चे संभाल रही थी, शत्रु ने आक्रमण करने वाले हमारे सैनिकों पर मार्टर से भारी गोलाबारी शुरू कर दी। लांस हवलदार के गोली लगी और बाजू घायल हो गया परन्तु इस घाव से वह हमले में अपनी प्लाटून का नेतृत्व करने से पीछे न हटे। वह अपनी प्लाटून के साथ शत्रु की दाईं ओर बढ़ा लेकिन शत्रु की हल्की मशीन गन से हो रही ठीक निशाने की गोलाबारी के बीच आ गया। इस समय लांस हवलदार नौबत राम ने रेंगते हुए, शत्रु के मजबूत मोर्चे के पीछे की ओर जाना शुरू किया। शत्रु की हल्की मशीन गन से चन्द एक गज की दूरी पर जाकर उन्होंने एक हथगोला फेंका और अपनी संगीन के साथ मोर्चे में घुस गये। इस प्रकार उन्होंने अकेले ही शत्रु की हल्की मशीन गन पर कब्जा कर लिया और दो तोपचियों को मार दिया। इसी बीच उनकी प्लाटून शत्रु की चौकी पर आ पहुंची और बिना किसी और हानि के इस पर अधिकार कर लिया।

इसके बाद भी इस नान कमीशण्ड आफिसर ने वहां से हटने से इन्कार कर दिया क्योंकि वह जानते थे कि इस पहाड़ी पर अधिकार करना गीतियां पर शत्रु की मुख्य चौकी पर बड़ा हमला करने का प्रथम भाग था।

20 सितम्बर 1965 को जब गीतियां पर शत्रु की मुख्य चौकी पर आक्रमण शुरू हुआ लांस हवलदार नौबत राम अग्रिम कम्पनी की अगली प्लाटून के साथ थे। जब उनकी प्लाटून ध्येय से केवल एक सौ गज से भी कम दूरी पर थी, शत्रु ने भारी गोलाबारी शुरू कर दी। लांस हवलदार नौबत राम घायल हो गये परन्तु अपने घावों की चिन्ता न करते हुए वे हमले का नेतृत्व करते रहे और उन्होंने शत्रु के ठिकानों पर खड़े होने का स्थान बना ही लिया। शत्रु की दो मशीनगनें हमला को रोक रही थी परन्तु लांस हवलदार ने हथगोले फेंक कर उन्हें शांत कर दिया और उन पर अधिकार भी कर लिया। एक बार फिर लांस हवलदार नौबत राम को मशीनगन का गोला लगा। परन्तु इसकी परवाह किये बिना वहां से बाहर निकाले जाने के लिये मना कर दिया और अपनी प्लाटून की कमान संभाले रख कर शत्रु के जवाबी हमले का मुकाबिला करने के लिये उसका पुनर्गठन किया। शत्रु ने जवाबी हमला किया और शत्रु के कुछ सैनिक उसकी अगली सेक्शन चौकी में घुस गये। लेकिन लांस हवलदार नौबत राम आगे बढ़े और हथगोले फेंक कर शत्रु के पैर जमाने की कोशिश विफल कर दी। लांस हवलदार नौबत राम के शौर्य और नेतृत्व के निजी उदाहरण ने उनकी प्लाटून का उत्साह इस हद तक बढ़ाया कि शत्रु को भारी हानि पहुंचाते हुए उसके प्रत्येक जवाबी हमले विफल कर दिये।

इस कार्यवाही में लांस हवलदार नौबत राम तीन बार घायल हुये। हर बार उन्होंने अपने को बाहर निकाले जाने से मना कर दिया और यद्यपि बहुत ही खून निकल रहा था उन्होंने अपनी प्लाटून की कमान करना जारी रखा। शत्रु की सेना को भगा देने के पश्चात ही वे बेहोश होकर गिर पड़े।

कार्यवाहियों के दौरान लांस हवलदार नौबत राम ने भारतीय सेना की सर्वोत्तम परम्पराओं के अनुकूल साहस, नेतृत्व और कर्त्तव्य के प्रति निष्ठा का परिचय दिया।

6. लेफ्टिनेंट कर्नल मदन मोहन सिंह बख्शी (आई सी—1697) हडसन्ज हार्स (4 हार्स)।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—11 सितम्बर, 1965)

लेफ्टिनेंट कर्नल मदन मोहन सिंह बक्शी की कमान में हडसन्ज हार्स को 11 सितम्बर 1965 को फिल्लौरा पर ब्रिगेड के आक्रमण के दौरान एक आर्मड ब्रिगेड के बायें पहलू की रक्षा करने का कार्य सौंपा गया और उसे शत्रु के पीछे हटते हुए बख्तरबन्द दस्ते को गदगोर-फिल्लौरा सड़कों के एक ओर रास्ते में ही रोक लेने को भी कहा गया। जब स्क्वाड्रन आगे बढ़ रहे थे रेजिमेंट हैडक्वार्टर्ज होने वाली बख्तरबन्द लड़ाई के लिये उचित स्थान की देख-भाल कर रहे थे। लेफ्टिनेंट कर्नल बक्शी ने अचानक शत्रु के पैटन टैंकों की एक स्क्वाड्रन को लिब्बे-फिल्लौरा सड़क की एक ओर गोलाबारी करने की स्थिति में देखा। बिना घबराये उन्होंने उनसे मुकाबला किया और शत्रु के दो टैंक नष्ट कर दिये। शीघ्र ही शत्रु के स्क्वाड्रन अन्य टैंकों ने अपनी तोपों के मुंह लेफ्टिनेंट कर्नल बक्शी के टैंक की ओर फेर दिये। इसकी तनिक परवाह किये बिना लेफ्टिनेंट कर्नल बक्शी शत्रु के टैंकों के बीच में से जाते हुए हमला करने के लिये आगे बढ़े, यद्यपि इस समय तक उनके टैंक पर दो गोले लग चुके थे। इन कठिनाइयों के बावजूद उन्होंने अपने एक ही टैंक से बहादुरी के साथ हमला किया, सड़क पार की और शत्रु के एक और टैंक को नष्ट कर दिया। जब उनके टैंक पर चौथा गोला लगा था और उसे आग लग गई जिस पर उन्होंने जवानों को बाहर कूदने को कहा। जब लेफ्टिनेंट कर्नल बक्शी और उनके जवान ऐसा कर रहे थे तो उन पर मशीनगन से भारी गोलाबारी होने लगी और उन्हें शत्रु टैंकों के सैनिकों ने घेर लिया जो कि पहले ही अपने जलते हुए टैंकों से बाहर कूद चुके थे। लेफ्टिनेंट कर्नल बक्शी और उनके जवान पकड़ में न आये और निकट ही गन्ने के खेत में छिप गये जहां से उन्हें 17 हार्स के आगे बढ़ते हुए टैंकों ने आकर निकाला। इसी बीच हैडसन्ज हार्स की एक स्क्वाड्रन आगे बढ़ी और शत्रु के बख्तरबन्द दस्ता से टक्कर ली और इससे शत्रु का ध्यान अपने कमांडिंग आफिसर से हटा दिया। इसके बाद लेफ्टिनेंट कर्नल ने रेजिमेंट की कमान संभाली। इनके उत्साह वर्धक नेतृत्व ने फिल्लौरा पर कब्जा करने में बड़ा योगदान दिया।

भारी कठिनाइयों के बावजूद लेफ्टिनेंट कर्नल मदन मोहन सिंह बक्शी ने जिस उदाहरणीय साहस, दृढ़ संकल्प और नुतृत्व का परिचय दिया वे भारतीय सेना की उच्च परम्परा के अनुरूप थे।

7. लेफ्टिनेंट कर्नल पागदाला कुप्पूस्वामी नन्दगोपाल (आई सी—5499), सिख लाईट इन्फेंट्री।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—28 सितम्बर, 1965)

लेफ्टिनेंट कर्नल पागदाला कुप्पूस्वामी नन्दगोपाल 28 सितम्बर, 1965 को, सिख लाईट इन्फेंटरी रेजिमेंट की एक बटालियन के कमान अफसर थे। उनको आज्ञा मिली कि पहले वे दो महत्वपूर्ण पहाड़ी ठिकानों को अपने अधिकार में ले लें ताकि जम्मू एवं कश्मीर के एक ठिकाने पर कब्जा किया जा सके, जिसे पाकिस्तानी सेना ने युद्ध विराम की अवहेलना करके कब्जे में ले लिया था। अपने प्राणों की परवाह न करते हुए लेफ्टिनेंट कर्नल नन्दगोपाल ने स्वयं इस आक्रमण का नेतृत्व किया और दोनों ठिकानों पर कब्जा कर लिया। इस पर शत्रु ने भारी तोपखाना लाकर तीन जवाबी हमले किए। इनमें से दो जवाबी हमले विफल बना दिए गए लेकिन भारी हताहतों और शत्रु के दबाव के कारण हमारी सेना को एक पहाड़ी ठिकाने से पीछे हटना पड़ा। इस अवसर

पर लेफ्टिनेंट कर्नल नन्दगोपाल ने बड़े धैर्यपूर्वक और प्रत्युत्पन्नमति का परिचय देते हुए शत्रु के बढ़ाव को रोके रखा और अपनी स्थिति मजबूत की । 3-4 अक्तूबर 1965 की रात को लेफ्टिनेंट कर्नल नन्दगोपाल की बटालियन को एक महार बटालियन की सहायता से आक्रमण करके उसी ठिकाने को खाली कराने का कार्य सौंपा गया। शत्रु के भारी विरोध और गोलाबारी के होते हुए लेफ्टिनेंट कर्नल नन्दगोपाल की बटालियन ने 4 अक्तूबर 1965 को सुबह 6-30 बजे तक अपना लक्ष्य प्राप्त कर लिया। इसी बीच शत्रु ने महार बटालियन को पीछे धकेल दिया और उस ठिकाने पर कब्जा करने की हमारी योजना को मटियामेंट कर दिया । शत्रु के तोपखाने की भारी गोलाबारी और पदाति सेना के विरोध के मुकाबिले में सिख लाइट इन्फेंटरी उस दुर्गम ढलाव पर ऊपर चढ़ती गई। इन हताहतों और शक्तिशाली विरोध के होते हुए भी लेफ्टिनेंट कर्नल नन्दगोपाल के नेतृत्व और उत्साह के कारण यह सेना आगे बढ़ती गई और उसी दिन सांय 6 बजे तक तीन अन्य महत्त्व-पूर्ण ठिकानों पर कब्जा करने में सफल हो गये। शत्रु ने बड़ी संख्या में तोपखाने की गोलाबारी द्वारा तीन जवाबी हमले किए। लेकिन इन सभी को शत्रु की भारी संख्या हताहत करते हुए विफल कर दिया गया। एक मौके पर तो लेफ्टिनेंट कर्नल नन्दगोपाल ने स्वयं एक अग्रिम कम्पनी का नेतृत्व किया और उन्हें शत्रु से हताश हाथापाई करनी पड़ी । इसमें उनके चेहरे और सिर पर फलके से दो गहरे घाव लगे।

भारी हताहतों और थकान के बावजूद बटालियन ने अपने आप को अगले धावे के लिए संगठित किया । पाकिस्तानी आक्रान्ताओं को 5 अक्तूबर 1965 को सुबह साढ़े छः बजे इस ठिकाने से बिल्कुल खदेड़ दिया गया ।

इन कार्रवाइयों में लेफ्टिनेंट कर्नल पागदाला कुप्पूस्वामी नन्दगोपाल ने प्रशंसनीय साहस, नेतृत्व और दृढ़ संकल्प का प्रदर्शन किया । उनकी वीरता उनके जवानों के लिए प्रेरणा का स्रोत थी और उन्होंने आदर्शनीय ढंग से उसका अनुसरण किया ।

8. कैप्टेन गौतम मोबायी (आई सी—15689), 2री बटालियन, डोगरा रेजिमेंट ।

(मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—2 नवम्बर, 1965)

2-3 नवम्बर, 1965 की रात को डोगरा रेजिमेंट की एक कम्पनी को, जिसकी एक प्लाटून का नेतृत्व कैप्टेन गौतम मोबायी कर रहे थे, मेंढर क्षेत्र के (जम्मू एवं काश्मीर) एक ठिकाने को अधिकार में लेने की आज्ञा मिली । इसे पाकिस्तानी सेना ने युद्ध विराम की अवहेलना करके अधिकार में ले लिया था और वह शत्रु की अभेद्य रक्षा व्यवस्था का एक अंग बन चुका था। उनका लक्ष्य बंकरों की एक शृंखला थी जिसके आस-पास शक्ति-शाली बचाव के लिए सुरंगों और तारों की रुकावटें थीं । इसका स्वचालित तथा मार्टर और तोपखाने की सहायक रक्षा गोलाबारी के सुदृढ़ समन्वय से पूरा बचाव था। जब शत्रु की निरन्तर गोलाबारी और सुरंगों से हुए भारी हताहतों के फलस्वरूप उसकी कम्पनी का हमला रुक गया तो कैप्टेन गौतम मोबायी ने अड़चनों को दूर करते हुए पुल के दूसरी ओर जहां शत्रु का जोर था वहां मोर्चाबन्दी के लिए अपनी प्लाटून की सेवाएं अर्पित की । वे रेंग कर आगे बढ़े, उन्होंने स्वयं तार काटा और सुरंगों पर होकर अपनी प्लाटून को आगे बढ़ा ले गए। एक सुरंग से उनका पैर अत्यधिक घायल हो गया । अपने घाव की परवाह न करते हुए वे अपने जवानों को उत्साहित करते हुए आगे बढ़ते रहे। इस साहसिक कार्रवाई द्वारा अपने कुछ मुट्ठी भर बचे जवानों के साथ उन्होंने अपने लक्ष्य के एक भाग पर कब्जा करके दूसरी ओर एक मोर्चाबन्दी कर ली। शत्रु की एक हल्की मशीन गन एक सैन्यपंक्ति नाशक-स्थिति में गोलाबारी कर रही थी, जिसके कारण उनके और अधिक जवान हताहत हुए। उन्होंने इस बंकर को ठंडा करने के लिए आगे बढ़ कर एक हथगोला फेंका। शत्रु के हथगोलों और भारी गोलाबारी के बावजूद उन्होंने अपनी क्षीण मोर्चाबन्दी को कायम रखा। उन्होंने वहां से हटने या यहां तक कि आड़ लेने से भी इन्कार कर दिया। वह एक चौकी से दूसरी चौकी पर जा-जा कर अपने जवानों को जमे रहने के लिए प्रोत्साहित करते रहे। इससे उस कम्पनी को अपने लक्ष्य की ओर बढ़ने की प्रेरणा मिली । वह तब तक अपने जवानों से आगे बढ़ने के लिए अनुरोध करते रहे जब तक कि एक ब्राउनिंग मशीन गन के गोले के टुकड़े से वह प्राण-घातक रूप से घायल नहीं हो गये । कैप्टेन गौतम मोबायी ने अदम्य साहस और प्रेरणादायी नेतृत्व का प्रदर्शन किया और भारतीय सेना की परम्परा के अनुकूल महान बलिदान दिया ।

9. 9025630 नायक दर्शन सिंह, 5 वीं बटालियन, सिख 3 लाइट इन्फेंट्री ।

(मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—2 नवम्बर, 1965)

2-3 नवम्बर, 1965 की रात्रि को नायक दर्शन सिंह सिख लाइट इन्फेंट्री की कम्पनी के एक अग्रवर्ती सेक्शन की कमान कर रहे थे। उन्हें एक बंकर को सफाया करने का आदेश दिया गया था, जहां युद्ध विराम की अवहेलना कर पाकिस्तानी सेना ने एक ब्राउनिंग मशीन गन लगा रखी थी। उनके पहुंचने का रास्ता बहुत कठिन और ढलवां-प्रदेश वाला था, जिसमें काफी सुरंगें और तार लगाए हुए थे और वह छोटे हथियारों की गोलाबारी के प्रभाव में आता था। उनके एक जवान ने जब उन्हें सुरंग-क्षेत्र के बारे में बतलाया तो उन्होंने अपने जवानों का शत्रु पर आक्रमण करने में नेतृत्व किया। एक सुरंग से उनकी बाईं टांग उड़ गई। उन्होंने वहां से हटने से इन्कार कर दिया किन्तु रेंगते हुए आगे बढ़ते रहे और अपने जवानों को धावा जारी रखने के लिए प्रोत्साहित करते रहे ताकि उनकी शेष प्लाटून और कम्पनी उनके साथ आक्रमण कर सके। तार की बाड़ तक आ जाने पर वे रेंगते हुए आगे बढ़े और तार काट दिये। इस काम के दौरान एक दूसरी सुरंग का विस्फोट हुआ जिससे वे सख्त घायल हो गए। अपने घावों की परवाह न करते हुए उन्होंने स्वयं को शत्रु के एक बंकर में ढकेल दिया और उसके अन्दर एक हथगोला फेंका । उनकी इस कार्रवाई से प्रोत्साहित होकर उनके सेक्शन के शेष बचे हुए जवानों ने शत्रु के दूसरे बंकर पर धावा बोल दिया और शत्रु की ब्राउनिंग मशीनगन को शान्त कर दिया। इस समय तक उनका पूरा सेक्शन हताहत हो चुका था लेकिन उन जवानों ने कम्पनी की कार्रवाई में सफलता पाने का द्वार खोल दिया । नायक दर्शन सिंह ने, अपनी अनुगामी सेना को उस रास्ते से आगे बढ़ने के लिए चिल्ला कर कहा जहां कि सुरंगों को उनके सेक्शन ने साफ कर दिया था और फिर वह वीरगति को प्राप्त हुए। उन्होंने अपनी कम्पनी की सफलता के लिए अपने जीवन का सर्वोच्च बलिदान किया और भारतीय सेना की उच्चतम परम्परा के अनुसार उच्च कोटि के साहस और कर्तव्य निष्ठा का परिचय दिया ।

सं० 10-प्रज/66—राष्ट्रपति निम्नांकित व्यक्ति को, पाकिस्तान के विरुद्ध हाल में हुई संक्रिया में, प्रदर्शित वीरता के लिए "महावीर चक्र" का बार प्रदान करने का अनुमोदन करते हैं :—

स्क्वाड्रन लीडर जग मोहन नाथ (3946), एम० वी०सी०, जनरल ड्यूटीज (पायलट) ।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—1 सितम्बर, 1965)

पाकिस्तान के विरुद्ध हाल की कार्यवाहियों में, कैनबरा यूनिट के कमांडिंग अफसर, स्क्वाड्रन लीडर जग मोहन नाथ शत्रु के इलाके पर कई मिशनों पर गये और शत्रु के बारे में महत्त्वपूर्ण जानकारी प्राप्त की । सारे मिशन युद्ध संबंधी देखभाल करने के लिए थे । इसलिये शत्रु के इलाके पर बड़ी दूर तक और उसके सुरक्षित हवाई अड्डों और इन्स्टालेशनों पर अपनी रक्षा करने वाली टुकड़ी के बिना

और दिन में उड़ानें भरनी थीं। यद्यपि स्क्वाड्रन लीडर नाथ भली प्रकार जानते थे कि हरेक मिशन पर जान में खतरे ही खतरे थे फिर भी उस समय तक उन्होंने अपने स्क्वाड्रन पायलटों को तैनात न कर सभी खतरे स्वयं अपने ऊपर लिये जब तक कि उन्हें उनमें से कुछ एक मिशनों पर अपने साथियों को भेजने के लिये न कहा गया।

अपने मिशनों से जो जानकारी उन्होंने प्राप्त की वह इतनी महत्वपूर्ण थी कि उसके बिना शत्रु के हवाई अड्डों और इनस्टालेशनों पर हमारे हमले इतने सफल अथवा विनाशकारी न होते। वास्तव में उनके मिशनों ने वायुयानों को ठीक निशानों पर आक्रमण करने के योग्य बनाया जिनको नष्ट करना पाकिस्तान के युद्ध प्रयत्नों में अवश्य रूप में बाधा डालना था।

स्क्वाड्रन लीडर जग मोहन नाथ ने उच्चतम साहस, दृढ़ निश्चय और कर्तव्य निष्ठा का परिचय दिया।

सं० 11-प्रेज/66—राष्ट्रपति निम्नांकित व्यक्तियों को उत्कृष्ट वीरता के लिए "अशोक चक्र, द्वितीय श्रेणी" प्रदान करने का अनुमोदन करते हैं :—

1 श्री जियालाल गुप्ता,
सहायक इलेक्ट्रिकल इंजीनियर,
पुंछ।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—30 अक्तूबर, 1965)

पुंछ बिजली घर को पानी पहुंचाने वाली पुंछ हायडल नहर, जो पाकिस्तानी अधिकृत काश्मीर से बह कर आती है, 25 अक्तूबर, 1963 को पाकिस्तानियों ने तोड़ दी जिससे पुंछ सीमा पर स्थित शहर में बिजली बन्द हो गई। 30 अक्तूबर 1963 को पुंछ के असिस्टेण्ट इलेक्ट्रिकल इंजीनियर, श्री जिया लाल गुप्ता की निगरानी में युद्ध-विराम रेखा के इस पार दूसरी नहर बनाने के काम में बहुत संख्या में असैनिक श्रमिक लगाए गए परन्तु पाकिस्तानी सेना की निरन्तर गोलीबारी के फलस्वरूप उस काम को छोड़ना पड़ा। पाकिस्तानी सेना की भारी गोलीबारी से अपनी सुरक्षा की तनिक परवाह किये बिना श्री गुप्ता पुंछ हायडल चेनल के इंचार्ज, श्री खेमराज तथा दलान गांव के सरपंच गुलाम दीन के साथ अपने आदमियों को फिर वहां लेकर गये और दूसरी नहर बना दी। जब तक सारा काम खत्म नहीं हो गया और सारे मजदूर सुरक्षित वापिस नहीं चले गए तब तक श्री गुप्ता उस स्थान से नहीं लौटे। श्री जिया लाल गुप्ता के उत्कृष्ट साहस तथा कर्त्तव्यनिष्ठा के फलस्वरूप ही काम समाप्त हुआ और थोड़े समय में ही उस शहर में पुनः बिजली की व्यवस्था की जा सकी।

2 श्री तिलक राज खन्ना,
लोको फोरमैन, उत्तरी रेलवे,
फिरोजपुर।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—8 सितम्बर, 1965)

पाकिस्तानी वायुयानों ने 8 सितम्बर 1965 को फिरोजपुर छावनी के लोकोमोटिव शैड पर भारी बमवर्षा की। फलस्वरूप लोकोमोटिव तथा तेल के गोदाम में आग लग गई और पटरी तथा अन्य संस्थापनों को भारी क्षति पहुंची। लोको फोरमैन श्री तिलक राज खन्ना घायल हो गये परन्तु अपने घावों की परवाह न करते हुए, उन्होंने आग बुझाने और ज्वलनशील पैट्रोल और तेल को हटाने का प्रबन्ध किया हालांकि शत्रु के वायुयान उस क्षेत्र के चक्कर लगा रहे थे।

उनकी इस समयोचित कार्रवाई से आग सीमित रही और सम्पूर्ण लोकोमोटिव शैड नष्ट होने से बचाने में वह सफल हुए। अपने घावों की परवाह न करते हुए वह सारी रात और अगले दिन ड्यूटी पर डटे रहे और इस प्रकार उन्होंने अपने अधीनस्थ कर्मचारियों के लिए एक सुन्दर उदाहरण प्रस्तुत किया।

3 श्री प्रतापा, ड्राईवर,
उत्तरी रेलवे, बारमेर।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—9 सितम्बर, 1965)

9 सितम्बर 1965 को सैनिक सामान को ले जा रही एक विशेष मालगाड़ी के ड्राईवर की हैसियत से काम करते हुए श्री प्रतापा गदरा रोड के बाहिर के सिगनल के पास पाकिस्तानी गोलाबारी से घायल हो गये। अपनी चोट तथा व्यक्तिगत सुरक्षा की चिन्ता किये बिना शत्रु की गोलाबारी के बीच उन्होंने अपनी गाड़ी को अभीष्ट स्थान तक पहुंचा दिया।

श्री प्रतापा के साहस तथा कर्त्तव्यनिष्ठा से औरों में विश्वास उत्पन्न हुआ और वह महत्वपूर्ण सैन्य सामग्री पहुंचाने में सफल हुए।

सं० 12-प्रेज/66—राष्ट्रपति निम्नांकित व्यक्तियों को वीरता के लिए "अशोक चक्र, तृतीय श्रेणी" प्रदान करने का अनुमोदन करते हैं :—

1 श्री खेम राज,
इन्चार्ज, हायडल चेनल, पुंछ।

2 श्री गुलाम दीन,
सरपंच, दल्लन गांव।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—25 अक्तूबर, 1963)

पाकिस्तानियों ने 25 अक्तूबर, 1963 को पुंछ बिजली घर को पानी देने वाली हायडल नहर, को क्षति पहुंचाई जो पाक अधिकृत कश्मीर से आती है। फलस्वरूप पुंछ क्षेत्र के सीमावर्ती कस्बों में अंधेरा छा गया।

युद्ध-विराम रेखा की भारतीय सीमा में दूसरी नहर को बनाने के लिए असैनिक मजदूरों को 30 अक्तूबर, 1963 को श्री जियालाल गुप्त, सहायक-विद्युत इंजीनियर, पुंछ की देख-रेख में लगाया गया। परन्तु पाकिस्तानी सेना की लगातार गोलाबारी के कारण उन्हें पीछे हटना पड़ा। इस अवस्था में अपने जीवन पर गम्भीर खतरे की परवाह न कर श्री खेम राज, इंचार्ज हायडल नहर, पुंछ और दल्लन गांव के सरपंच श्री गुलाम दीन एक बार फिर मजदूरों को वहां ले गए और दूसरी नहर बनवा कर 2 नवम्बर, 1963 को पुनः बिजली चालू की।

इस काम में श्री खेम राज और श्री गुलाम दीन ने अपनी जान को जोखिम में डालकर साहस एवं कर्त्तव्यनिष्ठा का उदाहरण प्रस्तुत किया। गोली लगने पर भी श्री गुलाम दीन निर्भीक बने रहे।

3 सं० 1407578 नायब सूबेदार लहौरा सिंह,
इंजीनियरस।

(मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—2 जुलाई, 1964)

नायब सूबेदार लहौरा सिंह, जो कि एक फील्ड कम्पनी के साथ कार्य करने के लिये लगाये हुए थे, 2 जुलाई, 1964 को जोशी-मठ-माना सड़क पर बेनाकुली के निकट डोज़र चला रहे थे। उन्होंने डोजर इसलिये चलाना शुरू किया था क्योंकि ओपरेटर ठीक प्रकार से कार्य नहीं कर रहे थे। और वह निजी उदाहरण प्रस्तुत करना चाहते थे। जब वह सड़क के एक हिस्से पर डोजर चला रहे थे, अचानक ही बाईं ओर की सहारा देनेवाली दीवार गिर गई। मशीन ढलान की ओर फिसलने लगी। मशीन के निकट खड़े व्यक्तियों ने चिल्ला कर उन्हें मशीन को छोड़ देने और बाहर कूद जाने को कहा। नायब सूबेदार लहौरा सिंह कूद सकते थे परन्तु बड़े साहस के साथ वह फिसलती हुई मशीन को बचाने का प्रयत्न करते रहे। वह मशीन को संभाले रहे। आखिर वह उलट गई और अलकनन्दा नदी में जा गिरी और नायब सूबेदार लहौरा सिंह की मृत्यु हो गई। उन्होंने उदाहरणीय साहस और कर्तव्य-निष्ठा का परिचय दिया जो कि भारतीय सेना की सर्वोत्तम परम्पराओं के अनुरूप है।

4 **सैकेंड लेफ्टिनेंट जगदीश प्रसाद जोशी,** (इ-सी० 54547) **तोपखाना रैजिमेंट ।**

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—25 अप्रैल, 1965)

24-25 अप्रैल, 1965 की रात को एक गाड़ी के साथ एक गन जुड़ी थी और उस पर 25 पौंड वाला गोला बारूद लदा था और यह गाड़ी जब एक काफिले के साथ गंटोक-नाथुला सड़क पर जा रही थी, तो उसमें आग लग गई। आग बहुत तेजी से फैल गई। थोड़ी-सी देर में गाड़ी में आग की लपटें फैल गई और आग गोला-बारूद के संदूकों तक पहुंच गई। अन्य गाड़ियां जिनमें गनें जुड़ी थीं एवं गोला-बारूद भरा था इस जलती गाड़ी के पीछे थीं। थोड़ी दूरी पर दूसरे यूनिट के आवस तथा भण्डार बंकर और मोटर गाड़ियों का पार्क था ।

आग लगने की चेतावनी को सुनकर सैकंड लेफ्टिनेन्ट जगदीश प्रसाद जोशी अग्नि स्थल पर पहुंचे। अपने प्राणों पर गम्भीर खतरा लेकर वह जलती हुई गाड़ी के अन्दर घुस गए और जलते हुए सन्दूकों को उतारने लगे। उनके इस कार्य से दूसरे उपस्थित सैनिकों को भी ऐसा करने की प्रेरणा मिली। जब आग अत्यन्त तीव्र थी तब भी वह अकेले ही गोला-बारूद के संदूकों को उतारने में जुटे रहे। कम्बल को लपेटकर वह बार-बार धधकती आग में गये और इस प्रकार उन्होंने गोला-बारूद का बहुत बड़ा भाग बचा लिया। वह इस काम में तब भी लगे रहे जबकि गोला-बारूद का कुछ हिस्सा जलने लगा था। इस प्रकार उन्होंने न केवल अनेकों जानें ही नहीं बचाई बल्कि अमूल्य सरकारी सम्पत्ति को गहरी क्षति से बचाया ।

इस कार्य से सैकंड लेफ्टिनेन्ट जगदीश प्रसाद जोशी ने धैर्यपूर्ण साहस और उदाहरणीय कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया जो भारतीय सेना के उच्चतम परम्पराओं के अनुकूल है ।

5 श्री जयदेव शर्मा,
स्टेशन मास्टर, उत्तरी रेलवे,
सरना ।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—8 सितम्बर, 1965)

8 सितम्बर, 1965 को जब कि एक विशेष सैनिक गाड़ी से उतारा हुआ फौजी टैंक हटाया जा रहा था, तभी मार्ग धंस गया और टैंक में आग लग गयी ।

आग देखकर और क्षति की आशंका से श्री जयदेव शर्मा तत्काल ही घटनास्थल पर गए और निजी सुरक्षा की किंचित परवाह न करते हुए शेष गाड़ी को सुरक्षित स्थान की ओर हटा ले जाने की व्यवस्था की और इस प्रकार आग लगने तक क्षति न्यूनतम रह गई। यदि श्री शर्मा समय पर कार्रवाई न करते तो सम्भवतः गाड़ी की अत्यधिक क्षति होती ।

6 श्री चेतन राम,
स्थाई वे इन्स्पेक्टर, विशेष ड्यूटी,
जोधपुर डिवीजन, उत्तरी रेलवे, बाड़मेर ।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—11 सितम्बर, 1965)

11 सितम्बर, 1965 से श्री चेतन राम को गदरा रोड रेलवे स्टेशन पर लगाया गया। जब स्टेशन पर बम बरसाये जा रहे थे और गोलाबारी की जा रही थी तब वह अपने अधीन रेलवे लाइन पर घूमते रहे और रेलवे की लाइन की विशेष देखभाल का प्रबन्ध करते रहे और उन्होंने इस बात का पूरा ध्यान रखा कि सेक्शन में सैनिक स्पेशल गाड़ियों के आने जाने के लिये रेल की पटरी ठीक हालत में रहे। जब एक दुर्घटना के कारण मुख्य लाइन को हानि पहुंची तो उन्होंने शत्रु द्वारा की जाने वाली कार्यवाही के लगातार खतरे के बावजूद एक दूसरी लाइन बिछाने में अपूर्व साहस और कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया ।

श्री चेतन राम प्रतिदिन न केवल रेल लाइन की देखभाल के लिये अपितु रेगिस्तानी क्षेत्र में सैनिकों को पानी पहुंचाने के लिये भी अग्रिम मोर्चों तक पैट्रोल गाड़ियों के साथ जाते रहे ।

7 पी बी/एस डी/1148011/सार्जेंट प्रताप सिंह,
एन० सी० सी० ।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—13 सितम्बर, 1965)

13 सितम्बर, 1965 को चार पाकिस्तानी विमानों ने गुरदासपुर रेलवे स्टेशन पर एक माल गाड़ी पर बम गिराये जो कि डीजल तेल, गोला बारूद और आग लगने वाला सामान ले जा रही थी। इससे डीजल तेल से भरे गाड़ी के डिब्बे को आग लग गई। जलते हुए तेल से बड़े-बड़े शोले उठ रहे थे और रेल की पटरी के इर्द-गिर्द के इलाके में घना धुआं फैल गया जिससे इलाके में डर और घबराहट फैल गई ।

लगभग अन्य 59 एन० सी० सी० कैडटों को एकत्रित कर सार्जेंट प्रताप सिंह आग के स्थान पर पहुंचे। अपनी निजी रक्षा की चिन्ता न करते हुए सार्जेंट प्रताप सिंह के उत्साहवर्धक नेतृत्व में कैडट जलते हुए गाड़ी के डिब्बे से उन डिब्बों को अलग करने के काम में जुट गये जिन्हें आग न लगी थी और उन्हें अलग करने में धकेल कर सुरक्षित जगह पर ले जाने में सफल हो गये। इस कार्यवाही में सार्जेंट प्रताप सिंह ने नेतृत्व, साहस और परम-शक्ति का प्रदर्शन कर अन्य कैडटों के लिये उत्साहवर्धक उदाहरण प्रस्तुत किया ।

सं० 13-प्रेज/66—राष्ट्रपति निम्नांकित व्यक्तियों को उनकी असाधारण कर्त्तव्य-परायणता अथवा साहस के उपलक्ष्य में उनको "सेना मेडल" प्रदान करने का अनुमोदन करते हैं :—

1 मेजर जगत मोहन वोहरा (आई० सी०–4767),
दक्कन हार्स (9 हार्स) ।

12 सितम्बर, 1965 को मेजर जगत मोहन वोहरा खेमकरन डिस्ट्रीब्यूटरी पर हमले के समय दक्कन हार्स के स्क्वाड्रन कमाण्डर थे। पाकिस्तानी सेना उनकी स्क्वाड्रन पर बड़े जोर की गोलाबारी करने लगी और उनकी आधी सेना मारी गई। इस भारी हानि के बावजूद उन्होंने एक बार फिर आक्रमण किया और शत्रु की चौकियों पर तोपों से गोले बरसाये। इस कार्यवाही में शत्रु की गोली से वह घायल हो गये परन्तु वह तब तक लड़ते ही रहे जब तक उन्हें पीछे हटने का आदेश न मिला ।

इस कार्यवाही में मेजर जगत मोहन वोहरा ने सराहनीय साहस और कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया ।

2 मेजर राजपाल सिंह (आई० सी०–12369),
1ली बटालियन, गार्ड्स ।

जम्मू एवं काश्मीर के कारगिल क्षेत्र में मेजर राजपाल सिंह गार्ड्स ब्रिगेड की एक बटालियन में कम्पनी कमाण्डर थे। 5 जून, 1965 को आक्रमण के दूसरे दौर में उन्हें दो पहाड़ी ठिकानों पर, जिन पर शत्रु की एक शक्तिशाली टुकड़ी का अधिकार था, कब्जा करने का कार्य सौंपा गया। आक्रमण का पहला दौर समाप्त होने तक उजाला हो चुका था। और आक्रमण का दूसरा दौर पूरा करना अधिक खतरनाक हो गया था। स्थिति को भली प्रकार जानते हुए भी मेजर राजपाल सिंह ने अपनी कम्पनी को शत्रु को निकाल बाहर करने और अपना कार्य पूरा करने का आदेश दिया। शत्रु की चौकी, विशेषकर हल्की मशीन गन चौकी से लगातार और ठीक-ठीक निशाने की गोलाबारी से तलहटी की पास आक्रमण रुक गया। अपने प्राणों की परवाह किये बिना मेजर राजपाल सिंह ने हल्की मशीन गन चौकी को स्वयं नष्ट करने का निश्चय किया। उन्होंने अपनी कम्पनी को आवश्यक गोलाबारी करने का आदेश दिया और शत्रु की गोलाबारी के बावजूद उन्होंने लक्ष्य की ओर रेंगना आरम्भ कर दिया। उन्होंने एक हथ गोला शत्रु की चौकी पर फेंका और मशीन गन शान्त होने तक ऐसा करते रहे ।

मेजर राजपाल सिंह की सुदृढ़ शत्रु के सम्मुख इस कार्यवाई ने उनके जवानों को लक्ष्य प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया ।

3. सैकंड लेफ्टिनेंट सुरेन्द्र कुमार नन्दा (ई० सी०-56435), 1ली बटालियन, गार्ड्स ब्रिगेड ।

सैकंड लेफ्टिनेन्ट सुरेन्द्र कुमार नन्दा जम्मू एवं कश्मीर के कारगिल क्षेत्र में गार्ड्स के ब्रिगेड की एक बटालियन में प्लाटून कमाण्डर थे । 5 अगस्त, 1965 को उन्हें एक पहाड़ी स्थान पर कब्जा करने को कहा गया जहां शत्रु की एक मजबूत सैक्शन चौकी थी । इस ओर अन्य दो चौकियों से हो रही भारी गोलाबारी के कारण उनकी प्लाटून को ध्येय से लगभग 100 गज की दूरी पर रुकना पड़ा । अपनी जान की परवाह न करते हुए सैकंड लेफ्टिनेन्ट नन्दा शत्रु की चौकी की ओर आगे बढ़े और हमला कर दिया । इस साहस पूर्ण कार्य से प्रेरित होकर प्लाटून उनके पीछे चली । इस कार्यवाही में सैकंड लेफ्टिनेन्ट नन्दा की रान में भारी घाव आया । अपने इस घाव की ओर ध्यान न देते हुए, वह रेंगते हुए 50 गज और आगे बढ़े और शत्रु पर गोली चलाते रहे जब तक कि उनकी प्लाटून ने पहाड़ी पर अधिकार न कर लिया ।

सैकंड लेफ्टिनेन्ट सुरेन्द्र कुमार नन्दा ने इस कार्यवाही में भारतीय सेना की सर्वोत्तम परम्पराओं के अनुकूल साहस, नेतृत्व और कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया ।

4. सैकंड लेफ्टिनेन्ट राजेन्द्र सिंह (ई० सी०-59373), 1ली बटालियन, गार्ड्स ब्रिगेड ।

सैकंड लेफ्टिनेन्ट राजेन्द्र सिंह 4-5 जून, 1965 की रात को गार्ड्स ब्रिगेड की एक बटालियन का नेतृत्व कर रहे थे । इस बटालियन को जम्मू एवं कश्मीर के कारगिल क्षेत्र में पाकिस्तानी ठिकानों पर आक्रमण करने का आदेश दिया गया । सैकंड लेफ्टिनेन्ट राजेन्द्र सिंह की कम्पनी को प्रथम चरण में काला पहाड़ पर कब्जा करना था । यह स्थान 12000 फुट की ऊंचाई पर है और इस पर पहुंचना अत्यन्त कठिन है । जब कम्पनी अपने लक्ष्य से लगभग 100 गज की दूरी पर थी तो शत्रु की लगातार हल्की और मझौली मशीन गन की गोलाबारी से आगे बढ़ना रुक गया । सैकंड लेफ्टिनेन्ट राजेन्द्र सिंह ने सूझ-बूझ से काम लिया । वे रेंगते हुए शत्रु के बंकर तक पहुंचे और एक हथगोला फेंका । ऐसा करते हुए उनके मुंह के दाहिनी ओर शत्रु की हल्की मशीन गन का गोला लगा । सख्त घायल होने के बावजूद उन्होंने बाएं हाथ में एक और हथगोला लिया और शत्रु पर टूट पड़े उनके शरीर से खून की धारा निकल रही थी और वह बेहोश हो गए । परन्तु उनके साहस ने शत्रु की हल्की मशीन गन को ठंडा कर दिया जिससे बाद में उनकी कम्पनी अपना लक्ष्य प्राप्त करने में समर्थ हो गई ।

5. 2438488 हवलदार जरनैल सिंह, 16वीं बटालियन, पंजाब रेजिमेंट ।

10 सितम्बर, 1965 को हवलदार जरनैल सिंह, कार्यकारी प्लाटून कमांडर, को लाहौर क्षेत्र में बरकी के पास इच्छोगिल नहर के इस तरफ के किनारे को जो नहर के पुल से तीन सौ गज उत्तर में था, कब्जा करने का आदेश मिला । ज्यों ही उनकी प्लाटून बरकी गांव से बाहर निकली त्यों ही उसे गोलियों की बौछारों और शत्रु की तोपों के तीव्र प्रतिरोध का सामना करना पड़ा । नहर के किनारे के साथ दिखाई पड़ने वाले शत्रु के बंकरों से गोलाबारी होने के बावजूद, उन्होंने अपनी प्लाटून को इकट्ठा किया और 600 गज की एक खुली जगह से आक्रमण का नेतृत्व किया । जैसे ही उन्होंने लक्ष्य स्थान पर कब्जा किया वैसे ही उन्होंने देखा कि उनकी प्लाटून का एक सेक्शन मैदान के बीच में पहुंच चुका था । उत्कृष्ट साहस के साथ वह शत्रु की तोपों से उगलती आग के बीच में से वापस गए और स्वयं उस सेक्शन को अपने ठिकाने पर ले आए । उनकी वापसी पर उनके ठिकाने पर शत्रु ने दूर किनारे से तोपखाने से मार्टर और टैंकों द्वारा बमबारी की, परन्तु वे निरन्तर अपने लक्ष्य पर डटे रहे । बाद में जबकि शत्रु के सिपाही जवाबी हमला करने के लिए लड़ाकू नावों से नहर पार करने का प्रयत्न कर रहे थे उन्होंने स्वयं अपने विवेक से उनसे सफलता पूर्वक युद्ध किया और उनकी योजना को मिट्टी में मिला दिया ।

उनकी वीरता और नेतृत्व के बिना कम्पनी कभी भी उस लक्ष्य को प्राप्त कर उस पर कब्जा न कर सकती थी ।

6. 2751734 लांस नायक केशवराव सालुंके, 22वीं बटालियन, मराठा लाइट इन्फेंट्री । **(मरणोपरान्त)**

लांस नायक केशवराव सालुंके एक गश्ती दल के सदस्य थे जिसे 5 अगस्त, 1965 को उन पाकिस्तानी घुसपैठियों को ढूंढ निकालने और नष्ट करने के लिए भेजा गया था जिनके जम्मू एवं कश्मीर के धबरोट नामक गांव में एकत्रित होने की सूचना मिली थी वह गश्ती दल के स्काउट ग्रुप का नेतृत्व कर रहे थे और उन पर शत्रुओं ने, जो 100 के लगभग थे, निकट फासले से मझौली मशीन गनों, राइफलों और हथगोलों से गोलाबारी की । ये स्काउट पहाड़ी पर काफी ऊंचे पर थे और गश्त के अन्य सदस्य थोड़े फासले पर उनके पीछे-पीछे आ रहे थे । लांस नायक केशवराव सालुंके ने यह अनुभव किया कि गश्ती दल को बचाने का एक मात्र रास्ता यही है कि शत्रु पर फौरन धावा बोल दिया जाए भारी गोलाबारी और शत्रु की संख्या की परवाह न करते हुए उन्होंने और उनके स्काउटों ने शत्रु के ठिकानों पर हमला बोल दिया जिसका परिणाम यह हुआ कि शत्रु की सेना तितर-बितर हो गई और भाग खड़ी हुई । गश्त के अन्य जवान भी इस हमले में स्काउटों से आ मिले और 2 हल्की मशीन गनें, 1 राइफल और बहुत सा गोला बारूद एवं उपस्कर कब्जे में ले लिया गया । लांस नायक केशवराव सालुंके ने इस कार्रवाई में वीरगति पाई तथापि उन्होंने महान साहस तथा कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया ।

7. 2450674 लांस नायक अनन्त राम, 19वीं, बटालियन, पंजाब रेजिमेंट ।

लांस नायक अनन्त राम जम्मू एवं कश्मीर में उड़ी क्षेत्र में टोह लेने वाली पार्टी के हमला करने वाले दस्ते के एक जवान थे । 10 अगस्त, 1965 को जब पार्टी ने एक पैट्रोल अड्डे पर अधिकार कर लिया तो इस पर पाकिस्तानी सेना की ओर से छोटे हथियारों और मझौली मशीन गन से भारी गोलाबारी की जाने लगी । शत्रु की एक हल्की मशीन गन ने हमला करने वाले दस्ते को आगे बढ़ने से रोक दिया । अपनी निजी रक्षा की परवाह न करते हुए लांस नायक अनन्त राम रेंगते हुए शत्रु की हल्की मशीन गन चौकी पर पहुंचे, हथगोला फेंका और हल्की मशीन गन छीन ली ।

इस कार्यवाही में लांस नायक अनन्त राम ने सेना की सर्वोत्तम परम्पराओं के अनुसार साहस और दृढ़ निश्चय का परिचय दिया ।

8. 5737111 लांस नायक पूर्ण बहादुर गुरुंग, 6वीं बटालियन, 8 गोरखा राइफल्ज़ ।

18 सितम्बर, 1965 को गोरखा रेजिमेंट के बटालियन की एक कम्पनी में लांस नायक पूर्ण बहादुर गुरुंग एक सेक्शन की कमान कर रहे थे । उन्हें लाहौर क्षेत्र में अपर बारी द्वाब नहर के पुल पर कब्जा करने का आदेश दिया गया । यहां एक मझौली मशीन गन सेक्शन की सहायता से शत्रु की मजबूत प्लाटून ने पक्की खाइयों का मोर्चा बना रखा था । प्रगति धीमी थी और बहुत कठिनाई से लांस नायक पूर्ण बहादुर गुरुंग का सेक्शन पुल के पार हो गया, परन्तु मझौली मशीन गनों की भारी एवं सही गोलाबारी के बीच फंस गया । इस ओहदेदार और उसकी एक मात्र हल्की मशीन गन दल को छोड़ सेक्शन में तीन हताहत हुए । लांस नायक पूर्ण बहादुर गुरुंग ने अपने सेक्शन की हल्की मशीन गन उठाई और पीछे से गोलाबारी करते हुए मझौली मशीन गन चौकी पर धावा बोल दिया और शत्रु के कार्मिक-दल के तीन आदमियों को मौत के घाट

उतार दिया। परन्तु ऐसा करते हुए वह स्वयं घायल होकर गिर पड़े। उनके इस शौर्यपूर्ण कार्य के फलस्वरूप नहर के पार एक मजबूत मोर्चा स्थापित हो गया और शत्रु की सेना को तितर-बितर कर दिया।

9. 2745683 लांस नायक विश्वनाथ भोसले, 17वीं बटालियन, मराठा लाइट इन्फैन्ट्री।

लांस नायक विश्वनाथ भोसले याक ला (सिक्किम) की चौकी पर तैनात राइफल टुकड़ी के सदस्य थे। 2 अक्तूबर, 1965 को एक चीनी दल ने जिसकी नफरी एक प्लाटून के बराबर थी बिना किसी चेतावनी के अग्रिम चौकी पर आक्रमण कर दिया। चौकी के कमाण्डर ने अग्रिम चौकी को आदेश दिया कि वह मुख्य चौकी से हो रही हल्की मशीन गन की गोलाबारी की आड़ में पीछे हट जाएं। वे मुख्य चौकी से लगभग 300 गज दूर एक झील के दक्षिणी सिरे पर पहुंच गए जब शत्रु की एक हल्की मशीन गन की गोली लांस नायक मलूकर को लगी और उनकी मृत्यु हो गई। तत्काल ही लांस नायक भोसले ने अपने प्राणों की परवाह न करते हुए, एक छोटे गोल पत्थर के पीछे मोर्चा सम्भाला और शत्रु दल पर गोली चलाना जारी रखा। उन्होंने वहां डटे रहने का निश्चय किया ताकि शत्रु उनके साथी के शव को न ले जा सकें। जब मुख्य चौकी से एक अन्य लांस नायक ने उन्हें बताया कि वह उनकी सहायता को आ रहा है तो लांस नायक भोसले ने उन्हें यह सोचकर इशारे से वापिस कर दिया कि कहीं उसे भी गोली न लग जाए। लांस नायक तब तक अपने मृत साथी के पास एक घंटे से अधिक डटे रहे जब तक कि एक सशक्त सहायता दल नहीं आ गया। उनकी बहादुरी, दृढ़ता और कर्त्तव्य-निष्ठा ने अपने शहीद साथी के शव को शत्रु के हाथों से बचा लिया।

10. 4153366 सिपाही शेर राम, कुमाऊं रेजिमेंट।

2 मई, 1965 को शाम के 5 बजे कुमाऊं रेजिमेंट की हमारी टोह लेने वाली एक टुकड़ी की पाकिस्तानी सैनिकों की एक प्लाटून से मुठभेड़ हुई जो जम्मू-कश्मीर में पीर की टेकरी में हमारे इलाके में घुस आई थी। आक्रमणकारियों को ठिकाने लगाने के लिए गये हमारे जवानों में से दो जवान मारे गये। तब पाकिस्तानी आक्रमण-कारियों ने छोटे दस्ते पर हमला किया परन्तु सिपाही शेर राम और एक अन्य सिपाही ने, जोकि ठीक उनके पीछे थे अपने स्थान पर डटे रहे और हथगोलों से शत्रु का हमला विफल कर दिया जिसके कारण शत्रु के सैनिक दस्ते भाग निकले। बाद में सिपाही शेर राम और उनका एक साथी दोनों जवानों की लाशें लाने के लिये आगे बढ़े। शत्रु द्वारा मझौली मशीन गन से की जा रही गोलाबारी के कारण उनका साथी घायल हो गया। इस भारी गोलाबारी के बावजूद सिपाही शेर राम एक लाश को निकाल लाये और फिर अपने साथी को बाहर निकाल लाये क्योंकि वह रीढ़ की हड्डी पर घाव आने के कारण चलने के लायक न था। इसके पश्चात वह तीसरी बार दूसरी लाश को निकाल लाने के लिये वापिस गये। जैसे ही उन्होंने लाश उठाई वैसे ही शत्रु ने राईफल ग्रेनेड से उनके दोनों पैरों को घायल कर दिया।

सिपाही शेर राम ने जो साहस और कर्त्तव्यनिष्ठा दिखाई वह सेना की उच्चतम परम्पराओं के अनुरूप थी।

सं० 14-प्रेज/66—राष्ट्रपति, निम्नांकित व्यक्तियों को उनकी असाधारण कर्त्तव्य परायणता अथवा साहस के उपलक्ष्य में उनको "वायु सेना मेडल" प्रदान करने का अनुमोदन करते हैं :—

1. स्क्वाड्रन लीडर अरविन्द दलया (4025), जनरल ड्यूटीज़ (पायलट)।

स्क्वाड्रन लीडर अरविन्द दलया दिसम्बर, 1963 से जम्मू एवं कश्मीर और लद्दाख क्षेत्र में कार्यशील हैलीकाप्टर यूनिट की कमान करते रहे हैं। केवल थोड़े से प्रशिक्षित हवाई कर्मी और तक-नीकियों के साथ उन्हें एक नई यूनिट बनाने का काम सौंपा गया। क्योंकि वहां केवल उनकी ही हैलीकोप्टर यूनिट थी, इसलिये उन्हें उस क्षेत्र में भारी कर्त्तव्यों को निभाना पड़ा। उन्होंने सौंपे गए सभी कर्त्तव्यों को सफलतापूर्वक पूरा किया और यूनिट के सामरिक स्तर को ऊंचा उठाया।

जून, 1964 में उन्हें नंदा देवी अभियान दल के हताहत सदस्यों को निकाल लाने के लिए कहा गया। वह स्वयं हैलीकोप्टर उड़ा ले गए और हताहतों को सफलतापूर्वक निकाल लाए।

जून, 1965 में जब उनकी यूनिट के एक हैलीकोप्टर को कराकुरम पर्वतों में लगभग 15,000 फुट की ऊंचाई पर जबरन उतरना पड़ा तो वह तकनीकियों के एक दल के नेता के रूप में घटना-स्थल पर पहुंचे और क्षतिग्रस्त हैलीकोप्टर के इंजन को बदलने के बाद उसे वापिस ले आए।

पाकिस्तान के विरुद्ध हाल के युद्ध में सियालकोट क्षेत्र में स्थल-युद्ध में हताहतों को वापिस लाने के लिए पास के क्षेत्र में शत्रु के वायुयानों की कार्रवाइयों के बावजूद उन्होंने अग्रिम क्षेत्रों में उड़ानें कीं।

स्क्वाड्रन लीडर अरविन्द दलया ने नेतृत्व और कर्त्तव्यनिष्ठा का एक सुन्दर उदाहरण प्रस्तुत किया।

2. स्क्वाड्रन लीडर कैलाश चन्द्र खन्ना (4722), जनरल ड्यूटीज़ (पायलट)।

10 सितम्बर, 1965 को स्क्वाड्रन लीडर कैलाश चन्द्र खन्ना हलवारा से उड़ने वाली चार नेट विमानों की फार्मेशन के नं० 4 थे जो शत्रु के इलाके में बमबारी करने के लिए जाने वाले दो केनबरा सेक्शनों की रक्षा के लिए उड़ी थी। सब काम योजनानुसार हुआ और प्रथम केनबरा सेक्शन कसूर क्षेत्र के ठिकानों तक ले जाया गया और वापिस सुरक्षित लाया गया। वह दूसरे सेक्शन से मिले और फिर चारों नेट अपने लक्ष्य की ओर उड़े।

जब दो केनबरा विमानों ने बम गिराए तब शत्रु के दो विमानों को पीछे देखा गया। तभी स्क्वाड्रन लीडर खन्ना ने देखा कि उनके विमान का तेल खत्म होने वाला है और चेतावनी देने वाली बत्ती से यह पता चला कि जिस ऊंचाई और जिस गति से वे उड़ान कर रहे हैं उनमें वे सिरफ 3 मिनट ही उड़ान कर सकते हैं। नजदीक वाली हवाई पट्टी वहां से 80 मील थी।

केनबरा की रक्षा तथा उनकी अपनी आपत्कालीन स्थिति की ओर फार्मेशन लीडर का ध्यान न बटे इस लिये स्क्वाड्रन लीडर खन्ना ने अपनी दशा कमाण्डर को न बताने का निर्णय किया। जब केनबरा विमान सुरक्षा-पूर्वक अपने इलाके में वापिस लाए गए तब स्क्वाड्रन लीडर खन्ना ने अपने संकट की सूचना दी।

तब उन्होंने विमान ऊपर ले जाने तथा शेष तेल बचाने के लिए इंजन बन्द करने का निर्णय किया। तब उन्होंने अपना विमान हलवारा की ओर घुमाया और हवाई अड्डे के ऊपर इंजन फिर खोला। तेल की कमी के कारण इंजन से आग निकलने लगी और उन्होंने अपना विमान सफलतापूर्वक उतार दिया।

स्क्वाड्रन लीडर कैलाश चन्द्र खन्ना ने ऐसे कर्त्तव्यपालन तथा अनुशासन का परिचय दिया जो वायु सेना की परम्परा के अनु-रूप थे।

3. स्क्वाड्रन लीडर भगत सिंह बख्शी (4597), जनरल ड्यूटीज़ (पायलट)।

स्क्वाड्रन लीडर भगत सिंह बख्शी ने तीन यूनिटों के एक हैली-कोप्टर टुकड़ी के प्रभारी अफसर का कार्य संभाला। इस टुकड़ी ने 567 उड़ानें भरीं और 18 अगस्त से 22 सितम्बर, 1965 तक छत्तीस दिनों की अवधि में 433 घण्टे उड़ान की।

इन वायुयानों ने तत्काल लाइनों के पीछे रसद गिराने, बम गिराने तथा गोलियों की बौछार करने की कार्रवाई की। वे आठ सौ बत्तीस हताहतों को निकाल कर लाए। उन्होंने बहुत से बम

गिराए तथा गोलियों के कई राउंड चलाए और बड़ी मात्रा में गोला-बारूद तथा सप्लाई पहुंचाई। यह जम्मू एवं कश्मीर में हमारी बढ़ती हुई सेनाओं द्वारा हस्तगत की गई नई पिकटों पर कब्जा बनाए रखने के लिए महत्वपूर्ण सहायता थी।

31 अगस्त, 1965 को जबकि स्क्वाड्रन लीडर बख्शी आक्रामक कार्रवाई पर थे उन्हें अपने वायुयान को, उसमें हुई कुछ तकनीकी त्रुटियों के कारण 10,000 फुट की ऊंचाई पर एक ऐसे स्थान पर उतरना पड़ा जो कि पाकिस्तानी घुसपैठियों से भरा पड़ा था। उनकी उड़ान दक्षता के कारण कर्मी दल को मामूली चोटें आयी पर वे बच गये। घायल कर्मियों की देखभाल करते हुए और जो चल नहीं सकते थे उनकी निकासी का इन्तजाम करते हुए वह 18 मील चले।

स्क्वाड्रन लीडर बख्शी ने घुसपैठियों के विरुद्ध तीन आक्रमक उड़ानें भरीं और अपने लक्ष्य पर बमबारी करते समय नीची उड़ानें लीं। उन्होंने सैन्य-संचालन से सम्बन्धित तीस उड़ानें भी भरी और तेरह उड़ानों में तुरन्त बनाए गए हैली-पड्डों से जो कि दुश्मन की गोलाबारी की पराम में थे हताहतों को निकाला। ये उड़ानें उस हवाई अड्डे से भरी गईं जिस पर बिना चेतावनी के शत्रु के लगातार हवाई हमलों का भय था। भयानक खतरों से अविचलित होते हुए इस अफसर ने कठिन कार्यों को सम्पन्न करने में दृढ़ निश्चय और उत्साह दिखाया। उनकी उच्च कोटि की व्यावसायिक दक्षता और योग्यता का प्रदर्शन वायुसेना की उच्चतम परम्पराओं के अनुकूल था।

4. स्क्वाड्रन लीडर पैट्रिक रस्सेल अर्ले (3965),
जनरल ड्यूटीज (पायलट)।

10 सितम्बर, 1965 को मिस्टियर वायुयानों की विरचना ने पश्चिमी सीमा पर सामरिक महत्व की उड़ानें कीं। जब वायुयान लक्षित क्षेत्र पर पहुंचे तो शत्रु के बहुत से टैंक दिखाई दिए और उन्हें विमान भेदी तोपों की भारी गोलाबारी का सामना करना पड़ा। शत्रु के भारी अवरोध और कई कठिनाइयों के बावजूद स्क्वाड्रन लीडर पैट्रिक रस्सल अर्ले ने शत्रु पर हमला करने के लिए विरचना का नेतृत्व किया। विरचना के दो वायुयानों ने आक्रमण का विचार छोड़ दिया क्योंकि परस्पर निकटता के कारण वे मुड़ नहीं सकते थे, उस समय स्क्वाड्रन लीडर अर्ले और नं० 2 ने कम ऊंचाई पर चक्कर लगाकर दूसरे आक्रमण के समय बचाव का प्रबन्ध किया। ऐसा करते हुए स्क्वाड्रन लीडर अर्ले के वायुयान पर विमान भेदी तोप का गोला लगा और उसके ढांचे के मध्य में लगभग 4 इंच के व्यास का छेद हो गया। वायुयान में आग लग गई और छेद लगभग 12 इंच का हो गया। इस के बावजूद भी स्क्वाड्रन लीडर अर्ले वायुयान से छतरी के सहारे नहीं कूदे बल्कि वायुयान को सुरक्षित ढंग से अड्डे पर वापस ले आए जबकि आग की चेतावनी की रोशनी बराबर जलती जा रही थी।

स्क्वाड्रन लीडर पैट्रिक रस्सेल अर्ले ने उच्च कोटि के साहस तथा व्यावसायिक दक्षता का परिचय दिया।

5. फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट विष्णु मित्र सोंधी (5705),
जनरल ड्यूटीज (पायलट)।

1 सितम्बर, 1965 को फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट विष्णु मित्र सोंधी वेम्पायर विमानों के उस सैकंड सेक्शन के सब-सेक्शन लीडर थे जिन्होंने छम्ब क्षेत्र में शत्रु की बख्तरबन्द गाड़ियों पर आक्रमण किया था। यह भली प्रकार जानते हुए कि पहले सेक्शन पर शत्रु की एफ-86 विरचना ने हमला कर दिया है, उन्होंने शत्रु की बख्तरबन्द गाड़ियों पर राकेट फायर करते हुए भी शत्रु के विमानों का पूरी तरह ध्यान रखा। शत्रु के बढ़िया विमानों से न डर कर उन्होंने शत्रु के टैंकों पर राकेट प्रहार किए। उन्होंने एफ- 86 विमानों की एक विरचना देखी जो उनके सेक्शन पर टूट रही थी। उन्होंने अपने कमाण्डर और नं० 2 को चेतावनी दी और अपने विमान को घुमा कर शत्रु का मुकाबिला करने लगे। हवाई लड़ाई में उन्होंने एफ–86 विमान पर फायर किया और उसको क्षति पहुंचाई। तब उनके दूसरे विमान के पायलट ने उन्हें एक और एफ–86 विमान की सूचना दी जो उनकी ओर आ रहा था और फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट सोंधी को वह लड़ाई छोड़नी पड़ी। साथ वाले विमान के चालक को गोल लगी ओर अपने सेक्शन में से अकेले वही वापिस अपने अड्डे पर आ सके। उनका साहस और उड़ान करने की योग्यता वायु सेना की परम्परा के अनुरूप थी।

6. फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट विनोद कुमार वर्मा (6528),
जनरल ड्यूटीज (पायलट)।

10 सितम्बर, 1965 को मिस्टियर वायुयानों की एक विरचना ने पश्चिमी सीमा पर सामरिक महत्व की उड़ान की। जब विरचना लक्षित क्षेत्र पर पहुंची तो वहां बड़ी संख्या में शत्रु के टैंक दिखाई पड़े और बहुत सी विमान-भेदी तोपों की गोलाबारी का सामना करना पड़ा। सकेन्द्रित रुकावटों और भारी कठिनाइयों के बावजूद हमले किए गए। एक हमले के दौरान नं० 1 वायुयान पर बुरी तरह से प्रहार हुआ और नं० 1 और नं० 2 अड्डे पर वापस लौट आए। नं० 3 और नं० 4 दूसरी बार हमले के लिए गए।

यद्यपि फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट वर्मा के वायुयान पर गोली लगी थी तो भी उन्होंने नं० 3 वायुयान के साथ हमला जारी रखा। फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट वर्मा के वायुयान की आपाती और सहायक सारी प्रणाली क्षति-ग्रस्त हो गई और दोनों प्रणालियों का दबाव शून्य तक आ गया। वे मुख्य प्रणाली के गिरते हुए दबाव में अपने वायुयान को अड्डे पर सुरक्षित ले आए और भूमि को छूने से पहले इस प्रणाली का दबाव भी शून्य तक पहुंच गया था। फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट विनोद कुमार वर्मा ने उच्चस्तर के साहस, दृढ़ निश्चय तथा व्यावसायिक दक्षता का परिचय दिया।

7. फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट सुभाष मदनमोहन हुण्डीवाला (6351,)
जनरल ड्यूटीज (पायलट)।

फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट सुभाष मदनमोहन हुण्डीवाला नवम्बर 1963 से लद्दाख में हेलिकोप्टर यूनिट में कार्य कर रहे हैं। तब से वह उस क्षेत्र में 430 घन्टे तक की सामरिक उड़ानें कर चुके हैं। लद्दाख के कठिन तथा पहाड़ी प्रदेश में उड़ान की दिक्कत होते हुए भी उन्होंने सदा स्वयं को कठिन सामरिक उड़ानों के लिये अग्रसर किया।

18 मई 1965 को फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट हुण्डीवाला ने कारगिल से लड़ाई में आहत लोगों को निकालने के लिए खराब मौसम होते हुए भी चार उड़ानें कीं।

28 मई, 1965 को काराकोरम की पहाड़ियों से एक सख्त घायल सैनिक को निकालने की उड़ान में उन्होंने इंजन से आग निकलती देखी, लेकिन बड़ी दक्षता से हेलिकोप्टर उड़ाते हुए उन्होंने 15,000 फुट की ऊंचाई पर स्थित हवाई पट्टी पर उसे सफलतापूर्वक उतारा।

लद्दाख क्षेत्र में अपनी ड्यूटी के अन्तर्गत उन्होंने बड़ी कठिन उड़ानें कीं और साहस, व्यवसायिक दक्षता तथा कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया जो भारतीय वायुसेना की परम्परा के अनुरूप है।

8. फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट रंजीत कुमार मल्होत्रा (6513),
जनरल ड्यूटीज (पायलट)।

फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट रंजीत कुमार मल्होत्रा जून 1964 से लद्दाख क्षेत्र में अलूटी 3 हैलीकोप्टर चला रहे हैं, उन्होंने इस अवधि में लद्दाख तथा जम्मू एवं कश्मीर के अन्य क्षेत्रों में लगभग 400 घंटों की उड़ानें की हैं। दुर्गम तथा पहाड़ी क्षेत्र होने पर भी, वह सदा कठिन सामरिक उड़ानों के लिए आगे बढ़े और उन्होंने अपने साथियों के लिए एक सुन्दर उदाहरण प्रस्तुत किया।

मई तथा जून 1965 में मौसम खराब होने पर भी उन्होंने कारगिल क्षेत्र में अपने युद्ध हताहतों को लाने के लिए बारह उड़ानें कीं। पुनः 14 अगस्त 1965 को उन्होंने श्रीनगर घाटी में

नौगांव से युद्ध में हताहतों को लाने के लिए दो बार उड़ानें कीं। इन उड़ानों के दौरान उन्हें एक बार ऐसे स्थान पर उतरना पड़ा जो पाकिस्तानी घुसपैठियों द्वारा घिरा हुआ था। उनके उतरने के बाद घुसपैठियों ने उन पर गोली चलाई। परन्तु अपने धैर्य पूर्ण साहस तथा सूझ-बूझ के कारण वह घिरे हुए क्षेत्र से घायलों को लाने में सफल रहे। उन्होंने जिस साहस एवं कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया वह वायुसेना की उत्कृष्ट परम्पराओं के अनुकूल है।

9. फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट ललित कुमार दत्ता (6506),
जनरल ड्यूटीज (पायलट)।

पाकिस्तान के विरुद्ध संघर्ष में हैलीकोप्टर यूनिट के वरिष्ठ पायलट फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट ललित कुमार दत्ता ने खतरनाक परिस्थिति में और आगे बढ़ती जा रही हमारी सेना के पीछे ही शत्रु की गोली प्रहार की पहुंच के अन्दर नई बनाई हुई खाई पट्टियों से 81 बार उड़ानें कीं और कुल 57 घन्टे की उड़ान की।

अपने आपको खतरे में डाल कर फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट दत्ता ने 18 बार आक्रमण सम्बन्धी उड़ान की जिसमें उन्होंने पाकिस्तानी घुसपैठियों पर बमबारी की तथा गोलियां चलाई। उन्होंने बीमार और जख्मी जवानों को निकालने के लिए 25 उड़ानें कीं और इस प्रकार उन्होंने कितने ही जवानों को बचाया। अग्रिम क्षेत्र में गोला-बारूद तथा जरूरी सामग्री पहुंचाने के लिये उन्होंने 30 बार उड़ानें कीं। उन्होंने ऐसे हवाई अड्डे से उड़ान की जो बिना चेतावनी के शत्रु के निरन्तर हवाई हमले के खतरे से खाली न था।

फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट ललित कुमार दत्ता ने उत्तरदायित्व की महान भावना, साहस तथा कर्त्तव्यनिष्ठा का प्रदर्शन किया जो वायु-सेना की उच्च परम्परा के अनुरूप है।

10. फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट चुहड़ सिंह कंवर (6532),
जनरल ड्यूटीज (पायलट)।

पाकिस्तान के विरुद्ध की गई कार्रवाई के दौरान हैलिकोप्टर यूनिट के वरिष्ठ पायलट, फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट चुहड़ सिंह कंवर ने घुसपैठियों के विरुद्ध पन्द्रह आक्रमक उड़ानें कीं, जो उनका सफाया करने वाले जवानों के लिए बहुत कारगर और सहायक सिद्ध हुई। उन्होंने छत्तीस दिन की अवधि में 45 सैन्यतंत्र संबंधी उड़ानें और 20 हताहत निकासी उड़ानें कीं उन्होंने शीघ्रता से बनाए गए हैली-पड़ों से जो वास्तविक नियंत्रण रेखा के ठीक पीछे थे, जिन पर चार बार परीक्षण अवतरण भी किए। अति अग्रिम मोर्चों से हताहतों की निकासी कर उस क्षेत्र में लड़ने वाले जवानों की अनेकों मूल्यवान जानें बचाईं। उनकी सप्लाई उड़ानें कठिन क्षेत्रों में लड़ने वाले जवानों के लिए जीवनदायी सिद्ध हुई उन्होंने ऐसे हवाई अड्डे से उड़ान कीं जो बिना चेतावनी के शत्रु के लगातार हवाई हमले के खतरे से खाली न था।

एक हैलीकोप्टर 13 सितम्बर 1965 को हवाई हमले के दौरान बुरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गया। यद्यपि इंजीनियरी स्टाफ ने उसकी कुछ मरम्मत की परन्तु मार्ग निर्देशन व क्रिया दोनों का सुधार न हो सका। फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट कंवर ने उस वायुयान की उड़ान परीक्षा के लिए स्वयं को प्रस्तुत किया और अन्त में उसे एक सुरक्षित हवाई अड्डे पर लाकर शत्रु की कार्रवाई से होने वाली क्षति से उसे बचाया।

फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट कंवर 22 सितम्बर 1965 को महत्वपूर्ण गोलाबारूद और आवश्यक सप्लाई लेकर शीघ्रता से बनाए गए हैलीपड़ पर उतरे तो शत्रु ने उस हैलीपड़ पर गोलाबारी शुरू कर दी। शत्रु की गोलाबारी से डरे बिना उन्होंने अपने वायु-यान से सामान उतारा और साहस तथा सूझ-बूझ से अपने वायुयान और उसके कर्मी दल को अड्डे पर सुरक्षित वापस लाए।

फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट चुहड़ सिंह कंवर ने उच्च कोटि की उड़ान-दक्षता और कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया जो भारतीय वायुसेना की उत्कृष्ट परम्परा के अनुकूल थी।

11. फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट परमानन्द गोस्वामी (सहायक–30082),
जनरल ड्यूटीज (पायलट)।

फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट परमानन्द गोस्वामी ने जो एक हैलीकोप्टर यूनिट के फ्लाइट कमाण्डर थे, पाकिस्तान के विरुद्ध संघर्ष में 36 दिनों की अवधि में 70 उड़ानें भरीं और उड़ान के 1 घंटे पूरे किए। उन्होंने अपने आगे बढ़ते हुए जवानों के ठीक पीछे शीघ्रता से बनाए गए हैलीपड़ों से, जो शत्रु की गोलाबारी के निशाने के अंतर्गत थ, हताहतों की निकासी के लिए बारह उड़ानें भरीं। यह पहाड़ी इलाका हैलीकोप्टर की कार्रवाइयों के लिए बड़ा कठिन और भयंकर था। इन कठिनाइयों और खतरों की परवाह न करते हुए उन्होंने अपने सहायता कार्यों को पूरा किया और अनेक महत्वपूर्ण प्राणों को बचाया। स्वयं पर खतरा ले कर उन्होंने 60 सैन्य-तंत्र उड़ानों द्वारा अग्रिम चौकियों पर गोला बारूद तथा राशन पहुंचाने का काम भी किया। उन्होंने एक ऐसे हवाई अड्डे से उड़ानें भरीं जिस पर बिना चेतावनी के शत्रु के लगातार हवाई हमले का भय था।

वह 22 सितम्बर 1965 को, इस पिकेट के निर्वाह के लिए, नव-निर्मित हैलीपड़ पर, गोलाबारूद व अन्य सामान लेकर उतरे। शत्रु ने चौकी पर गोलियां बरसानी शुरू कर दी। वह साहस और सूझ-बूझ दर्शाते हुए उड़ चले जबकि दूसरे वायुयानों से अभी सामान उतारा ही जा रहा था। अपनी सुरक्षा का ख्याल न करते हुए उन्होंने शत्रु के ठिकानों पर चक्कर लगाना प्रारम्भ कर दिया ताकि शत्रु की गोलाबारी और उसका ध्यान उनके वायुयान की ओर घूम जाए। ताकि दूसरे वायुयानों को अपना सामान उतारने के लिए समय मिल सके और वे नष्ट होने से बचाए जा सकें।

फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट परमानन्द गोस्वामी ने वायुसेना की उच्च-तम परम्पराओं के अनुकूल साहस, दृढ़ निश्चय और इकट्ठे काम करने की भावना का परिचय दिया।

12. फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट जान लिओ ड्वेल्ट्ज (5707),
जनरल ड्यूटीज (पायलट)।

पाकिस्तान के विरुद्ध की गई कार्रवाई के दौरान हैलीकोप्टर यूनिट के फ्लाइट कमाण्डर फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट जान लियो ड्वेल्ट्ज, ने 36 दिनों की अवधि में 20 सामरिक, 36 लाजिस्टिक, 12 हताहतों को निकालने की और 4 टोह उड़ानें कीं। अपने प्राणों की बिल्कुल परवाह किये बिना तुरन्त बनाए गए काम-चलाऊ हैलीपड़ों से खतरनाक क्षेत्रों पर उड़ानें कीं। अग्रिम चौकियों से हताहतों को निकाल कर बहुत सी महत्वपूर्ण जानें बचायीं उनकी सप्लाई डालने की उड़ानें, नई अधिकृत पिकटों को बनाये रखने के लिए सहायक सिद्ध हुई। वह हैलीपड़ से शत्रु की बमबारी परास के अन्दर और शत्रु के लगातार हवाई हमलों में उड़ानें करते रहे, जबकि उनके हवाई मैदान पर बिना चेतावनी के शत्रु के हवाई हमलों का लगातार खतरा बना हुआ था।

11 सितम्बर 1965 को फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट ड्वेल्ट्ज को घुसपैठियों के सुदृढ़ ठिकानों रमननाला पर आक्रमण करने के लिए तैनात किया गया। जब वे एक संकरी घाटी में शत्रु के बंकरों पर बम डाल रहे थे और गोलियां बरसा रहे थे, घुसपैठियों ने अपने छोटे हथियारों से अनेक वायुयान पर गोलाबारी शुरू की। शत्रु की गोलाबारी की तनिक भी परवाह किए बिना वह अपनी सामरिक उड़ानें दृढ़ता पूर्वक करते रहे।

15 सितम्बर, 1965 को हमारी सेना ने सूचित किया कि टिथवाल क्षेत्र में हमारी चौकियों पर शत्रु का बहुत भारी दबाव है और हमारी सेना चाहती थी कि वायुसेना किशन गंगा पुल की रस्सी की पुल को नष्ट कर दे। यह पुल एक संकरी घाटी पर बना था और इस क्षेत्र में पाकिस्तानी घुसपैठियों का अधिकार था। उन्होंने पुल पर तीन उड़ानें भरीं और लक्ष्य पर 48 बम गिराए। उन्होंने पुल के दोनों सिरों पर आग लगा दी और उसके

मध्य भाग को भी काफी क्षति पहुंचाई। इस प्रकार उन्होंने शत्रु की संचार व्यवस्था को समाप्त कर अपनी पिकट को शत्रु के दबाव से मुक्त किया।

13. फ्लाइंग अफसर दिलीप कमलाकर परुलकर (7227), जनरल ड्यूटीज (पायलट)।

पाकिस्तान के विरुद्ध संघर्ष के शुरू होते ही फ्लाइंग अफसर दिलीप कमलाकर परुलकर ने अपनी सेवाएं सामरिक ड्यूटी के लिए अर्पित कीं और उनको फाइटर स्क्वाड्रन के साथ तैनात किया गया। जब वे पहली बार बमबारी करने गए तब उन्हें शत्रु की भारी स्थल गोलाबारी का सामना करना पड़ा। अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की चिन्ता किए बिना उन्होंने अपने निशाने पर आक्रमण किया। इस कार्यवाही में उनके विमान को शत्रु की गोली लगी जो विमान को चीरती हुई उनके दाहिने कन्धे में जा लगी। उन्होंने अपने कमाण्डर को सूचना दी कि उनका दाहिना हाथ बेकार हो गया है और वह कार्यवाही स्थगित कर रहे हैं। कमाण्डर ने उनको सलाह दी कि यदि वह विमान उड़ाने में कठिनाई अनुभव करें तो विमान से कूद जाएं, परन्तु कीमती विमान के बचाव को ध्यान में रखते हुये, वह उसे बाएं हाथ से उड़ा कर वापिस अड्डे तक लाए और उसे सफलता-पूर्वक नीचे उतारा।

फ्लाइंग अफसर दिलीप कमलाकर परुलकर ने प्रशंसनीय साहस, दक्षता और कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

14. फ्लाइंग अफसर अमरजीत सिंह गिल (6147), जनरल ड्यूटीज (पायलट)।

फ्लाइंग अफसर अमरजीत सिंह गिल उन कुछ नेट पायलटों में से थे, जिन्हें छम्ब क्षेत्र में स्थल सेना को निकट सहायता देने वाले वायुयानों को हवाई आक्रमण से बचाने और हवाई श्रेष्ठता स्थापित करने के लिए भेजा गया था। अपने प्राणों की परवाह न करते हुए उन्होंने कई सामरिक महत्व की उड़ानें कीं और कई बार शत्रु से मुठभेड़ की। 3 सितम्बर 1965 को पाकिस्तान के सेबर और एफ=104 वायुयानों से उनकी झड़प हो गई जिन्होंने उस पर आकाश में, हवा में नियंत्रित मिसाइलों से आक्रमण किया। उन्होंने प्रशंसनीय दृढ़ता और साहस से उनकी चालों को विफल कर दिया। उन्होंने छम्ब, पसरूर तथा सियालकोट क्षेत्र में सामरिक महत्व की कुल 35 उड़ानें कीं। वह भारतीय वायुसेना की श्रेष्ठता स्थापित करने में सहायक बने। उन्होंने शत्रु का सामना करने में प्रशंसनीय साहस और तात्परता का परिचय दिया।

15. 208603 सार्जेन्ट संसार सिंह, फ्लाइट इंजीनियर।

पाकिस्तान के विरुद्ध की गई कार्रवाई के दौरान हैलीकोप्टर यूनिट में फ्लाइट इंजीनियर सार्जेन्ट संसार सिंह ने सामरिक महत्व की 93 उड़ानें भरीं और एक सौ चार घन्टे उड़े। वह काम करने के लिए हमेशा तैयार रहते और सदैव सामरिक उड़ानों के लिए स्वयं को प्रस्तुत करते। उन्होंने भारी खतरों के साथ जम्मू-कश्मीर में पाकिस्तानी घुसपैठियों के सुदृढ़ ठिकाने के विरुद्ध 16 आक्रमक उड़ानें कीं। उन्होंने 42 हताहत निकासी उड़ानें कीं और उड़ान के दौरान हताहतों की परिचर्या की तथा कीमती प्राणों को बचाया। कई अवसरों पर उन्हें अपने हैलीकोप्टर को आक्रमक कार्रवाई से तुरन्त हताहत निकासी कार्रवाई करने के लिए काम में लगाना पड़ा। उन्होंने यह कार्य प्रशंसनीय रीति और निजी सुरक्षा या आराम की परवाह न करते हुए किया। उनके हवाई मैदान को बिना चेतावनी के शत्रु के हवाई हमलों का निरन्तर खतरा बना रहता था और अग्रिम हैलीपैडर शत्रु की गोलाबारी की परास में थे।

सार्जेन्ट संसार सिंह ने सामरिक उड़ानों के लिए प्रशंसनीय उत्साह दिखाया और उन्हें सौंपे गए सभी कार्यों को उच्च कर्त्तव्य भावना और अडिग साहस से सम्पन्न किया।

सं० 15-प्रेज/66—राष्ट्रपति निम्नांकित व्यक्तियों को, पाकिस्तान के विरुद्ध हाल में हुई संक्रिया में प्रदर्शित वीरता के लिए "वीर चक्र" प्रदान करने का अनुमोदन करते हैं :—

1. 2942593 हवलदार गिरधारीलाल, 4थी बटालियन, राजपूत रेजिमेंट।

(मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—16 मई 1965)

16 मई 1965 को पाकिस्तानी सैनिक दस्तों ने कारगिल क्षेत्र (जम्मू एवं काश्मीर) में हमारी एक चौकी पर आक्रमण किया। यह हमला हमारे सैनिकों ने विफल कर दिया और उन्हें गहराई में स्थित शत्रु की एक महत्वपूर्ण चौकी पर अधिकार करने को कहा गया जहां से वे आगे बढ़ रहे सैनिक दस्तों पर 3-इंच मार्टर, हल्की मशीनगन और छोटे हथियारों से ठीक-ठीक गोलाबारी कर रहे थे। खतरे की परवाह न करते हुये, हवलदार गिरधारीलाल, जो कि अगले सेक्शन में था, अपने जवानों को आगे बढ़ने के लिये उत्साहित करते रहे। शत्रु की गोलाबारी के कारण जब एक हल्की मशीनगन चालक नीचे गिर गया तो उसने गन उठा ली और शत्रु के एक बंकर पर गोलाबारी की और उसके सभी जवानों को मार दिया परन्तु इस कार्यवाही में स्वयं वीरगति पाई।

इस कार्रवाई में हवलदार गिरधारीलाल ने भारतीय सेना की सर्वोत्तम परम्पराओं के अनुरूप उदाहरणीय शूरवीरता और कर्त्तव्यनिष्ठा का प्रदर्शन किया।

2. 2435469 नायक बचित्तर सिंह, 1ली बटालियन, गार्डस् ब्रिगेड।

(मरणोपरांत)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—5 जून 1965

नायक बचित्तर सिंह, जो गार्ड्स बटालियन की अग्रिम सेक्शन के कमाण्डर थे, 5 जून 1965 को जम्मू एवं काश्मीर में कारगिल सेक्टर में पाकिस्तान की एक चौकी पर कब्जा करने के लिए अपने सेक्शन का नेतृत्व कर रहे थे। जब उनकी प्लाटून लक्ष्य से 100 गज की दूरी पर थी तो शत्रु की हल्की और मझोली मशीनगनों की भारी गोलाबारी से उसे रुक जाना पड़ा। नायक बचित्तर सिंह ने बड़े साहस से शत्रु पर धावा बोला। वह शत्रु की गोलाबारी से घायल हो गये किन्तु निरुत्साहित हुए बिना व रेंगते हुए शत्रु की चौकी की ओर बढ़े, उनके अन्दर हथगोले फेंके और तब तक गोली चलाते रहे जब तक कि शत्रु पीछे नहीं हटा और उसने चौकी खाली नहीं की। पीछे हटते हुये शत्रु गोली चलाते जा रहे थे परन्तु नायक बचित्तर सिंह ने जवाब में गोलियां चलाईं और शत्रु के दो सिपाहियों को मार दिया। परन्तु उनके सिर में हल्की मशीनगन की गोली लगी और उनकी मृत्यु हो गई। इस वीरता के कार्य से उन्होंने शत्रु की चौकी पूरी तरह खाली करवा ली और शत्रु के और कोई विरोध के बिना यह चौकी अधिकार में कर ली गई।

नायक बचित्तर सिंह ने जिस साहस और पहल शक्ति का परिचय दिया वे भारतीय सेना की उच्च परम्पराओं के अनुकूल थी।

3. कैप्टेन अर्जन सिंह नरूला (आई सी-12180), 6वीं बटालियन, 5 गोरखा राइफल्स।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—12 अगस्त 1965)

12 अगस्त 1965 को कालीधर (जम्मू एवं कश्मीर) में जम्मू एवं काश्मीर राइफल्स की एक अन्य कम्पनी को सहायता देने के लिए कैप्टेन अर्जन सिंह नरूला ने अपनी बटालियन की एक कम्पनी का नेतृत्व किया जिसका उद्देश्य बालबिंदर के झूलते पुल से आने वाले घुसपैठियों को रोकना था जो इस युद्ध क्षेत्र में आने का एक मात्र रास्ता था। वह शाम को वहां आ पहुंचे और उसी रात धावा बोल कर शत्रु को दो ठिकानों से खदेड़ दिया।

14 अगस्त 1965 की सुबह जम्मू एवं कश्मीर राइफल्स के एक गश्ती दल को शत्रु ने घेर लिया। यह सुनते ही कैप्टेन नरूला ने शत्रु का मुकाबला करने के लिए एक प्लाटून भेजी और स्वयं दो प्लाटून लेकर उनके पीछे-पीछे गए। हालांकि कम्पनी के पास गोला-बारूद की कमी थी, विशेषकर 2-इंची मार्टर और हल्की मशीनगनों की, किन्तु कैप्टेन नरूला ने घुसपैठियों पर आक्रमण किया ताकि संचार व्यवस्था जारी रहे। इस आक्रमण में 20 घुसपैठिए मारे गए, बहुत से भाग गए। उसी शाम और अगली रात को कैप्टेन नरूला के मोर्चों पर भारी बमबारी की गई लेकिन इस आक्रमण को सफलता-पूर्वक विफल बना दिया गया।

16 अगस्त 1965 तक उनके जवान इतने थक चुके थे कि उनसे चलना मुश्किल था। यद्यपि वे स्वयं भी थक चुके थे तथापि उन्होंने स्वयंसेवकों की एक टोली एकत्रित की और जम्मू एवं कश्मीर राइफल्स की पिकटों पर पहुंचे। और अपने जवानों के लिए पानी प्राप्त किया। इस कार्रवाई ने उनके जवानों में उत्साह फूंका और 17, 18 और 19 अगस्त 1965 तक शत्रु द्वारा किये गये आक्रमणों को विफल करते रहे जब कि सारी बटालियन उनसे आ न मिली।

12 से 20 अगस्त 1965 तक की इस सम्पूर्ण सामरिक कार्रवाई में कैप्टेन अर्जन सिंह नरूला ने असाधारण नेतृत्व, साहस और सहनशीलता का प्रदर्शन किया।

4. स्क्वाड्रन लीडर एन्थनी लुइस माऊसिन्हो (4418), जनरल ड्यूटीज (पायलट)।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—1 सितम्बर 1965)

हाल ही में पाकिस्तान के विरुद्ध की गई कार्रवाई के दौरान स्क्वाड्रन लीडर एन्थनी लुइस माउसिन्हो एक सामरिक लड़ाकू टोह स्क्वाड्रन के फ्लाइट कमाण्डर थे। अन्य सामरिक महत्व की उड़ानों के अतिरिक्त उन्होंने शत्रु के स्थल ठिकानों के विरुद्ध सामरिक महत्व की 11 उड़ानों का नेतृत्व किया और शत्रु की गोलाबारी की भारी रुकावट के बावजूद साहस और दृढ़ता के साथ अपने हमलों को सफल बनाया। उन्होंने अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह न कर खतरनाक टोह उड़ानें कीं। ऐसी उड़ानों के दौरान उन्होंने सफलतापूर्वक टैंकों से लदी ऐसी रेलगाड़ी का पता लगाया जिस पर हमारे वायुयानों ने हमला किया जिसके फलस्वरूप 25 पैटन टैंक नष्ट हुए।

उनकी कमान में काम करने वाले व्यक्तियों ने उनके साहस और दृढ़ निश्चय से उत्कृष्ट कर्त्तव्यनिष्ठा की भावना की प्रेरणा प्राप्त की।

5. स्क्वाड्रन लीडर सुदेश कुमार दाहर (4425), जनरल ड्यूटीज (पायलट)।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—1 सितम्बर 1965)

स्क्वाड्रन लीडर सुदेश कुमार दाहर वेम्पायर विमानों की उस टुकड़ी के कमाण्डर थे जिसने 1 सितम्बर 1965 को छम्ब क्षेत्र की लड़ाई में भाग लिया जहां पाकिस्तानी सेना ने सीमा पार करके भारी बख्तरबन्द गाड़ियों से आक्रमण कर दिया था। स्क्वाड्रन लीडर दाहर पहला सेक्शन लेकर गए जिसने उस क्षेत्र में शत्रु के 6 पैटन टैंक, एक विमान भेदी तोप का ठिकाना, बहुसंख्यक गाड़ियां और शत्रु सैनिकों को नष्ट कर दिया। 4 वेम्पायर विमानों के उसके सेक्शन पर विमान भेदी तोपों तथा सेबर जेट विमानों ने आक्रमण किया। चतुराई में स्थिति पर काबू पाकर वे सफल कार्यवाही के बाद तीन विमानों को सुरक्षित वापिस ठिकानों पर ले आये।

व्यक्तिगत सुरक्षा की चिन्ता न करने से उनके दूसरे पायलटों को प्रेरणा मिली और उसकी स्क्वाड्रन ने शत्रु पर जोरदार प्रहार किये, शत्रु की सप्लाई व्यवस्था, पेट्रोल भण्डार, रेलवे वेगन, कानवाय तथा सैनिक जमाव को नष्ट किया।

स्क्वाड्रन लीडर सुदेश कुमार दाहर ने जिस साहस तथा दृढ़ निश्चय का परिचय दिया वह वायु सेना की उच्चतम परम्परा के अनुरूप थी।

6. स्क्वाड्रन लीडर सूबे सिंह मलिक (4663), जनरल ड्यूटीज (पायलट)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—1 सितम्बर 1965)

स्क्वाड्रन लीडर सूबे सिंह मलिक ने पाकिस्तान के विरुद्ध की गई कार्रवाई में एक हंटर स्क्वाड्रन के फ्लाइट कमाण्डर के रूप में भाग लिया। उन्होंने 15 सामरिक महत्व की उड़ानें कीं जिनमें से 11 उड़ानें अपनी सेना की अग्रिम पंक्ति को निकटतम सहायता के उद्देश्य से थीं।

उन्होंने आक्रामक हवाई हमलों में हंटर वायुयानों की विरचनाओं का 8 बार नेतृत्व किया और दुश्मन के टैंकों, गाड़ियों और सेना को काफी क्षति पहुंचायी। उन्होंने निश्चय और साहस के साथ अपने आक्रमणों को सफल बनाया और कुछ अवसरों पर अवरोधी वायुयानों द्वारा भारी गोलाबारी की जाती रही। एक बार तो उनके वायुयान के तल नियंत्रण को क्षति पहुंची लेकिन वे बड़ी दक्षता से अपने वायुयान को वापस लाए और अपने अड्डे पर सुरक्षित उतरे। एक दूसरे अवसर पर अपने साथी द्वारा समीप आ रहे शत्रु के एफ-104 वायुयान के बारे में चेतावनी मिलने पर भी उन्होंने ऐसे लक्ष्य पर आक्रमण किया जहां भारी सुरक्षा व्यवस्था थी। भयंकर खतरों के बावजूद उन्होंने बड़ी निर्भीकता से अपना कार्य सिद्ध किया और अपनी विरचना को सुरक्षित अड्डे पर वापस ले आए।

हरबंसपुरा रेलवे स्टेशन के पास एक अन्य उड़ान के दौरान दुश्मन की वायुयानभेदी तोपों की भयंकर गोलाबारी के बावजूद उनकी विरचना ने शत्रु की बख्तरबन्द गाड़ियों और तोप ठिकानों को भारी क्षति पहुंचाई।

स्क्वाड्रन लीडर मलिक की साहस एवं सफलताएं वायुसेना की उच्चतम परम्परा के अनुकूल थीं।

7. स्क्वाड्रन लीडर अजीत सिंह लाम्बा (4877), जनरल ड्यूटीज (पायलट)।

स्क्वाड्रन लीडर अजीत सिंह लाम्बा ने हंटर पायलट के रूप में कुल 15 सामरिक उड़ानें कीं, जिनमें 11 कसूर और लाहौर क्षेत्रों म स्थल सेना को निकट से सहायता देने के उद्देश्य से थीं। इन कई कार्रवाइयों में उन्होंने हंटर वायुयानों की विरचना का नेतृत्व किया। शत्रु की पृथ्वी से अत्यधिक गोलाबारी तथा शत्रु के अवरोधक वायुयानों के बावजूद उन्होंने शत्रु के ठिकानों का पता लगाने और उन पर सफलतापूर्वक आक्रमण करने में अत्यधिक चातुर्य और दृढ़ निश्चय का प्रदर्शन किया। दृढ़ मुकाबले के सम्मुख भी उन्होंने शत्रु के कई टैंकों और गाड़ियों को सफलता के साथ नष्ट कर दिया। हरबंसपुरा रेलवे स्टेशन के पास शत्रु की तोपों तथा बख्तरबन्द गाड़ियों को नष्ट करने में जो सफलता मिली वह विशेष रूप से उल्लेखनीय है क्योंकि इन ठिकानों के आस-पास भारी सुरक्षा का प्रबन्ध था।

इन आक्रमणों के दौरान स्क्वाड्रन लीडर लाम्बा ने कार्य करने के लिए विशेष उत्साह दिखाया और वह किसी प्रकार की उड़ान के लिए हमेशा तैयार और आगे रहते थे। उनके साहस और दृढ़ निश्चय से दूसरे पायलटों को प्रेरणा मिली जो वायुसेना की उच्चतम परम्पराओं के अनुकूल है।

8. फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट शरदचन्द्र नरेश देशपाण्डे (5452), जनरल ड्यूटीज (नेवीगेटर)।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—1 सितम्बर 1965)

भारत और पाकिस्तान के बीच जब संघर्ष शुरू हुआ तब फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट शरदचन्द्र नरेश देशपाण्डे जेट बाम्बर कन्वर्शन यूनिट में नेवीगेशन इन्स्ट्रक्टर का काम कर रहे थे। उन्होंने अपनी सेवाएं ऑपरेशनल ड्यूटी के लिए अर्पित कीं और शत्रु क्षेत्र के ऊपर 7 बार बमबारी करने गए।

फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट देशपाण्डे सबसे आगे जाने वाले विमान के नेवीगेटर/बम-एमर थे और शत्रु के साथ जबर्दस्त मुकाबिला होते हुए भी अपना काम सफलतापूर्वक किया और अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की बिल्कुल चिन्ता नहीं की। इस बमबारी के काम में उन्होंने उच्चकोटि की व्यावसायिक दक्षता, साहस तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया जो वायुसेना की उच्च परम्परा के अनुरूप है।

9 फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट चन्द्र शेखर डोराएस्वामी (5601), जनरल ड्यूटीज (पायलट)।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—1 सितम्बर, 1965)

पाकिस्तान के विरुद्ध की गई कार्रवाई के दौरान फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट चन्द्र शेखर डोराएस्वामी ने शत्रु की भूमि स्थितियों के विरुद्ध 14 आक्रामक उड़ानों में भाग लिया। आक्रामक उड़ानों के दौरान उन्हें स्थल से भारी गोलाबारी और शत्रु के हवाई विरोध का सामना होने के बावजूद उन्होंने अत्यन्त दृढ़ता का परिचय दिया। शत्रु की स्थल गोलाबारी से उनके वायुयान पर दो बार गोली लगी और वह काफी क्षतिग्रस्त हुआ। फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट ने अपने प्राणों की परवाह किए बिना प्रत्येक बार अपने आक्रमण में सफलता प्राप्त की और शत्रु की बख्तरबन्द गाड़ियों तथा सैनिक ठिकानों को पर्याप्त क्षति पहुंचाई।

सम्पूर्ण कार्रवाइयों में फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट डोराएस्वामी ने उच्चकोटि के साहस, दृढ़ता और व्यावसायिक दक्षता का परिचय दिया।

10 स्क्वाड्रन लीडर जोनी विलियम ग्रीन (4093), जनरल ड्यूटीज (पायलट)।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—3 सितम्बर, 1965)

छम्ब सेक्टर में पाकिस्तान के विरुद्ध कार्यवाहियों में नाट वायुयानों की एक टुकड़ी को हमारे जमीनी हमले को शक्तिशाली बनाने और हमारी श्रेष्ठता स्थापित करने के लिये भेजा गया। स्क्वाड्रन लीडर जोनी विलियम ग्रीन ने बार-बार इस सेक्टर में मिशनों का नेतृत्व किया जहां शत्रु मिजाइल से युक्त एफ-86 सेबर और एफ-104 स्टार फाइटर्ज का प्रयोग कर रहा था। उन्होंने उनसे टक्कर लेने के लिये दाव-पेचों पर विचार किया और निजी उदाहरण और दृढ़ निश्चय से अपनी फार्मेशन के जवानों में विश्वास उत्पन्न किया।

3 और 4 सितम्बर, 1965 को उनके नेतृत्व में फार्मेशनों की शत्रु की वायुसेना से प्रथम मुठभेड़ हुई। शत्रु की अधिक संख्या और उसको राडार का जो लाभ था, उसकी ओर ध्यान न देते हुए, उन्होंने अपनी फार्मेशनों का ऐसी दक्षता से नियंत्रण किया और ऐसे स्थानों पर ले गये कि वे शत्रु के दो विमान मार गिराने में सफल हुए जो कि इन कार्यवाहियों में नीचे गिराये जाने वाले पहले विमान थे। बाद में उन्होंने कई एक फार्मेशनों का नेतृत्व किया और जमीनी निशानों पर आक्रमण करने के लिए मिस्टीयर और केनबरा विमानों की वायु रक्षा की। इन आक्रमणों में सफलता प्राप्त करने का सेहरा बड़ी हद तक उनके शौर्य और नेतृत्व के सिर है।

11 विंग कमाण्डर ओम प्रकाश तनेजा (3843), जनरल ड्यूटीज (पायलट)।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—6 सितम्बर, 1965)

पाकिस्तान के विरुद्ध संघर्षों में विंग कमाण्डर ओम प्रकाश तनेजा ने प्रेरणात्मक नेतृत्व का परिचय दिया। शत्रु के इलाकों के ऊपर 9 बार हवाई आक्रमण का स्क्वाड्रन कमाण्डर की हैसीयत में नेतृत्व करने में उन्होंने सुन्दर उदाहरण पेश किया। 6 सितम्बर 1965 को शत्रु के इलाकों पर प्रथम बार बमबारी करने में उन्होंने अपनी स्क्वाड्रन की कमान की और गुजरांवाला क्षेत्र में तेल से भरे रेल के डिब्बों को नष्ट किया। 7 सितम्बर 1965 को सरगोधा हवाई अड्डे पर आक्रमण करने के लिये उन्होंने 12 विमानों की स्क्वाड्रन की कमान की। हवाई आक्रमण की चेतावनी दी जा रही थी और जमीन से विमान भेदी तोपों के फायर हो रहे थे। उसके बाद शीघ्र ही उन्होंने क्षतिग्रस्त हवाई पट्टी से उड़ान की जहां पर रोशनी भी नहीं थी। अन्धेरे में नीचे-नीचे उड़ते हुए वे निशानों पर पहुंच गए। उसके बाद लाहौर और स्यालकोट क्षेत्र में भी उन्होंने हवाई आक्रमण किए और शत्रु के टैंकों, गाड़ियों, तोपों और मार्टर तोपों के ठिकानों को नष्ट किया।

इस उदाहरण से उन्होंने अपने जूनियर पायलटों में विश्वास एवं साहस उत्पन्न किया और अपने अधीन कार्य करने वाले सभी लोगों के प्रशंसा-पात्र बने।

12 स्क्वाड्रन लीडर श्री कृष्ण सिंह (3996), लेखा।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—6 सितम्बर, 1965)

पाकिस्तान से युद्ध प्रारम्भ होते समय स्क्वाड्रन लीडर श्री कृष्ण सिंह एक हवाई अड्डे की भू-रक्षा और सुरक्षा व्यवस्था के प्रभारी थे। 6 सितम्बर, 1965 को आधुनिक हथियारों और उपकरणों से लैस 60 से अधिक पाकिस्तानी छाताधारी यूनिट की परिसीमा में हमारे वायुयानों और संस्थापनों की तोड़फोड़ के लिए उतारे गए। स्क्वाड्रन लीडर सिंह ने एक मोबाइल गश्ती दल का गठन किया और उनकी सूझ-बूझ और कुशल नेतृत्व में गश्ती दल ने शत्रु की चालों को विफल कर दिया। हवाई अड्डे की सुरक्षा को अभेद्य पाकर छाताधारी अन्ततः हवाई अड्डे के क्षेत्र से हट गए और उन्हें असैनिक और सैनिक अधिकारियों द्वारा पकड़ लिया गया।

7 सितम्बर, 1965 को जब यह सूचना मिली कि कुछ छाताधारी समीप के एक गांव में छिपे हुए हैं तो उन्हें पकड़ने के लिए स्क्वाड्रन लीडर श्री कृष्ण सिंह ने एक सशस्त्र मोबाइल गश्ती दल के नेतृत्व के लिए अपनी सेवाएं अर्पित कीं। इस कार्रवाई में उन्हें पाकिस्तानी छाताधारी दल के प्रभारी अफसर सहित तीन छाताधारियों को पकड़ने में सफलता मिली। उनकी देखरेख में बड़े पैमाने की छानबीन में 70 पैराशूट और बड़ी मात्रा में स्वचालित हथियार और अन्य उपकरण पकड़े गए। स्क्वाड्रन लीडर श्री कृष्ण सिंह के इस साहसिक कार्य ने हवाई अड्डे पर छाताधारियों के आक्रमण को निष्फल बना दिया।

13 स्क्वाड्रन लीडर भूपेन्द्र कुमार विश्नोई (4594), जनरल ड्यूटीज (पायलट)।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—7 सितम्बर, 1965)

पाकिस्तान के विरुद्ध हवाई कार्यवाही में भाग लेने के लिए स्क्वाड्रन लीडर भूपेन्द्र कुमार विश्नोई 7 सितम्बर 1965 को हलवारा पहुंचे। 15 दिनों के अन्दर उन्होंने 16 बार हवाई आक्रमणों में भाग लिया जिनमें से 7 उड़ानें कसूर/लाहौर क्षेत्र में स्थल सेना की सहायता के लिए की गई थीं।

कसूर क्षेत्र में जब शत्रु का गोला-बारूद समाप्त हुआ तो स्क्वाड्रन लीडर विश्नोई ने 4 विमानों के साथ उड़ान की और रायविन्ड रेलवे स्टेशन पर गोला-बारूद ले जाने वाली एक रेलगाड़ी को नष्ट किया। इस महत्त्वपूर्ण सप्लाई के नष्ट होने से शत्रु को इस क्षेत्र से अपनी बख्तरबन्द गाड़ियां अधिक हानि करवा कर पीछे हटानी पड़ीं।

अन्य उड़ाने भर कर उन्होंने शत्रु के 10 टैंकों, बख्तरबन्द गाड़ियों और तोपों के ठिकानों को नष्ट किया। शत्रु के जमीन से होने वाली गोलाबारी से उनके विमान में तीन बार गोली लगने पर भी वे प्रत्येक बार आक्रमण करते ही रहे।

इस सब कार्यवाही में स्क्वाड्रन लीडर भूपेन्द्र कुमार विश्नोई ने ऐसे साहस तथा नेतृत्व का परिचय दिया जो वायु सेना की उच्चतम परम्परा के अनुरूप है।

14 फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट दिल मोहन सिंह कहाई (5272),
जनरल ड्यूटीज़ (पायलट)।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—7 सितम्बर, 1965)

फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट दिल मोहन सिंह कहाई उस मिस्टियर स्क्वाड्रन के उप-नेता थे जिसने 7 सितम्बर 1965 को अधिक सुरक्षित सरगोधा हवाई अड्डे पर दिन में हमला किया था। विमान भेदी तोपों भारी गोलाबारी के बावजूद प्लेटफार्म पर आपरेशन के लिये खड़े चार विमानों पर (एक एफ-104 और 3 एफ-86) बम ...गाए। दूसरे प्लेटफार्म पर इसी प्रकार खड़े और दो एफ-86 और ...क एफ-104 विमानों पर भी गोलियां चलाईं।

उन्होंने 11 सितम्बर, 1965 को लाहौर क्षेत्र में तोपों वाले बंकरों पर बमबारी करने के लिये जाने वाले दो विमानों की स्क्वाड्रन के नम्बर-2 की हैसियत से उड़ान की। उन्होंने जो बम गिराए ...क बंकरों के ऊपर गिरे और उनको नष्ट कर दिया।

18 सितम्बर, 1965 को 4 विमानों की फार्मेशन में उप-रूप में उड़ान करते हुए फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट कहाई ने लाहौर ...ड्डे के पास तोप लगी एक चौकी पर राकेटों से फायर ... नष्ट कर दिया। 19 सितम्बर 1965 को वे दो विमानों ...र को लेकर गए और इच्छोगिल नहर पर एक बेली पुल ...ा।

...देने की कार्यवाही में भी उन्होंने उड़ान की और ... और सिपाहियों को बहुत हानि पहुंचाई। उन्होंने ...स पेट्रोल करने की उड़ानें भी कीं।

...ामों में फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट दिल मोहन सिंह कहाई ने ...ाहस का प्रदर्शन किया उससे दूसरे पायलटों को ...प वायुसेना की परम्परा के अनुरूप थी।

...नेन्ट चन्द्र कृष्ण कुमार मेनन (5699),
(पायलट)।

(...ी तिथि—7 सितम्बर, 1965)

...65 को फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट चन्द्र कृष्ण कुमार ...रुद्ध कारवाई में भाग लेने के लिए हलवाड़ा ...में शामिल हुए। युद्ध-विराम लागू होने तक ...में भाग लिया, जिनमें से 7 उड़ानें सेना ...थीं।

...सूर-लाहौर क्षेत्रों के ठिकानों ...विरचना का नेतृत्व करने के ...ने रायविंड रेलवे स्टेशन ...। इस गाड़ी में शत्रु सेना के ... गोला-बारूद ले जाया जा ...पूर्ण सप्लाई के कट जाने से ... पीछे हटना पड़ा। इसी ...कों और तोप के ठिकानों ...कर दिया या क्षति पहुंचाई। ...ने नष्ट हुए।

...ट चन्द्र कृष्ण कुमार मेनन ने ...और अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा ...त्तम परम्पराओं को निभाया।

... कुल्लर (5854),

(...—7 सितम्बर, 1965)

...कार्यवाई में भाग लेने के लिए ...कुल्लर हलवाड़ा की हन्टर ...में शामिल हुए। उन्होंने एक ...उड़ानें की जिनमें 7 उड़ानें सेना ...।

8 सितम्बर, 1965 को उन्होंने 4 वायुयानों की विरचना के साथ उड़ान की जिसने रायविंड रेलवे स्टेशन पर सप्लाई रेलगाड़ी को नष्ट किया। यह रेलगाड़ी कसूर क्षेत्र में शत्रु की सेना के लिए अति आवश्यक गोला-बारूद ले जा रही थी। इस आवश्यक सप्लाई के न पहुंचने के कारण शत्रु की कथित सेना को भारी क्षति के साथ पीछे हटना पड़ा।

सामरिक महत्त्व की अन्य उड़ानों के दौरान फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट कुल्लर ने शत्रु के कम-से-कम 6 टैंकों, बख्तरबन्द गाड़ियों तथा मोर्चों के स्थानों को नष्ट या विक्षत किया। उन्होंने निर्भिकतापूर्वक शत्रु के सुदृढ़ ठिकानों पर हमले किये। यद्यपि उनके वायुयान पर जमीन से 3 बार गोलियां लगीं।

इन सामरिक महत्त्व की उड़ानों के दौरान फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट अमरजीत सिंह कुल्लर ने वायुसेना की उत्कृष्ठ परम्परा के अनुकूल साहस और नेतृत्व का परिचय दिया।

17 स्क्वाड्रन लीडर जसबीर सिंह (4476),
जनरल ड्यूटीज़ (पायलट) (लापता)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—7 सितम्बर, 1965)

पाकिस्तान के विरुद्ध जो कार्यवाहियां की गईं, उनमें स्क्वाड्रन लीडर जसबीर सिंह एक लड़ाका स्क्वाड्रन के फ्लाइट कमाण्डर के रूप में कार्य कर रहे थे।

7 सितम्बर, 1965 को गुजरांवाला हवाई अड्डे के समीप एक शक्तिशाली राडार यूनिट पर जो हमारी वायुसेना की कार्यवाहियों में बड़ी बाधा डाल रहा था, आक्रमण करने के लिये, स्क्वाड्रन लीडर जसबीर सिंह को मिशन का नेता तैनात किया गया। जैसे ही उसकी टुकड़ी आक्रमण करने वाली थी, स्क्वाड्रन लीडर जसबीर सिंह ने देखा कि शत्रु के चार सेबर जेट आ रहे थे। और तत्काल टुकड़ी को खतरे से आगाह किया और अधिक अच्छा काम करने वाले शत्रु के वायुयानों से रास्ते में ही रोक लिये जाने के भय की ओर ध्यान न देते हुए और न ही जोर से हो रही गोलाबारी की चिन्ता करते हुए उन्होंने आक्रमण किया और राडार स्टेशन को बहुत अधिक हानि पहुंचाई। अन्तिम हमले में जब उन्हें बहुत नीचे अपने निशान तक पहुंचना था तो उनके विमान को नीचे से गोली लगी और वह निशान के निकट गिरता दिखाई दिया। इस कार्यवाही में स्क्वाड्रन लीडर जसबीर सिंह ने बड़ी वीरता और कर्त्तव्यपालन का परिचय दिया जो कि वायुसेना की सर्वोत्तम परम्परा के अनुकूल था।

18 2537049 लांस नायक मदालय मुत्यु, आर्टिलरी रेजिमेंट।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—7 सितम्बर, 1965)

लांस नायक मदालय मुत्यु, जो कि वायुसेना के अड्डे, कलाईकुन्डा पर तोप टुकड़ी के कमान्डर थे, अपनी तोप से बड़े कौशल और प्रभावकारी ढंग से गोलाबारी की और 7 सितम्बर, 1965 को एक पाकिस्तानी सेबर जैट विमान को मार गिराया।

इस नानकमीशन्ड आफिसर के अधीन तोप टुकड़ी ने अत्यन्त सराहनीय कार्य किया।

19 फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट विनोद कुमार भाटिया (6497),
जनरल ड्यूटीज़ (पायलट)।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—8 सितम्बर, 1965)

पाकिस्तान के विरुद्ध हुए संघर्ष के दौरान फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट विनोद कुमार भाटिया लाहौर क्षेत्र में एक औपरेशनल स्क्वाड्रन में कार्य कर रहे थे। उस क्षेत्र में उन्होंने 18 और औपरेशनल सम्बन्धी उड़ानें कीं।

8 सितम्बर, 1965 को फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट भाटिया ने जमीन पर के ठिकानों पर आक्रमण करने के लिए 4 मिस्टियर विमानों की फार्मेशन में उप-नेता के रूप में उड़ान की। शत्रु की जबर्दस्त गोलीबारी होते हुए भी फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट भाटिया ने अपनी परवाह न करते हुए शत्रु के टैंक और तोपों के ठिकानों पर आक्रमण किया तथा दो टैंक नष्ट किये।

फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट विनोद कुमार भाटिया ने जिस साहस तथा दृढ़ता का परिचय दिया वह भारतीय वायु सेना की परम्परा के अनुरूप था।

20 1135608 हवलदार (जी० डी०) राम उजागर, आर्टिलरी रेजिमेंट

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—8 सितम्बर 1965)

8 सितम्बर 1965 को पाकिस्तान के सियालकोट क्षेत्र में कांग्रे नामक गांव के समीप एक मीडियम बैट्री को कार्रवाई करने का आदेश दिया गया। जैसे ही तोपें चलाई जाने वाली थी कि शत्रु ने हल्की मशीन गन से गोलीबारी शुरू कर दी। शत्रु की गोलीबारी बहुत प्रभावशाली थी और इससे हमारे सैनिकों और उपस्करण को भारी क्षति हो रही थी। इस क्षेत्र में कोई भी कार्रवाई प्रायः असम्भव थी। इसी दौरान शत्रु ने अन्य दिशाओं से भी गोलीबारी शुरू कर दी। हवलदार राम उजागर रेंगते हुए शत्रु की हल्की मशीन गन चौकी तक पहुंचे, उन्होंने दो व्यक्तियों को मार दिया और एक हल्की मशीन गन को अपने अधिकार में ले लिया। तत्पश्चात् वह वापस आए और उस क्षेत्र की सुरक्षा का प्रबन्ध किया और इस प्रकार बैट्री को और अधिक क्षति होने से बचाया। इस कार्रवाई में हवलदार राम उजागर ने महान साहस और अनुकरणीय कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

21 फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट प्रमोद चन्द्र चोपड़ा (5194), जनरल ड्यूटीज (पायलट)।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—11 सितम्बर 1965)

पाकिस्तान के विरुद्ध हाल की लड़ाई में फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट प्रमोद चन्द्र चोपड़ा ने ऑपरेशन सम्बन्धी 14 कार्रवाइयों में भाग लिया और आकाश में शत्रु का पीछा करने में बड़े जोश का प्रदर्शन किया।

जमीनी ठिकानों पर आक्रमण करने के लिए 11 सितम्बर 1965 को फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट चोपड़ा ने 4 मिस्टियर विमानों की फार्मेशन में नं० 3 की हैसियत से उड़ान की। इस फार्मेशन पर जमीन से शत्रु ने बहुत गोलियां चलाईं। विमानभेदी तोपों की परवाह न करते हुए फ्लाइट लेफ्टिनेंट चोपड़ा ने शत्रु के 2 टैंक नष्ट किए और इसके अतिरिक्त तोपों के बहुत-से ठिकानों तथा गाड़ियों को भी नष्ट कर दिया।

उनके साहस तथा दृढ़ता से दूसरे पायलटों को प्रेरणा मिली तथा वह वायु सेना की परम्परा के अनुरूप थीं।

22 जे सी-18114 रिसालदार करतार सिंह, पूना हार्स (17 हार्स)। (मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—11 सितम्बर, 1965)

11 सितम्बर 1965 को पाकिस्तान में स्थित फिल्लौरा पर कब्जा करने की लड़ाई के दौरान रिसालदार करतार सिंह ट्वाइंट ट्रूप लीडर थे। लगभग 600 गज के पास से शत्रु के टैंकों द्वारा अचानक उनके एक टैंक पर गोला लगने से उसमें आग लग गई। रिसालदार करतार सिंह ने शीघ्र ही अनुभव किया कि शत्रु की लगभग एक स्क्वाड्रन टैंक और रिक्वायललेस गनें उसकी घात लगाये बैठी हैं। अपनी सुरक्षा की परवाह किए बिना वह अपने टैंक को आगे ले गए और तीन पैटन टैंकों को नष्ट किया, इससे शत्रु की टुकड़ी में घबराहट और खलबली फैल गई। शत्रु के भारी टैंकों और तोपखानों की गोलीबारी के बीच वह अपने टैंक से बाहर कूद पड़े और जलते हुए टैंक से घायल टैंक चालक को बचा लिया और बाद में अपने-अपने शेष दो टैंकों के साथ आगे बढ़ने लगे। जैसे ही वह फिल्लौरा रिज पर आक्रमण करने वाले ही थे कि बगल से उनके स्क्वाड्रन पर रिक्वायललेस गन से गोलीबारी होने लगी। उन्होंने शीघ्र अपनी दिशा बदल दी और गोलीबारी कर रिक्वायललेस गनों को शान्त कर दिया।

14 सितम्बर 1965 को उन्हें वजीरवाली शत्रु सुरक्षा—जिसमें एक कम्पनी इन्फैंट्री और टैंकों की दो टुकड़ियां थीं, को कमजोर करने का काम सौंपा गया। आक्रमण के समय वह टुकड़ी के नेता थे और उन्होंने शत्रु द्वारा आग लगाए टैंक में से एक चालक को पूर्व की भांति बचाया। इस संक्रिया में उन्हें बहुत-से छोटे हथियारों मार्टर, टैंक और तोपखाने की गोलाबारी का सामना करना पड़ा। चालक को सुरक्षित स्थान में पहुंचाने के बाद जब वह अपने टैंक के अन्दर जा रहे थे तो उन्हें प्राणघातक चोट लगी। इस प्रकार उन्होंने अपने साथियों की प्राण रक्षा में अपना जीवन बलिदान कर दिया।

रिसालदार करतार सिंह ने भारतीय सेना की उच्चतम परम्परा के अनुरूप आदर्श, साहस, दृढ़ निश्चय और निःस्वार्थ कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

23 विंग कमाण्डर सुरपति भट्टाचार्य (3974), जनरल ड्यूटीज (पायलट)।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—12 सितम्बर 196

पाकिस्तान से युद्ध छिड़ने पर विंग कमाण्डर सुरपति भ पश्चिम क्षेत्र की एक सामरिक लड़ाकू स्क्वाड्रन के फ्लाइट थे। उन्होंने 12 सितम्बर 1965 को एक स्क्वाड्रन संभाली। उन्होंने अपनी सेना को निकट सहायता प्र उद्देश्य से शत्रु के बख्तरबन्द और सैनिक जमावों पर आ नेतृत्व किया। शत्रु की स्थल से गोलाबारी और के बावजूद उन्होंने अपने आक्रमणों को सफल बनाय टैंकों, बख्तरबन्द गाड़ियों और सैनिक जमावों को सफलता प्राप्त की। उन्होंने अपनी प्रत्येक सामरिक उ का नेतृत्व किया। अपनी व्यक्तिगत सफलता उन्होंने इन विरचनाओं के अन्य वायुयानों द्वार में भी अपना अमूल्य योगदान दिया।

उन्होंने अपने व्यक्तिगत उदाहरण द्वारा अ वायु-सैनिकों को प्रेरणा दी तथा उनमें विश्व

विंग कमाण्डर सुरपति भट्टाचार्य ने उच्चतम परम्पराओं के अनुकूल कोटि के सा नेतृत्व का परिचय दिया।

24 फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट विनोद पटने जनरल ड्यूटीज (पायलट)

(पुरस्कार की प्रभावी ति

पाकिस्तान के विरुद्ध अग्रिम क्षेत्र में एक ऑपरे ही समय में उन्होंने 16 ब

13 सितम्बर 1965 ठिकानों पर आक्रमण करन समय उन्होंने 4 विमानों की की। आक्रमण के दौरान फ, एवं सुदृढ़ स्थल गोलाबारी क विमान गिरा दिया गया। इसकी पटने ने शत्रु के ठिकानों पर 5 बा तीन पैटन टैंक नष्ट कर दिये। प जिस साहस तथा पहल शक्ति का सेना की परम्परा के अनुरूप थे।

25 स्क्वाड्रन लीडर सतीश नन्द जनरल ड्यूटीज (नेवीगेटर)।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—1

13 एवं 14 सितम्बर, 1965 को बड़े पैमाने पर बमबारी की गई। इसका के सही स्थान का पता लगाने के लिये स्क्वाड्

को चुना गया। लक्ष्य शत्रु के इलाके के बहुत अन्दर था इसलिए विमानों को अग्रिम हवाई अड्डों से उड़ाना पड़ा और वापिस ठिकाने पर पहुंचने में तेल आदि की कोई कमी न हो इसलिए उनको सीधे रास्ते से उड़ान करनी पड़ी।

हालांकि चांद बादलों में छिपा हुआ था, स्क्वाड्रन लीडर बन्सल ने पहाड़ियों के बीच से नीची उड़ान भरने का निश्चय किया ताकि बम्बर विमानों की स्थिति का शत्रु को पता न चले।

उनका वायुयान चालन इतना सही था कि हवाई जहाजों को हवाई अड्डे के ऊपर मध्य में लाने के लिए केवल एक ही बार रास्ता बदलने की आवश्यकता पड़ी। जब उन्होंने उस क्षेत्र में प्रकाश करने के लिये गोला फेंका तो शत्रु ने विमान भेदी तोपों से अत्यधिक गोलीबारी की बौछार कर दी। साहस तथा दृढ़ता के साथ वह गोली प्रहार एवं सुरागी गोलों के बीच अपने विमान को ले गये तथा लक्ष्य बताने वाले बम को ठीक स्थान पर गिराया। बमबारी कहां और कैसे की जाए, यह पता लगाने के लिये हवाई अड्डे के ऊपर पुनः उड़ान करना आवश्यक था। तोपों के प्रहार की रेंज से ऊपर जाने के लिए अब समय नहीं था। अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की विचार किए बिना स्क्वाड्रन लीडर बन्सल ने बम गिराने की जांच करने के लिए अपने पायलट को विमान भेदी तोपों की गोलाबारी एवं सुरागी गोलों के बीच में से पुनः उड़ान करने को कहा। उसके बाद उन्होंने बम्बर लीडर को सूचित किया तथा बमबारी के लिए थोड़ा ऊंचा उठने के लिए कहा। यदि स्क्वाड्रन लीडर बन्सल ऐसा न करते तो हमारे कई बम्बर विमान गिराए जाते।

पाकिस्तान के विरुद्ध इस संघर्ष में स्क्वाड्रन लीडर सतीश नन्दन बन्सल बम्बर विमानों के कितने ही आक्रमणों में प्रमुख नेवीगेटर थे। इस सब कार्यवाही में उन्होंने वायु सेना की उच्च परम्परा के अनुरूप साहस तथा धैर्य का परिचय दिया।

26 स्क्वाड्रन लीडर चित्तरंजन मेहता (4615), जनरल ड्यूटीज़ (पायलट)।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—14 सितम्बर 1965)

14 सितम्बर 1965 को स्क्वाड्रन लीडर चित्तरंजन मेहता को भगतनवाला में शत्रु के विमानों और ठिकानों पर आक्रमण करने और उन्हें नष्ट करने के लिये कहा गया। उन्होंने 14 सितम्बर, 1965 की रात को उड़ान भरी परन्तु अपने निशान तक पहुंचने के लिये अभी आधा रास्ता ही पूरा किया था कि विमान के मार्ग निर्देशनयंत्र खराब हो गये। एक मील से भी कम दूरी तक दृष्टि जाती थी और शत्रु की ओर से किया गया ब्लैक आउट भी इतना जोरदार था कि विमान को चलाना असम्भव हो गया। स्क्वाड्रन लीडर मेहता ने तत्काल झेलम नदी के साथ-साथ नया रास्ता अपनाया। उन्हें एक पुल के पास से उड़ान करनी थी जिस पर शत्रु ने विमान भेदी तोपें लगा रखी थीं। उन्होंने बड़े कौशल से विमान भेदी तोपों की गोलाबारी से अपने को बचाया और लक्ष्य पर पहुंच गये। जैसे ही वह हवाई अड्डे पर पहुंचे वैसे ही सरगोधा हवाई अड्डे से उन पर भारी गोलाबारी की जाने लगी। हवाई अड्डे की फौजी देख-भाल करने और निशानों पर हमला करने के लिये उन्हें कम-से-कम 10 मिन्टों के लिये निशाने के ऊपर रहना पड़ा। विमान भेदी तोपों की गोलाबारी की चिन्ता न करते हुए और मिजाइल लिये हुए उन लड़ाकू विमानों से रास्ते में ही रोक लिये जाने के खतरे की ओर ध्यान न देते हुए, जो कि चाद एक मील दूर ही देखभाल करते उड़ान भर रहे थे, स्क्वाड्रन लीडर मेहता ने सफलतापूर्वक फौजी देखभाल करने का काम पूरा किया।

स्क्वाड्रन लीडर मेहमा ने 9 मिशन सफलतापूर्वक पूरे किये और इनमें वह दिन में तथा रात में निडरता से शत्रु के इलाके में बड़ी दूर तक गये और शत्रु को भारी जानी हानि पहुंचाई।

इस मिशन में स्क्वाड्रन लीडर चित्तरंजन मेहता ने अपूर्व साहस, दृढ़ता तथा उच्च स्तर के कौशल का परिचय दिया।

27 मेजर भगत सिंह (आई सी-13154) 6वीं, बटालियन, गार्ड्स ब्रिगेड। **(मरणोपरांत)**

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—14 सितम्बर 1965)

मेजर सिंह ने 14-15 सितम्बर 1965 की रात को जम्मू-कश्मीर में रिंगपेन के सामने एक क्षेत्र में शत्रु के इलाके में दूर तक एक गश्ती पल्टन की अगवानी की। बड़े कठिन रास्ते से मार्च करते हुए वे शत्रु की दो चौकियों के बीच आ गए। उन्होंने साथ वाली चौकियों के साथ शत्रु के टेलीफोन संबंध काट दिये। एक सेक्शन को शत्रु को मिलने वाली सहायता को रोकने के लिये लगाया और दूसरे दो सेक्शनों से शत्रु की दूसरी चौकी पर हमला कर दिया। शत्रु इस चौकी पर एक पल्टन और एक मझौली मशीन गन के अधिकार किए हुए था। मेजर भगत सिंह शत्रु के बंकरों के 10 से 15 गज के भीतर शत्रु की चौकी के दोनों ओर अपने दो सेक्शनों को ले गए जब शत्रु ने गोलाबारी शुरू कर दी। मेजर भगत सिंह ने स्वयं शत्रु के 3 में से 2 सैनिकों को गोली से उड़ा दिया जो कि चौकी से बाहर आए हुए थे, कई हथगोले फैंके और शत्रु की ओर से मझोली मशीन गन से की जा रही भारी गोलाबारी के बावजूद व्यक्तिगत सुरक्षा की चिन्ता न करते हुए शत्रु की चौकी के चारों ओर आते-जाते रहे। गोलाबारी लगभग आधा घंटा होती रही और गोलीबारी के आदान-प्रदान में घातक रूप से आहत हो गये। जैसे ही दिन की रोशनी हुई और साथ वाली निकट ही की शत्रु की चौकियों से पल्टन पर मार्टर और मझौली मशीन गन से भारी गोलाबारी की जाने लगी। मेजर भगत सिंह ने अपनी गश्ती सैनिक टुकड़ी को पीछे हटने का आदेश दिया। अपने घावों और खून निकल जाने के कारण वह कमजोरी महसूस करने लगे और सैनिक टुकड़ी को यह कहते हुए कि वह भी उनके पीछे आयेंगे, उस अड्डे पर वापिस चले जाने का आदेश दिया जिसका पहले से प्रबन्ध किया हुआ था। परन्तु वह और आगे बढ़ने में असमर्थ थे अतः शत्रु ने उन्हें घेरे में ले लिया और जब वह बन्दी बना कर ले जाए जा रहे थे तो उनकी मृत्यु हो गई।

मेजर भगत सिंह ने न केवल शत्रु को भारी जानी नुक्सान पहुंचाया अपितु अपनी सैनिक टुकड़ी को और अधिक हानि से बचाने के लिए अपना जीवन बलिदान कर दिया। मेजर भगत सिंह द्वारा प्रदर्शित साहस, दृढ़ संकल्प और न बुझने वाली युद्ध की भावना सेना की परम्पराओं के अनुरूप थी।

28 नं० 2444453 लांस नायक देव राज, 19वीं बटालियन, पंजाब रेजिमेंट।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—14 सितम्बर 1965)

14-15 सितम्बर 1965 की रात्रि को पंजाब बटालियन की एक कम्पनी को जम्मू-कश्मीर के उड़ी क्षेत्र के एक हिस्से पर कब्जा करने का आदेश दिया गया। लांस नायक देव राज इस कम्पनी के साथ मझौली मशीनगन के तोपची के रूप में गया।

15 सितम्बर 1965 को रात्रि को जब शत्रु-सेना को इस मोर्चे पर हमारे अधिकार का पता चला तो उन्होंने मझौली मशीन-गनों और अन्य स्वचालित हथियारों से गोलाबारी शुरू की। शत्रु की एक मझौली मशीनगन हमारे मोर्चे पर ठीक निशाने से और भारी गोलाबारी कर रही थी। लांस नायक देवराज अपनी टुकड़ी के साथ शत्रु की तोप से मुकाबिला करने के लिए आगे बढ़े। जब टुकड़ी का प्रभारी ओहदेदार बुरी तरह से घायल हो गया तो उसने टुकड़ी का कमान स्वयं संभाल ली। तोप का प्रयोग खुले में किया जा रहा था और शत्रु उस क्षेत्र में भारी गोलाबारी कर रहा था। लांस नायक देवराज शत्रुओं के जवाबी हमलों को विफल करने के लिए अग्रिम मोर्चे पर निर्भीकता के साथ डटे रहे। शत्रु-सेनाओं ने पुनः जवाबी हमले की तैयारी की और एक ओर के रास्ते से आते हुए, लांस नायक देव राज को एक गोली का निशाना

बनाया। जब शत्रु सेना उनसे 100 गज से कम दूरी पर थी तो घायल होने के बावजूद भी उन्होंने शत्रु सेना का बड़े साहस से मुकाबिला किया और उन्हें आगे बढ़ने से रोक दिया। उन्होंने प्रायः अकेले ही शत्रु के जवाबी हमले का मुंहतोड़ जवाब दिया। उनके इस कार्य ने पूरी कम्पनी और मझौली मशीन गन को बचाया।

इस ओहदेदार ने अपनी बहादुरी और कर्त्तव्यनिष्ठा का जो परिचय दिया वह भारतीय सेना की उच्चतम परमपराओं के अनुकूल है।

29 फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट प्रद्योत दस्तीदार (5456), जनरल ड्यूटीज (नेविगेटर)।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—15 सितम्बर 1965)

15 सितम्बर 1965 को फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट प्रद्योत दस्तीदार को लक्ष्य संकेत करने वाले वायुयान पर नेवीगेटर तैनात किया गया, जिसे पेशावर हवाई अड्डे पर एक बड़े हमले का नेतृत्व करना था। यह उड़ान अत्यन्त कठिन थी जिसकी सफलता के लिए नेवीगेटर को अत्यधिक दक्ष और निशानेबाज होना आवश्यक था।

रास्ता पुलों के समीप होकर गुजरता था जिन्हें शत्रु द्वारा वायुयान भेदी तोपों से सुरक्षित किया हुआ था आकाश में कहीं चांदनी नहीं थी और सारा क्षेत्र धुन्ध से भरा हुआ था। दृश्यता इतनी कम थी कि फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट दस्तीदार को हवाई अड्डा तब दिखाई दिया जब वे ठीक उसके ऊपर थे। जैसे ही उन्होंने ठिकाने का संकेत देने के लिए हिलती ज्वाला देने वाला बम्ब फेंका वैसे ही वायुयानभेदी तोपों ने रुकावट डाल दी। फटते हुए गोलों और अपने ऊपर पड़ने वाले प्रकाश संकेतों से न घबराते हुए उन्होंने दृढ़ चित होकर उड़ान ली और पीछे आने वाले बम वर्षकों के लिए लक्ष्य संकेत देने वाले बम्ब को गिराने के पश्चात् उन्होंने अपने बम को घूम कर देखा। इस बीच विमान भेदी तोपें आग उगल रही थीं और उसके आस पास गोले फट रहे थे। लक्ष्य को संकेत करने वाले बम्ब को गिरा देख कर उन्होंने विरचना के नेता को बमबारी करने के पूरे आंकड़ों से अवगत किया। उन्होंने हवाई अड्डे की परिसीमा को तभी छोड़ा जब उन्हें इस बात का निश्चय हो गया कि विरचना के नेता ने बम से सम्बन्धित आंकड़े प्राप्त कर लिए हैं और समझ लिए हैं।

इस उड़ान और 7 अन्य उड़ानों में फ्लाइट लेफ्टिनेन्ट प्रद्योत दस्तीदार ने उच्च कोटि के साहस और दक्षता का परिचय दिया।

30 स्क्वाड्रन लीडर तेज प्रकाश सिंह गिल (4755), जनरल ड्यूटीज (पायलट)।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—19 सितम्बर 1965)

पाकिस्तान के विरुद्ध की गई कार्रवाई में औपरेशनल स्क्वाड्रन के फ्लाइट कमांडर स्क्वाड्रन लीडर तेज प्रकाश सिंह गिल ने सियालकोट, छम्ब, लाहौर और कसूर क्षेत्रों में थल सेना की ठोस सहायता के लिए स्थल सेना पर आक्रमण करने वली पूरी 21 उड़ानों में भाग लिया। 19 और 21 सितम्बर, 1965 को दो ऐसी सामरिक उड़ानों में स्क्वाड्रन लीडर तेज प्रकाश सिंह गिल को विमान भेदी तोपों के गोलाबारी की भारी बराज का सामना करना पड़ा। आक्रमण रोक देने की बजाए, स्क्वाड्रन लीडर गिल ने अपने जीवन की बिल्कुल परवाह न करते हुए बहादुरी से शत्रु पर आक्रमण किए और काफी मात्रा में शत्रु-कवच और फील्ड गनों को नष्ट किया।

इन सामरिक उड़ानों के दौरान स्क्वाड्रन लीडर तेज प्रकाश सिंह गिल ने उच्च कोटि के साहस और नेतृत्व का परिचय दिया।

31 विंग कमांडर पीटर मेनर्ड विल्सन (3590), जनरल ड्यूटीज (पायलट)।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—21 सितम्बर 1965)

विंग कमांडर पीटर मेनर्ड विल्सन एक बमवर्षक स्क्वाड्रन की कमान कर रहे थे। पाकिस्तान के विभिन्न भागों पर रात्रि में बमबारी करने के अतिरिक्त उन की स्क्वाड्रन को कच्छ क्षेत्र में बादिन के समीप एक शक्तिशाली राडार-स्टेशन को नष्ट करने का कार्य सौंपा गया।

यह राडार स्टेशन विमानभेदी तोपों के सभी व्यासों से पूर्णतया सुरक्षित था और साथ ही यह किसी भी हवाई आक्रमण से अपनी रक्षा के लिए अपने अवरोधी वायुयान को बुला सकता था। लक्ष्य इस किस्म का था कि संतोषजनक परिणाम प्राप्त करने के लिए बमबारी के लिए सिद्ध निशाने बाजी की आवश्यकता थी। इसलिए यह निश्चय किया गया कि दिन-दहाड़े नीची उड़ान भर कर बमबारी की जाए ताकि बमवर्षक कर्मी स्पष्ट दृश्यता का पूरा-पूरा लाभ उठा सकें और निशाने से तनिक भी चूक न हो सके।

इसमें निहित खतरों का पूर्ण ज्ञान होते हुए विंग कमाण्डर विल्सन ने अपने स्क्वाड्रन का नेतृत्व किया और पूर्ण विश्वास से और निश्चय के साथ राडार स्टेशन पर आक्रमण किया। अत्यधिक विरोध के बावजूद उन्होंने और उनके दल ने राडार स्टेशन को सफलतापूर्वक नष्ट कर दिया जो शत्रु के लिये अत्यन्त महत्वपूर्ण था।

विंग कमाण्डर पीटर मेनर्ड विल्सन द्वारा इस अवसर पर प्रदर्शित, साहस, नेतृत्व और दक्षता वायुसेना की उच्चतम परम्पराओं के अनुकूल थीं।

32 कैप्टेन सुरेन्द्रशाह (आई सी-13687), 4थी बटालियन, कुमाऊं रेजिमेंट।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—21 सितम्बर 1965)

21 सितम्बर 1965 को कैप्टेन सुरेन्द्रशाह ने अपनी कम्पनी का नेतृत्व किया जिसे युद्ध विराम रेखा के पार जम्मू-कश्मीर के तिथवाल क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण ठिकाने पर कब्जा करना था। यह ठिकाना पाकिस्तानी सेना के कब्जे में था और इसकी संख्या एक कम्पनी से अधिक थी, जो ब्राउनिंग मशीन गनों से लैस थी। रास्ता शत्रु के तोपखाने की आड़ के अन्दर संकरी घाटी के साथ-साथ घने जंगल, ढालूदार और चट्टानी भूमि पर होकर जाता था। शत्रु के विरोध के बावजूद कैप्टेन शाह ने अपनी प्रहारक टुकड़ी का नेतृत्व किया। जब शत्रु की सुरंगों के कारण आगे बढ़ने वाले प्लाटून को थोड़ी देर के लिए रुकना पड़ा और प्लाटून कमांडर मारा गया, तब कैप्टेन शाह आगे बढ़े और उन्होंने अपने सैनिकों का लक्ष्य प्राप्ति की ओर मार्ग-प्रदर्शन किया।

लक्ष्य पर दो बार आक्रमण किया गया। पहले आक्रमण में कैप्टेन शाह की कम्पनी के 8 व्यक्ति आहत हुए और उनके पेट में हथगोले के टुकड़े से हल्की चोट लगी। जानी नुकसान के बावजूद कैप्टेन शाह ने सफल आक्रमण किया। जब वह अंतिम आक्रमण कर रहे थे तो उनका पैर जख्मी हो गया और उन्होंने देखा कि उनके सैनिकों ने अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लिया है। कैप्टेन शाह शत्रु के जवाबी हमले के दौरान उपस्थित थे और घाव लगने के बावजूद भी परिस्थिति को अपने नियंत्रण में बनाये रहे। उन्होंने अपने प्लाटून के गोलाबारी, तोपखाना और मोर्टरों का निर्देशन किया। वह अपने सैनिकों के प्रेरणा स्रोत थे और वह वहां से तब तक न हटे जब तक कि उनके सभी घायल सैनिक वहां से निकाल न लिए गए। इस कारवाई में शत्रु का एक अफसर और 57 जवान मारे गए तथा बहुत-से हथियार और गोलाबारूद हमारे अधिकार में आया।

इस नवयुवक अफसर की कमीशन प्राप्त सेवा तीन वर्ष से कम की है और उन्होंने इस कम्पनी की कमान थोड़े दिन पहले सम्भाली थी उन्होंने असाधारण साहस, नेतृत्व और दृढ़ता का परिचय दिया।

33 2846968 नायक जगदीश सिंह, 18वीं बटालियन, राजपूताना राईफल्स। **मरणोपरांत**

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—21 सितम्बर 1965)

नायक जगदीश सिंह एक कम्पनी के सेक्शन कमाण्डर थे जिसे 21 सितम्बर 1965 को खेमकरण क्षेत्र में शत्रु की एक चौकी को नष्ट करने का कार्य सौंपा गया। इस चौकी को एक शक्तिशाली इन्फेन्ट्री-

प्लाटून संभाले हुए थी और टैंकों और टैंक-तोड़ तोपों के सैनिक दस्ते इसकी रक्षा कर रहे थे। जैसे ही हमारी इन्फेंट्री ने आक्रमण किया तो पता चला कि शत्रु के क्षेत्र में टैंक थे। नायक जगदीश सिंह को हथगोलों से इन टैंकों को नष्ट करने का कार्य सौंपा गया। जिस प्रथम टैंक से उसका मुकाबिला हुआ वह उसके चारों ओर बड़े कौशल से घूमा और अपने को लाभकारी स्थान पर स्थित करते हुए टैंक को नष्ट कर दिया। अब शत्रु ने दूसरे टैंक से बैंट्री फायर और तोपों से गोलाबारी शुरू कर दी। अपनी निजी रक्षा की चिन्ता न करते हुए नायक जगदीश सिंह आगे बढ़े और अपने हथगोलों से दूसरा टैंक नष्ट कर दिया। दृढ़ संकल्प से अब वह तीसरा टैंक नष्ट करने के लिए आगे बढ़े परन्तु ब्राउनिंग मशीन गन के एक गोले से वह वीरगति को प्राप्त हुए। इस कार्यवाही में नायक जगदीश सिंह ने उच्चस्तर के साहस और कर्त्तव्यनिष्ठा का प्रदर्शन किया जो कि सेना की सर्वोत्तम परम्पराओं के अनुरूप है।

34 4144564 नायक चन्द्र सिंह, 4थी बटालियन, कुमाऊं रेजिमेंट।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—21 सितम्बर, 1965)

21 सितम्बर, 1965 को युद्ध-विराम रेखा के पार जम्मू-कश्मीर के टिथवाल क्षेत्र के एक महत्वपूर्ण ठिकाने पर नायक चन्द्र सिंह बटालियन के एक आक्रमण के समय सेक्शन कमांडर थे। उनकी कम्पनी ने इस ठिकाने के दक्षिणी भाग पर अधिकार करना था। इस क्षेत्र में शत्रु सेना की जबर्दस्त सुरक्षा व्यवस्था थी। नायक चन्द्र सिंह का प्लाटून अग्रिम सुरक्षित ठिकानों से लगभग 30 गज दूरी पर घेर लिया गया। शत्रु ने इस सेक्शन पर भारी गोलाबारी की, फलस्वरूप एक सैनिक मारा गया और चार घायल हुए। अधिक-से-अधिक गोलाबारी शत्रु बंकर में रखी हुई हल्की मशीन-गन से हो रही थी। जब उनके सेक्शन में केवल दो आदमी रह गए तो नायक चन्द्र सिंह दायीं ओर से आगे शत्रु के बंकर के दस गज दूरी पर रेंग कर आ गए। अब वह उठे और भागकर शत्रु के बंकर पर एक हथगोला फेंका इससे उसके भीतर बैठे दो सैनिक मारे गए। उन्होंने हल्की मशीन-गन को छीन कर बंकर से बाहर फेंक दिया और तत्क्षण अपने प्लाटून को आगे बढ़ने का आदेश दिया। जब वह ऐसा कर रहे थे तो उनके सीने में गोली लगी और वह गंभीर रूप से घायल हो गए। इसके बावजूद भी वह अपने प्लाटून में जवानों को प्रोत्साहित करते रहे। उनके प्लाटून के दो सैनिकों ने उनकी मदद करनी चाही किन्तु उन्होंने उनकी सहायता न ली और उन्हें प्लाटून के साथ काम करने का निवेदन किया।

इस नवयुवक ओहदेदार के आत्मत्याग तथा साहसिक कार्य, प्लाटून के लिए प्रेरणा के स्रोत बने।

35 मेजर कैनीमल थेवकाथिल मधुसूधणन पिल्ले (आई सी-5300), तोपखाना रेजिमेंट।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—28 सितम्बर, 1965)

28 सितम्बर, 1965 को मेजर कैनीमल थेवकाथिल मधुसूधणन पिल्ले सिख लाइट इन्फैन्ट्री की बटालियन से सम्बन्ध बैटरी के कमाण्डर थे। बटालियन को छम्ब क्षेत्र में कालीधर के ऊपर के दो महत्वपूर्ण पहाड़ी ठिकानों का सफाया करने का आदेश दिया गया। इस स्थान को युद्ध-विराम के बावजूद पाकिस्तानी सेना ने दबा लिया था। इस आक्रमण के दौरान मेजर पिल्ले ने हमारी आक्रमणकारी सेना को अचूक और निकटतम गोलाबारी से सहायता पहुंचाई। जब हमारी सेना बुद्धि-ब्राक पर अपनी स्थिति को मजबूत करने में असफल रही तो मेजर पिल्ले को सेना की कमान दी गई। उन्होंने तुरन्त ही स्थिति को मजबूत बनाया और इन्फैंट्री को आगे बढ़ाने में स्वयं नेतृत्व किया। अपने प्रेरणादायक नेतृत्व के कारण वह पैदल सेना और तोपखाने को इकट्ठा करके कालीधर रिज पर अपने पैर जमा सके।

30 सितम्बर, 1965 को मल्ला ठिकाने पर आक्रमक कार्यवाई करने के लिए, मेजर पिल्ले को मद्रास रेजिमेंट की बटालियन से सम्बन्ध बैटरी का कमांडर नियुक्त किया गया। उनकी अचूक और तीव्र गोलाबारी ने मल्ला पर कब्जा करने में काफी योग दिया। यह उनकी सूझ-बूझ और साहस के कारण हुआ जिसका परिचय, उन्होंने शत्रु की भारी गोलाबारी के बावजूद, सभी लक्ष्यों पर विजय प्राप्त करके दिया।

पुन: 3-4 अक्टूबर, 1965 को मेजर पिल्ले ने एक महत्वपूर्ण पहाड़ी ठिकाने पर जो सिख लाईट इन्फेंट्री एवं महार बटालियन के अधिकार में था शत्रु द्वारा बार-बार किए जा रहे हमलों को तोपखाने से सही और समयोचित गोलीबारी कर विफल कर, प्रशंसनीय सूझ-बूझ का परिचय दिया।

शत्रु के विरुद्ध होने वाली सम्पूर्ण इन सामरिक कार्रवाइयों में मेजर कैनीमल थेवकाथिल मधुसूधणन पिल्ले ने साहस, नेतृत्व और असाधारण सूझ-बूझ का परिचय दिया जो भारतीय सेना की उच्चतम परम्परा के अनुकूल थी।

36 मेजर अंजापारवन्दा थिमैया गणपति (आई सी-12621), 6वीं बटालियन, सिख लाइट इन्फट्री।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—4 अक्तूबर, 1965)

मेजर अंजापारवन्दा थिमैया गणपति तारीख 4 अक्तूबर, 1965 को सिख लाइट इन्फैंट्री रेजीमेंट की बटालियन की एक कम्पनी की कमान कर रहे थे। इस बटालियन को कालीधर (जम्मू एवं कश्मीर) में एक ऐसे ठिकाने का सफाया करने का आदेश दिया गया, जिसे पाकिस्तानी सेना ने युद्ध-विराम का उल्लंघन करके दबा लिया था। खाइयों में स्थित और भारी तोपखाने, मार्टर और ब्राउनिंग मशीन-गन की गोलाबारी से लैस शत्रु के दृढ़ विरोध के सामने मेजर गणपति ने अपनी कम्पनी का नेतृत्व किया। भारी हताहतों के कारण यद्यपि उनकी कम्पनी की संख्या पचास प्रतिशत रह गई थी, फिर भी उनकी कम्पनी महत्वपूर्ण स्थितियों से शत्रु को हटाने में सफल रही और बटालियन को प्रारम्भिक लक्ष्य प्राप्त हुए। शत्रु द्वारा ब्राउनिंग मशीनगन और छोटे हथियारों की भारी गोलीबारी के बावजूद वह निर्भीकता से घूम-घूम कर अपने जवानों को लक्ष्य प्राप्ति के लिए प्रोत्साहित करते रहे।

इस कार्य में मेजर अंजापारवन्दा थिमैया गणपति ने उच्च-कोटि का साहस, सूझ-बूझ और कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया।

37 4443729 सिपाही धरम सिंह, 6वीं बटालियन, सिख लाइट इन्फैंट्री।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—4 अक्तूबर, 1965)

4 अक्तूबर, 1965 को सिख लाईट इन्फैंट्री रेजिमेंट को जिसमें सिपाही धरम सिंह कार्य कर रहे थे, जम्मू एवं कश्मीर में कालीधर के समीप एक ठिकाने पर जहां पाकिस्तानी सेना ने युद्ध-विराम की अवहेलना कर अधिकार कर लिया था, का सफाया करने को आदेश दिया गया। जब इसका सुरंग-क्षेत्र के कारण जिसकी सुरक्षा में शत्रु की मझोली मशीन-गन की गोली आग बरसा रही थी, आगे बढ़ना रुक गया तो सिपाही धरम सिंह ने अपनी सेवाएं अर्पित कीं और सुरंग-क्षेत्र पार कर अन्य जवानों का नेतृत्व किया। उनके वीरतापूर्ण कार्य ने जवानों को ठीक समय पर लक्ष्य प्राप्ति के लिए प्रेरित किया।

इसके बाद शत्रु के जवाबी हमले के दौरान उन्होंने शत्रु के उन दो सिपाहियों को मार डाला, जो उन पर बढ़े आ रहे थे। इस कार्यवाही में सिपाही धरम सिंह ने प्रशंसनीय साहस और कर्त्तव्य-निष्ठा का परिचय दिया।

38 मेजर प्रवाकर शान्ताराम देशपाण्डे (आई सी-3990), तोपखाना रेजिमेंट ।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—10 अक्तूबर 1965)

मेजर प्रवाकर शान्ताराम देशपांडे एक बटालियन की प्रत्यक्ष सहायता में बैटरी कमांडर थे । इस बटालियन को उन अतिक्रमणों का सफाया करने में लगाया गया था, जिन्हें पाकिस्तानी सेना ने बाड़मेर क्षेत्र में युद्ध विराम की अवहेलना करके ले लिया था । सामरिक महत्व की दूसरी कार्रवाई में हमारी बढ़ती हुई टुकड़ी पर शत्रु ने टैंकों, मशीन-गनों और मार्टर से भारी गोलीबारी की । मेजर देशपांडे ने अपनी प्रेषण चौकी से तुरन्त जवाबी कार्रवाई की और अपनी बैटरी से शत्रु सेना पर गोले बरसाने शुरू कर दिए । उनका मोर्चा बिल्कुल खुले में था, परन्तु अपनी निजी सुरक्षा की परवाह न करते हुए, उन्होंने शत्रु को उलझाए रखा ताकि वह सेना, जिसकी सहायता में लगे थे, सुरक्षित क्षेत्र में लौट सके । वह दो बार घायल हुए किन्तु अपने स्थान से हटने से इंकार कर दिया और दो घण्टे तक तोपखाने से गोले बरसाने के कार्य का संचालन करते रहे । बाद में मार्टर बम इन के समीप गिरा और वह बुरी तरह से जख्मी हो गए, तब उन्हें वहां से हटाना पड़ा । जिस साहस और कर्त्तव्यनिष्ठा का परिचय मेजर प्रवाकर शान्ताराम देशपांडे ने दिया वह न केवल इनकी अपनी यूनिट के लिए ही प्रेरणा-स्रोत था अपितु जिस इन्फैंट्री की साहयता कर रहे थे, उसके लिए भी प्रेरणादायक सिद्ध हुआ ।

मेजर प्रवाकर शांताराम देशपांडे का उच्च कोटि का साहस, कर्त्तव्यनिष्ठा और नेतृत्व भारतीय सेना की उच्चतम परम्परा के अनुकूल था ।

39 कैप्टेन संसार सिंह (आई सी-14605), 7वीं बटालियन, सिख रेजिमेंट ।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि 2—नवम्बर 1965)

2-3 नवम्बर, 1965 की रात्रि को सिख रेजिमेंट की एक बटालियन कोई, जिसका नेतृत्व कैप्टेन संसार सिंह कर रहे थे, मेंढर (जम्मू एवं कश्मीर) क्षेत्र में एक ऐसे पहाड़ी ठिकाने को सफाया करने का आदेश दिया गया, जिसे पाकिस्तानी सेना द्वारा युद्ध-विराम की अवहेलना करके दबा लिया गया था । शत्रु के कब्जे में मजबूत भूमिगत बंकर थे । शत्रु चौकियां बहुत से छोटे हथियारों, ब्राउनिंग मशीन-गनों, राकेट फेंकने वाली मशीनों, मार्टरों और तोपखाने से सुनियोजित गोलाबारी करने की स्थिति में था । इस ठिकाने के सभी रास्ते व्यापक सुरंगों और कंटीले तारों के घेरे से होकर जाते थे । लक्ष्य पर पहुंचने के लिए बिल्कुल खड़ी चट्टान पर चढ़कर जाना पड़ता था । लक्ष्य पर पहुंचने की कठिन राह शत्रु की किलाबन्दी की स्थिति और प्रबल विरोध के बावजूद कैप्टेन संसार सिंह ने ठिकाने पर धावा करने तथा शत्रु की सेना पर आक्रमण करने के लिए अपनी कम्पनी का नेतृत्व किया और अपने जवानों को इसके लिए प्रोत्साहित करते रहे । कैप्टेन संसार सिंह ने इस लक्ष्य की प्राप्ति में अपने प्राणों की तनिक भी परवाह न की और प्रेरणादायक नेतृत्व एवं महान साहस का परिचय दिया ।

40 जे सी-18170 सूबेदार पियारा सिंह, 5वीं बटालियन, सिख लाइट इन्फैंट्री ।

(मरणोपरान्त)

पुरस्कार की प्रभावी तिथि—2 नवम्बर 1965

सूबेदार पियारा सिंह 2-3 नवम्बर, 1965 की रात्रि को सिख लाइट इन्फैंट्री रेजिमेंट की एक बटालियन की कमान कर रहे थे । इस बटालियन को जम्मू एवं कश्मीर में मेंढर क्षेत्र के एक ऐसे ठिकाने का सफाया करने का आदेश दिया गया, जिसे पाकिस्तानी सेना ने युद्ध-विराम की अवहेलना कर के दबा लिया था । उनके लक्ष्य वे बंकर थे, जो बटालियन के अंतिम लक्ष्य प्राप्ति के मार्ग में बाधक बने हुए थे । यह मार्ग सुरंग क्षेत्र और कंटीले तारों से होकर जाता था । उन्होंने सुरंग क्षेत्र से होकर हमला किया, परिणाम-स्वरूप सुरंगों और तोपों की गोलाबारी से उनके 25 जवान शहीद हुए । इस हानि और अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा की परवाह किए बिना उन्होंने शत्रु के उस बंकर पर किए धावे का नेतृत्व किया, जहां से एक हल्की मशीनगन दूसरी प्लाटून पर सीधी गोलाबारी कर रही थी । इस हल्की मशीनगन को शान्त करने के बाद वे दूसरे बंकर की ओर गए, जहां से एक 83 मिलीमीटर का राकेट लांचर गोलाबारी कर रहा था और बढ़ाव को रोके रहा था । जैसे ही उन्होंने बंकर के अन्दर एक हथगोला फैंका, 83 मिलीमीटर के राकेट से उनकी दोनों टांगें उड़ गयीं किन्तु जो हथगोला उन्होंने फैंका उस से बंकर के लोग मारे गए । कुछ क्षण बाद वह स्वयं भी वीरगति को प्राप्त हुए, पर यह तभी हुआ जब कि उन्होंने लक्ष्य पर कब्जा कर लिया और अपने बचे हुए कुछ जवानों को अगली कार्रवाई करने के लिए निर्देश दे दिया ।

इस कार्यवाही में सूबेदार पियारा सिंह ने नेतृत्व, अदम्य साहस एवं महान बलिदान का परिचय दिया जो भारतीय सेना की उत्कृष्ट परम्परा के अनुकूल था ।

सं० 16-प्रेज/66—राष्ट्रपति, निम्नांकित व्यक्तियों द्वारा प्रदर्शित असाधारण विशिष्ट सेवाओं के उपलक्ष्य में उनको विशिष्ट सेवा मेडल "द्वितीय श्रेणी" प्रदान करने का अनुमोदन करते हैं:—

1. ब्रिगेडियर श्री निवास पुंज (आई सी-2096), इंजीनियर्स ।
2. लेफ्टिनेन्ट कर्नल भमिराव वेन्कटराव शिवाने (आई सी-3813), इंजीनियर्स ।
3. विंग कमाण्डर कृष्ण डंडपानी (3583), जनरल ड्यूटीज (पायलट) ।
4. स्क्वाड्रन लीडर बावा पृतपाल सिंह (4051), टेक्नीकल सिगनल्ज-1 ।
5. स्क्वाड्रन लीडर लखमीर सिंह (4941), टेक्नीकल सिगनल्ज ।

सं० 17-प्रेज/66—राष्ट्रपति, निम्नांकित व्यक्तियों द्वारा, प्रदर्शित उच्च कोटि की विशेष सेवाओं के उपलक्ष्य में उनको विशिष्ट सेवा मेडल "तृतीय श्रेणी" प्रदान करने का अनुमोदन करते हैं:—

1. फ्लाइंग अफसर वेद प्रकाश मेहता (6591), प्रशासनीय और विशेष ड्यूटीज ।
2. फ्लाइंग अफसर दारा फिरोज चिनाय (7199), जनरल ड्यूटीज (पायलट) ।
3. पायलट अफसर एलेक्स पुथीनवीडे मेम्मन (6800), टेक्नीकल इंजीनियरिंग ।
4. 12549 वारंट अफसर दोराई-स्वामी अय्यर रामाकृष्नन, इलेक्ट्रीशियन-1 ।
5. 25261 वारंट अफसर रेघवीर सिंह, फिट्टर-1 ।
6. 16653 वारंट अफसर भास्करण नायर, फिट्टर आर्मरर ।
7. 30541 वारंट अफसर गोपाल नीलकण्ठ जोशी, फिट्टर-1 ।
8. 36317 फ्लाइट सार्जेट दतला रामभाद्र वर्मा ।
9. 19172 फ्लाइट सार्जेट कने लाल मुकर्जी, फिट्टर आर्मरर ।
10. 39277 फ्लाइट सार्जेट अमोलक सिंह, फिट्टर आर्मरर ।
11. 44153 फ्लाइट सार्जेट नारायणन चन्द्रशेखरन, फिटर, आर्मरर ।
12. 25876 फ्लाइट सार्जेट प्रीतम सिंह मफैल, फिट्टर ।
13. 203441 सार्जेट पूरन सिंह, एफ-2-ए ।
14. 37779 सार्जेट ब्रह्मी गोविन्दराम, एफ-2-ड ।
15. 400206 सार्जेट दिलीप कुमार मुकर्जी, एफ-2-इ।
16. 204006 फ्लाइट सार्जेट सीतारामन आयास्वामी, एफ-2-ए ।
17. 222454 कार्पोरल कनरीकन कुरियां फिलिप, इलेक्ट्रीशियन-1 ।

18. 218570 कार्पोरल मदई पुरहियापुरायल जयराम, एफ-2-इ ।

19. 401264 कार्पोरल ब्रह्मनपल्ली केसरी राव, एफ-2-ए ।

20. 401332 लीडिंग एयरक्राफ्टसमैन एंजुनेयूलू मल्लीकरं-जुना, एफ-2-इ ।

21. 216853 लीडिंग एयरक्राफ्टसमैन थानूवन गोपीनाथन, राडार मकैनिक ।

22. 256725 एयरक्राफ्टसमैन सिकन्दर गुलाब कुलकर्णी, राडार आपरेटर ।

23. 9310745 सिपाही प्रीतम सिंह, डिफेन्स सिक्योर्टी कोर ।

वाई० डी० गण्डेविया, राष्ट्रपति के सचिव

योजना आयोग

पिछड़े वर्गों के कल्याण से सम्बन्धित पैनल

नई दिल्ली, दिनांक 31 जनवरी 1966

सं० स० क०/17(15)/64—संकल्प संख्या स० क०/17(15)/64 दिनांक 5 मार्च 1965, एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि पिछड़े वर्गों के कल्याण से सम्बन्धित पैनल के सदस्यों की सूची में श्री के० एल० बालमीकि, संसद् सदस्य का नाम जोड़ दिया जाये।

2. संकल्प की अन्य विषयवस्तु में कोई परिवर्तन नहीं होगा ।

आदेश

आदेश दिया जाता है कि इस अधिसूचना की एक प्रति सम्बन्धित व्यक्तियों को भेज दी जाय ।

यह भी आदेश दिया जाता है कि इस अधिसूचना को सर्वसाधारण की सूचना के लिए भारत सरकार के राजपत्र में प्रकाशित किया जाये ।

जी० आर० कामत, सचिव

वाणिज्य मंत्रालय

नई दिल्ली, दिनांक 22 जनवरी 1966

संकल्प

सं० 35(2)-काम(जन) (एफ०एम०सी०)/65—वायदा बाजार आयोग, बम्बई के कार्यचालन का पुनरीक्षण करने के लिए एक समिति बनाने के प्रश्न पर भारत सरकार पिछले कुछ दिनों से विचार कर रही थी । अतः भारत सरकार ने यह पुनरीक्षण कर के सरकार को इस विषय पर अपनी सिफारिशें दे देने के लिए नीचे लिखे व्यक्तियों की एक समिति बनाने का निश्चय किया है:—

1. प्रो० एम० एल० दांतवाला, — अध्यक्ष
अध्यक्ष,
कृषि, सम्बन्धी मूल्य आयोग,
कृषि विभाग,
खाद्य तथा कृषि मन्त्रालय ।

2. श्री ए० एस० नाइक, आई०सी०एस०, — सदस्य
अध्यक्ष,
वायदा बाजार आयोग
बम्बई ।

3. कृषि विपणन सलाहकार, — सदस्य
भारत सरकार,
नागपुर ।

4. श्री आर० महादेवन, — सदस्य
वित्त उप-सलाहकार,
वित्त मन्त्रालय ।

2. वाणिज्य मन्त्रालय के संयुक्त सचिव श्री पी० के० जे० मेनन सदस्य सचिव का काम करेंगे ।

3. समिति के विचारणीय विषय ये होंगे:—

(क) गत 10 वर्षों में वायदा बजार आयोग ने जिस प्रकार कार्य चलाया है उसका पुनरीक्षण करना जिससे यह ज्ञात किया जा सके कि आयोग उन उद्देश्यों को किस सीमा तक अमल में ला सका है जोकि संविधि के उद्देश्यों तथा कारणों सम्बन्धी विवरण में दिये गये हैं ।

(ख) देश की बदली हुई आर्थिक अवस्थाओं के प्रकाश में उस कार्य का आकलन करना जो वायदा बाजार भविष्य में कर सकते हैं ।

(ग) सुधार करने के उद्देश्य से वर्तमान अधिनियम में संशोधनों के सुझाव देना ।

(घ) यह विचार करके सुझाव देना कि वायदा बाजार आयोग को अन्य क्या कार्य सौंपे जा सकते हैं ।

4. समिति की बैठकें नई दिल्ली अथवा देश के अन्य महत्वपूर्ण व्यापार केन्द्रों में हो सकती हैं ।

5. समिति 6 महीने के अन्दर अपना प्रतिवेदन सरकार को दे देगी ।

एम० एल० गुप्त, अवर सचिव

नई दिल्ली, दिनांक 22 जनवरी 1966

स० 12/3/66-ई० प्रापर०—भारत रक्षा नियम, 1962 के नियम 133-वी के उप-नियम (1) के द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करती हुई केन्द्रीय सरकार सहर्ष यह निदेश देती है कि मे० मोहम्मददीन (इंडिया) प्रा० लि० 29, कोलूटोला स्ट्रीट, कलकत्ता की भारत में समस्त चल तथा अचल सम्पत्ति, जो कि उनकी है, उनके पास है या जिसका प्रबन्ध उनकी ओर से किया जाता है, भारत शत्रु परिरक्षक के पास चली जायेगी ।

पी० के० जे० मेनन, संयुक्त सचिव

नई दिल्ली, दिनांक 3 फरवरी 1966

संशोधन

सं० 26 (1)-टैरि०/63—भारत सरकार के संकल्प सं० 26(1)-टैरि०/63 दिनांक 22 जनवरी 1966, जोकि भारत के राजपत्र में प्रकाशित हो चुका है, के अनुसार टैरिफ आयोग बम्बई के कार्य-चालन का पुनरीक्षण करने के लिये बनायी गई जांच समिति में नीचे लिखे व्यक्ति भी सदस्य के रूप में शामिल कर लिए गए हैं :—

(1) डा० डी० टी० लकड़ावाला, — सदस्य
अर्थ विभाग,
बम्बई विश्वविद्यालय,
बम्बई ।

(2) डा० के० एस० कृष्णस्वामी, — सदस्य
आर्थिक सलाहकार,
योजना आयोग
नई दिल्ली ।

आदेश

आदेश दिया जाता है कि यह संशोधन सर्वसाधारण की सूचना के लिये भारत के राजपत्र में प्रकाशित कर दिया जाय और इसकी एक-एक प्रति समस्त सम्बद्धों को भेज दी जाए ।

एम० बनर्जी, उप-सचिव

उद्योग मंत्रालय

नई दिल्ली, दिनांक 2 फरवरी 1966

संकल्प

सं० 6-4/65 सीमेंट-1—एस्बेस्टस सीमेंट उत्पाद उद्योग के विकास से संबंधित विभिन्न मामलों की जांच करने, उनका निरन्तर पुर्नविलोकन करते रहने तथा सरकार से उपयुक्त सिफारिशें करने की दृष्टि से भारत सरकार ने तकनीकी विकास का महानिदेशालय, नई दिल्ली के औद्योगिक सलाहकार, डा० एस० पी० वर्मा की अध्यक्षता में एक नामिका गठित करने का निश्चय किया है।

नामिका अन्य बातों के साथ निम्नलिखित पर भी विचार करेगी :—

(क) उद्योग के लिये कच्चे माल की उपलब्धता विशेषकर एस्बेस्टस रेशा ;

(ख) आयात किये गये रेशे के स्थान पर पूर्णतया अथवा आंशिक रूप से देशी रेशे का प्रयोग किया जाना तथा रेशे के आयात बिल में पर्याप्त कमी करने के लिये आवश्यक उपाय करना;

(ग) जहां कहीं आवश्यक हो, उद्योग के लिये पूंजीगत मशीनों की आवश्यकता, देश में उनकी उपलब्धता तथा मशीनों का आयात करना, जिससे विदेशों में विकसित नई प्रविधियों से आत्मसात किया जा सके और जिसके फलस्वरूप देशी रेशे का अधिकाधिक उपयोग किया जा सके;

(घ) एस्बेस्टस सीमेंट उत्पादों की विशेष किस्मों के निर्माण के लिये उत्पादन में विविधता लाना विशेषकर वे किस्में जिनका अभी देश में निर्माण नहीं किया गया है ;

(ङ) उद्योग के लिये प्रशिक्षण कार्यक्रम तथा गवेषणा और विकास करना; तथा

(च) एस्बेस्टस सीमेंट उत्पादों (उदाहरण के लिये एस्फाल्टिक रूफिंग शीट्स) के स्थान पर सम्भावित अन्य वस्तुओं तथा अन्य उत्पादों (उदाहरण के लिये जी० आई० शीट्स) के स्थान पर एस्बेस्टस सीमेंट के उत्पादों का भी इस्तेमाल किया जाना ।

नामिका के कर्मचारी वर्ग निम्नलिखित हैं:—

अध्यक्ष

1. डा० एस० पी० वर्मा, औद्योगिक सलाहकार, तकनीकी विकास का महानिदेशालय, नई दिल्ली।

सदस्य

1. श्री एच० डी० एस० हार्डी,
   प्रबन्ध निदेशक, एस्बेस्टस सीमेंट लि०, मुलुन्द, बम्बई तथा प्रबन्ध निदेशक, हिन्दुस्तान फेरेडो लि।
2. श्री बी० कजरीवाल,
   प्रबन्ध निदेशक, हैदराबाद एस्बेस्टस सीमेंट प्राडक्ट्स लि०, 128/48, माल्चा मार्ग, चाणक्यपुरी, नई दिल्ली—11।
3. श्री वी० एन० सोमानी,
   श्री दिग्विजय सीमेंट कं० लि०, दून हाउस, अहमदाबाद।
4. श्री एम० सी० बसु,
   खनिज अर्थशास्त्री, भारतीय खान ब्यूरो, नागपुर।
5. श्री एस० मल्होत्रा,
   विशेष कार्य अधिकारी पूर्ति और निपटान का महानिदेशालय, नई दिल्ली।
6. श्री एस० एन० सचदेव,
   संयुक्त निदेशक, ट्रैफिक (ट्रान्स्पोर्टेशन-1), रेलवे बोर्ड, नई दिल्ली ।

सदस्य-सचिव

1. श्री एन० बिस्वास, विकास अधिकारी, (एस्बेस्टस उत्पाद), तकनीकी विकास का महा निदेशालय, नई दिल्ली ।

आदेश

आदेश दिया गया कि संकल्प की एक-एक प्रति सभी संबंधित व्यक्तियों के पास भेज दी जाये तथा सर्वसाधारण की जानकारी के लिये इसे भारत के राजपत्र में भी प्रकाशित कराया जाये।

आर० नटराजन, अवर सचिव

खाद्य कृषि सामुदायिक विकास और सहकारिता

(कृषि विभाग)

नई दिल्ली, दिनांक 28 जनवरी 1966

सं० 7-2/66-एल० डी०—केन्द्रीय गोसंवर्धन परिषद् के नियम तथा विनियमों के नियम V(2) के अनुसरण में केन्द्रीय सरकार श्री शाहनवाज खां के स्थान पर श्री पी० गोविन्दा मेनन, मंत्री, खाद्य, कृषि, सामुदायिक विकास और सहकारिता मन्त्रालय को परिषद् का उप प्रधान नामजद करती है।

के० सी० सरकार, अवर सचिव

नई दिल्ली, दिनांक 31 जनवरी 1966

प्रस्ताव

सं० 6-5/64 अर्थ नीति—भारत सरकार ने निश्चय किया है कि भारत सरकार के खाद्य और कृषि मंत्रालय (कृषि विभाग) के प्रस्ताव संख्या 6–5/64-सी (ई), दिनांक 25 सितम्बर, 1964 द्वारा निर्मित और अधिसूचना संख्या 6–5/64 अर्थनीति, दिनांक 30 अप्रैल 1965 और प्रस्ताव संख्या 6-5/64-अर्थनीति, दिनांक 29 नवम्बर 1965 द्वारा संशोधित, अर्थ-शास्त्रियों की नामिका में डा० जे० पी० भट्टाचार्जी जिन्होंने खाद्य एवं कृषि संगठन में नियुक्त होने पर नामिका से त्याग पत्र दे दिया है, के स्थान पर डा० पी० के० मुखर्जी, निदेशक, कार्यक्रम मूल्यांकन संगठन, योजना आयोग, नई दिल्ली, को नियुक्त किया जाये।

भारत सरकार ने यह भी निश्चय किया है कि श्री जे० एस० शर्मा, अर्थ अंक सलाहकार, खाद्य और कृषि मंत्रालय, नयी दिल्ली, को अर्थ शास्त्रियों की नामिका में शामिल किया जाय ।

आदेश

आदेश दिया जाता है कि यह प्रस्ताव समस्त सम्बन्धितों को भेजा जाये।

यह भी आदेश दिया जाता है कि यह प्रस्ताव जन-साधारण की जानकारी के लिये भारत सरकार के राज-पत्र में प्रकाशित किया जाये।

संकल्प

सं० 6-20/65-जेनरल-2—भारत सरकार ने निश्चय किया है कि इस मन्त्रालय द्वारा प्रकाशित दिनांक 17 अगस्त 1964 के प्रस्ताव संख्या 6-32/64 सी (जी) के अन्तर्गत निम्नलिखित व्यक्तियों को भी कृषि वैज्ञानिकों के पैनेल में सम्मिलित कर लिया जाये :—

1. प्रोफेसर ए० अब्राहम,
   वनस्पति विभाग के अध्यक्ष और डीन
   विज्ञान विभाग, केरल विश्वविद्यालय,
   त्रिवेन्द्रम (केरल) ।
2. डा० के० रामनकृष्णन,
   एसोसियेट डीन,
   कृषि कालेज और अनुसन्धान संस्था,
   कोयम्बेतोर।
3. डा० डी० सुन्दरेसन,
   पशु आनुवंशिकिविज्ञ,
   पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना

आदेश

आदेश दिया जाता है कि इस प्रस्ताव की एक प्रतिलिपि भारत सरकार के समस्त मन्त्रालयों और विभागों; समस्त राज्य सरकारों तथा केन्द्र शासित प्रदेशों, योजना आयोग, मन्त्रिमंडल सचिवालय, प्रधान मन्त्री सचिवालय, भारत के नियन्त्रक तथा महालेखा परीक्षक,

राष्ट्रपति सचिवालय, लोक सभा सचिवालय, राज्य सभा सचिवालय, संसद पुस्तकालय (5 प्रतियां), कृषि वैज्ञानिकों के पैनल के समस्त सदस्यों, समस्त राज्यों और संघ क्षेत्रों के कृषि और पशुपालन निदेशकों, खाद्य और कृषि मन्त्रालय (कृषि विभाग) के अन्तर्गत समस्त सम्बद्ध और अधीनस्थ कार्यालयों को भेजी जाये।

यह भी आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प को सर्व-साधारण की जानकारी के लिए भारत सरकार के राजपत्र में प्रकाशित किया जाये।

बी० सिवारमन, सचिव

(खाद्य विभाग)

नई दिल्ली, दिनांक 15 जनवरी 1966

संकल्प

सं० XVII (ix)-Fy (T)/66 भारत सरकार इस मन्त्रालय और राज्य मात्स्यकी विभागों की 'आपरेशनल' आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए मात्स्यकी आंकड़ों के विभिन्न पहलुओं पर कार्यवाही करने हेतु, एक समिति स्थापित करने की आवश्यकता पर कुछ समय से विचार कर रही थी। यह निर्णय किया गया है कि खाद्य विभाग में निम्न प्रकार से मात्स्यकी आंकड़ों की एक स्थायी तकनीकी समिति गठित की जाए :—

1. मात्स्यकी विकास सलाहकार	अध्यक्ष
2. अर्थ तथा अंक सलाहकार, खाद्य तथा कृषि मन्त्रालय	सदस्य
3. सांख्यिकी सलाहकार, कृषि सांख्यिकी अनुसन्धान संस्थान	,,
4. केन्द्रीय सांख्यिकी संगठन, सांख्यिकी विभाग, मंत्रिमण्डल सचिवालय का प्रतिनिधि	,,
5. राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण, सांख्यिकी विभाग, मन्त्रिमण्डल सचिवालय का प्रतिनिधि	,,
6. योजना आयोग के कृषि प्रभाग का प्रतिनिधि	,,
7. खाद्य विभाग में मात्स्यकी आंकड़ों का कार्यभारी सांख्यिकीविद	संयोजक

समिति खाद्य विभाग को अपने सामान्य प्रशासनिक उद्देश्यों के लिए अपेक्षित 'आपरेशनल' मात्स्यकी आंकड़ों के एकत्रीकरण, सारणीकरण और विश्लेषण करने के लिए आधार, परिभाषा, वर्गीकरण और रीति विधान से सम्बन्धित समस्याओं के बारे में परामर्श देगी। समिति खाद्य विभाग में स्थापित किए जा रहे सांख्यिकी सैल और राज्य मात्स्यकी विभाग में सांख्यिकी सैल को मात्स्यकी आंकड़ों के विकास के लिए उनके कार्यक्रमों के बारे में आवश्यक मार्गदर्शन भी सुलभ करेगी। जब कभी आवश्यक समझा जाएगा तब समिति की बैठक होगी।

आदेश

आदेश दिया जाता है कि यह संकल्प सभी राज्य सरकारों, भारत सरकार के सभी मन्त्रालयों और विभागों, मन्त्रिमण्डल सचिलवालय, प्रधान मन्त्री सचिवालय, भारतीय व्यापार आयुक्त सभी भारतीय दूतावास, लंदन में भारत के उच्च आयुक्त, महा-निदेशक, वाणिज्य आसूचना तथा सांख्यिकी, कलकत्ता, पाकिस्तान में भारत के उच्च आयुक्त, भारत में सभी विश्वविद्यालयों को भेजा जाए।

यह भी आदेश दिया जाता है कि यह संकल्प भारत के राजपत्र में प्रकाशित किया जाए।

गोडविन रोज़, संयुक्त सचिव

शिक्षा मंत्रालय

नई दिल्ली, दिनांक 3 फरवरी 1966

सं० एफ० 2-6/63-पी० ई० 2—शिक्षा मंत्रालय की 18 सितम्बर, 1965 की समसंख्यक अधिसूचना के क्रम में रेल खेल नियंत्रण बोर्ड के अध्यक्ष श्री जी० पी भल्ला को राष्ट्रीय खेल संस्थान, पटियाला के गवर्नर्स बोर्ड में, सेवानिवृत्त श्री हरदयाल सिंह के स्थान पर 24 जुलाई 1966 तक नामजद किया जाता है।

रोशन लाल आनन्द, अवर सचिव

सिंचाई व बिजली मंत्रालय

नई दिल्ली, दिनांक 22 दिसम्बर 1965

संकल्प

सं० वि० का० अनु० 5-516 (4)/64—परिवहन मंत्रालय (सड़क स्कन्ध) के अधीन राष्ट्रीय सड़कों पर बाढ़ नियन्त्रण के दृष्टिकोण से पुलों के लिये पर्याप्त जलमार्ग बनाने के प्रश्न पर तथा उस के व्यय के उत्तरदायित्व पर सरकार कुछ काल पूर्व से विचार कर रही है। यह आम तौर पर मान लिया गया है कि यदि प्राकृतिक कारणों से अतिरिक्त जल मार्ग की आवश्यकता हो जाती है तो उन जल मार्गों को चौड़ा करने के लिये परिवहन मंत्रालय (सड़क स्कन्ध) धन लगायेगा, किन्तु यदि ऐसा राज्य सरकार के द्वारा हाथ में लिये गये किन्हीं निर्माण कार्यों के कारण करना पड़ता है तो इस कारण हुए व्यय को राज्य सरकार अपने ऊपर लेगी। कभी-कभी कुछ ऐसे भी मामले उपस्थित हो सकते हैं जहां पर राज्य सरकार और परिवहन मंत्रालय (सड़क स्कन्ध) में इस बात में मतभेद हो जाए कि किन कारणों से जल मार्गों को चौड़ा करने की आवश्यकता पड़ी है और इस पर कौन प्राधिकार धन लगायेगा। ऐसे विवादों को हल करने के लिये एक स्थाई समिति स्थापित करने का निर्णय किया गया है।

2. समिति में निम्नलिखित होंगे :—

(1) अध्यक्ष, केन्द्रीय जल तथा विद्युत आयोग	अध्यक्ष
(2) अतिरिक्त सलाहकार इंजीनियर (पुल), परिवहन मंत्रालय (सड़क स्कन्ध)	सदस्य
(3) बाढ़ नियन्त्रण की कार्यभारी राज्य सरकार का मुख्य इंजीनियर	सदस्य
(4) केन्द्रीय जल तथा विद्युत आयोग का प्रतिनिधि	सदस्यसचिव

3. स्थाई समिति के विचारार्थ विषय निम्नलिखित होंगे —

समिति उन मामलों को अपने हाथ में लेगी जिन में राज्य सरकार और परिवहन मंत्रालय (सड़क स्कन्ध) में इस बात पर मतभेद होगा कि राष्ट्रीय सड़कों पर और अधिक पुलों के निर्माण (नामशः वर्तमान पुलों में परिवर्तन करना अथवा नये पुलों का निर्माण करना) के कौन से कारण हैं। समिति ब्यौरे की जांच करके प्रत्येक पुल के मामले में यह फैसला करेगी कि पुल के आवर्द्धन का कारण केवल एक ही है अथवा निम्नलिखित कारणों का समूह।

(क) प्राकृतिक कारण जैसे कि वर्षापात में वृद्धि सरिताओं के रास्तों में—प्राकृतिक परिवर्तन, आदि

(ख) वाह क्षेत्र से जल प्रवाह के वितरण की पद्धति में परिवर्तन जिस के परिणामस्वरूप राज्य सरकारों द्वारा हाथ में लिये गये बाढ़ नियन्त्रण, निस्सार सिंचाई तथा सड़क स्कीमों तथा और अन्य निर्माण कार्यों के कारण सम्बद्ध राष्ट्रीय सड़क पुल (पुलों) में से होने वाला जल निस्सार अधिकतम हो जाए;

(ग) निर्माण समय पर पुल की आरम्भिक अपर्याप्तता; और

(घ) कोई अन्य कारण।

यदि आवर्धित प्रबन्ध की आवश्यकता उपर्युक्त एक से अधिक कारण के परिणामस्वरूप होती है तो समिति इस बात पर भी विचार करेगी कि इन कारणों में से प्रत्येक कारण के परिणामस्वरूप जल मार्ग में कितनी-कितनी अधिकता की आवश्यकता पड़ी है।

4. जब कभी भी राज्य सरकार और परिवहन मंत्रालय (सड़क स्कन्ध) के बीच मतभेद पैदा हो जाए तो सम्बन्धित राज्य मुख्य इंजीनियर अथवा परिवहन मंत्रालय (सड़क स्कन्ध) राज्य के अथवा परिवहन मंत्रालय के मामले पर केन्द्रीय जल तथा विद्युत आयोग के अध्यक्ष को एक ज्ञापन प्रस्तुत करेगा, जिसकी एक प्रति परिवहन मंत्रालय (सड़क स्कन्ध) अथवा सम्बन्ध राज्य सरकार को दी जाएगी। केन्द्रीय जल तथा विद्युत आयोग के अध्यक्ष तब इस मामले पर विचार करने के लिये एक बैठक रखेंगे। समिति का निर्णय परिवहन मंत्रालय (सड़क स्कन्ध) और राज्य सरकार दोनों को ही मानना पड़ेगा।

आदेश

आदेश दिया जाता है कि यह संकल्प सभी राज्य सरकारों, परिवहन मंत्रालय (सड़क स्कन्ध), प्रधान मंत्री के सचिवालय, राष्ट्रपति के निजी तथा सैनिक सचिवों, संसद कार्य विभाग, राज्य/लोक सभा सचिवालय, योजना आयोग और भारत के नियन्त्रक तथा महालेखा, परीक्षक को प्रेषित कर दिया जाये।

यह भी आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प को भारत के राजपत्र में प्रकाशित कर दिया जाए और कि राज्य सरकारों से प्रार्थना की जाए कि वे साधारण सूचना के लिये इसे राज्यों के राजपत्रों में प्रकाशित कर दें।

पी. आर० अहूजा, संयुक्त सचिव

PRESIDENT'S SECRETARIAT

New Delhi, the 1st January 1966

No. 9-Pres./66.—The President is pleased to approve the award of the MAHA VIR CHAKRA for acts of gallantry in the recent operations against Pakistan to :—

1. Brigadier ZORAWAR CHAND BAKSHI (IC-1510), Vr. C.,

5th Bn., The Gorkha Rifles.

(*Effective date of award—5th August* 1965)

Brigadier Zorawar Chand Bakshi was Commander of a Brigade which operated from the Tanmarg and Pattan area in Jammu and Kashmir and later in the area of the Uri-Poonch bulge, from 5th August 1965 till the ceasefire on 23rd September 1965.

Brigadier Bakshi was given the difficult task of capturing Basali, Haji Pir Pass and Kahuta. Haji Pir is at a height of nearly 9000 feet and its capture was vital for the Uri-Poonch link-up. The road connecting Uri and Poonch *via* Haji Pir, had deteriorated due to disuse and at some places it had disintegrated. There was no direct route for an approach to Haji Pir except over the mountain ranges of Sank and Ledwali Gali on the west and Badori, Kuthnardi Gali and Kiran feature on the east. From Silikot where his Brigade Headquarters was based, Haji Pir was at a distance of fourteen miles with strongly defended enemy positions forward of it and flanking it.

All along the route, Brigadier Bakshi remained foremost. As soon as an objective was captured, he was there personally, to guide and help in the reorganisation. Many a time, though enemy shelling was intense and continuous, he remained in the forefront without caring for his personal convenience or safety. After the capture of Haji Pir, he moved forward his tactical Headquarter immediately, though he knew that the enemy would most certainly counter-attack it viciously.

Throughout this operation, Brigadier Zorawar Chand Bakshi displayed a high standard of planning and tactical skill, combined with outstanding leadership, determination and camaraderie in sharing the hardships of his troops, which are in the highest traditions of the Indian Army.

2. Lieutenant Colonel ARUNKUMAR SHRIDHAR VAIDYA (IC-1701),

The Deccan Horse (9th Horse).

(*Effective date of award—6th September* 1965)

Lieutenant Colonel Arunkumar Shridhar Vaidya was in command of Deccan Horse in the series of actions fought by his unit from the 6th to the 11th September 1965 in Asal Uttar and Cheema (Punjab) in the recent operations against Pakistan.

In the battle he showed inspiring leadership and remarkable resourcefulness in organising his unit and fighting against heavy odds and inflicted severe casualties on the Patton tanks of the enemy.

With untiring effort he moved from sector to sector with complete disregard to his personal safety, thereby inspiring his troops by his personal example. He was instrumental to a large extent in stemming-thrusts by enemy armour in the battle of Asal Uttar and later at Cheema and delivered effective blows to the enemy tanks on the 10th—11th September 1965.

3. Lieutenant Colonel RAGHUBIR SINGH (IC-6596), 18th Bn.,

The Rajputana Rifles.

(*Effective date of award—7th September* 1965)

Lieutenant Colonel Raghubir Singh was commanding a battalion of the Rajputana Rifles Regiment during the battle of Asal Uttar. The unit was occuping the left forward position of a Brigade defended sector. During the period from the 7th to the 10th September 1965, the unit was attacked twice by day and twice at night by Pakistani forces in overwhelming strength, supported by armour and intense artillery fire.

On 9th September at 2100 hours, in moonlight, the enemy forces launched a ferocious attack with tanks and managed to overrun the forward Company positions. The situation became grave and communications with these Companies were disrupted. Lieutenant Colonel Raghubir Singh, anticipating the enemy's tank assault, left his Command post and regardless of personal safety, moved up to those Companies past three enemy tanks. He entered the positions under intense enemy artillery fire and established contact with the Company Commanders. This example of courage, determination and leadership on the part of the Commanding Officer inspired the men to defy the enemy tanks and under his command they destroyed twenty enemy tanks.

4. Brigadier THOMAS KRISHNAN THEOGARAJ (IC-4321),

The Armoured Corps.

(*Effective date of award—8th September* 1965)

On the 8th September 1965, the Pakistani troops commenced a major thrust in the Khem Karan area. Using Patton Tanks, the enemy attempted encirclement of our troops with the intention of a subsequent deep armoured penetration into our territory. The Armoured Brigade under the command of Brigadier Thomas Krishnan Theogaraj was immediately sent to the area to halt the enemy's advance.

Brigadier Theogaraj effectively deployed his tanks to face the enemy and steadily held his ground against determined enemy attacks. At the end of the battle, over 40 enemy Patton and Chaffe tanks had been destroyed or captured intact and two of the enemy's Patton Regiments were nearly wiped out. The enemy was forced to withdraw with heavy losses and never again attempted to use of tanks in a major thrust against our defences in this sector.

It was due to Brigadier Theogaraj's courage, leadership and determination, that this decisive victory against the enemy's armour was possible.

5. 3940154 Lance Havildar NAUBAT RAM, 6th Bn.,

The Dogra Regiment.

(*Effective date of award—8th September* 1965)

On the night of 8th/9th September 1965, Lance Havildar Naubat Ram was Commander of the leading platoon of a Company which had been given the task of capturing a hill feature a few miles South East of Haji Pir Pass in Jammu and Kashmir. While the leading Company was still in the forming-up position, the enemy brought down very heavy mortar fire on our attacking troops. Lance Havildar Naubat Ram was hit by a splinter and was wounded in the arm. This injury, however, did not deter him from continuing to lead his platoon in the attack. He advanced with his platoon on the right flank of the enemy but soon came under accurate fire from an enemy light machine gun and was pinned down. At this juncture Lance Havildar Naubat Ram started crawling towards the rear of the enemy strong point. Moving within a few yards of the enemy light machine gun, he hurled a grenade into it and went with his bayonet. Thus, single-handed, he captured the enemy light machine gun and killed the two gunners. Meanwhile his platoon rushed the enemy post and captured it without suffering any more casualties.

Even thereafter, this non-Commissioned Officer refused to be evacuated as he knew that the capture of this hill feature was a preliminary to a bigger attack on the main enemy position at Gitian.

On the 20th September 1965, when the main attack on Gitian feature commenced, Lance Havildar Naubat Ram was with the leading platoon of the leading company. When his platoon was hardly a hundred yards short of its objective, the enemy brought down heavy automatic fire. Lance Havildar Naubat Ram was wounded, but disregarding his injuries, he continued to lead the assault until he gained a foothold on the enemy position. Two enemy machine guns were holding up the attack, but he silenced them by throwing grenades and also captured them. Once again, Lance Havildar Naubat Ram was hit by a machine gun burst. But undaunted, he refused to be evacuated and remained in command of his platoon and reorganised it to meet the enemy's counter-attack. The enemy counter-attacked and some enemy soldiers entered his forward section post. But Lance Havildar Naubat Ram went forward and threw grenades and foiled the enemy's attempt to gain any foothold. By his example of personal valour and leadership, Lance Havildar Naubat Ram inspired his platoon to such a pitch that every enemy counter-attack was beaten back with severe losses to the enemy.

During this operation, Lance Havildar Naubat Ram was wounded three times. Each time he refused to be evacuated and though profusely bleeding, he continued to command his platoon. He fell down unconscious only after the enemy forces had been driven away.

Throughout the operation, Lance Havildar Naubat Ram displayed courage, leadership and devotion to duty of a high order in the best traditions of the Indian Army.

6. Lieutenant Colonel MADAN MOHAN SINGH BAKSHI (IC-1697),

The Hodson's Horse (4 Horse).

(Effective date of award—11th September 1965)

On the 11th September 1965, Hodson's Horse commanded by Lieutenant Colonel Madan Mohan Singh Bakshi was assigned the task of protecting the left flank of an Armoured Brigade during the Brigade's attack on Phillora, as well as to intercept enemy's withdrawing armour astride the Gadgor—Phillora road. While the squadrons were in the process of moving up, Regimental Headquarters were reconnoitring a suitable position for the impending armoured Battle. Lieutenant Colonel Bakshi suddenly observed a squadron of enemy Patton tanks on hull down positions astride the libbe-Phillora road. Without the slightest hesitation, he engaged and knowcked out two enemy tanks. Soon after, the other tanks of the enemy squadron directed their guns on Lieutenant Colonel Bakshi's tank. Undeterred, Lieutenant Colonel Bakshi advanced again to charge through the enemy tanks, though he had by now received two direct hits on his tank. Despite these odds, he gallantry charged with his single tank, crossed the road and knocked out another enemy tank. By now his tank had been hit for the fourth time and had caught fire, whereupon he ordered the crew to bale out. While doing so Lieutenant Colonel Bakshi and his crew came under intense Machine Gun fire and were also surrouded by the crew of enemy tanks, who had baled out earlier from their burning tanks. Lieutenant Colonel Bakshi and his crew defied capture and took cover in an adjacent sugarcane field, from where they were retrieved by the advancing tanks of 17 Horse. Meanwhile, one Squadron of Hodson's Horse had advanced and engaged the enemy armour, thereby diverting the enemy's attention from their Commanding Officer. Thereafter Lieutenant Colonel Bakshi resumed command of the Regiment. His inspiring leadership made a material contribution to the capture of Phillora.

The exemplary courage, determination and leadership displayed by Lieutenant Colonel Madan Mohan Singh Bakshi in the face of overwhelming odds were in keeping with the highest traditions of the Indian Army.

7. Lieutenant Colonel PAGADALA KUPPUSWAMY NANDAGOPAL (IC-5499),

The Sikh Light Infantry.

(Effective date of award—28th September 1965)

On 28th September 1965, Lieutenant Colonel Pagadala Kuppuswamy Nandagopal, Officer Commanding a battalion of the Sikh Light Infantry Regiment, was ordered to take two important hill features as a preliminary to clearing a feature on Kalidhar in Jammu and Kashmir which Pakistani forces had, notwithstanding the ceasefire, encroached upon. With utter disregard for his safety, Lieutenant Colonel Nandagopal personnally led the assault and captured both the objectives. The enemy brought down heavy artillery fire and counter-attacked three times. Two of the counter-attacks were beaten off, but due to heavy casualties and pressure of the enemy, our troops had to fall back from one of the hill features. At this stage, with coolness and presence of mind, Lieutenant Colonel Nandagopal halted the enemy advances and stabilised the situation. On the night of 3rd/4th October 1965, Lieutenant Colonel Nandagopal's battalion was given the task of clearing the same objective and taking offensive measures with the help of a Mahar battalion. By 0630 hours on 4th October 1965, Lieutenant Colonel Nandagopal's battalion secured its objective in spite of heavy enemy opposition and shelling. The enemy had meanwhile repulsed the Mahar battalion and jeopardised our plans for the capture of the feature. The Sikh Light Infantry continued to advance up a very steep slope in the face of intensive enemy artillery fire and opposition by infantry. Despite casualties and strong opposition, the troops, guided and encouraged by Lieutenant Colonel Nandagopal, continued to press forward and successfully secured three other important features by 1800 hours the same day. The enemy staged three counter-attacks in heavy strength supported by artillery fire, but all were repulsed with heavy casualties to the enemy. On one occasion Lieutenant Colonel Nandagopal personally led the forward company and was involved in a desparate hand to hand fight with the enemy. He received two heavy blows with a hatchet on his head and face.

The battalion reorganised itself for the next assault despite heavy casualties and fatigue. The feature was finally cleared of the Pakistani intruders at 0630 hours on 5th October 1965.

In these actions, Lieutenant Colonel Pagadala Kuppuswamy Nandagopal displayed remarkable courage, leadership and determination. His bravery was source of inspiration to all his men and they responded in befitting manner.

8. Captain GAUTAM MUBAYI (IC-15689), 2nd Bn.,

The Dogra Regiment. *(Posthumous)*

(Effective date of award—2nd November 1965)

On the night of 2nd/3rd November 1965, a Company of a Dogra Regiment in which Captain Gautam Mubayi was commanding a platoon was ordered to take possession of a feature in Mendhar Sector, Jammu and Kashmir, which notwithstanding the ceasefire had been encroached upon by Pakistani forces, and formed a part of a very strong enemy defence complex. His objective consisted of a series of bunkers with a strong protective mine-field and wire obstacle around it and covered by well-coordinated automatic fire and supported by mortars and artillery. When the assault launched by the Company was held up by intensive enemy fire and heavy casualties due to the mine-fields. Captain Gautam Mubayi volunteered to break through with his platoon to establish a bridge-head. He crawled forward, cut the wire himself and led his platoon forward through the minefields. He was wounded severely in the leg by a mine but unmindful of his injury, he kept moving forward, encouraging his men. By this bold action, he established a bridge-head; capturing a portion of his objective with only a handful of his remaining men. An enemy light machine gun was firing from an enfilading position, as a result of which his men suffered further casualties. He rushed forward and threw a grenade to silence this bunker. He held on to his slender bridge-head in spite of heavy enemy fire and grenades and refused to be evacuated or even to take cover. He moved continuously from post to post exhorting his men to remain firm. This encouraged the company to push forward towards its objective. While urging his men forward he was mortally wounded by a burst from a Browning machine gun. Captain Gautam Mubayi showed indomitable courage and inspiring leadership and made the supreme sacrifice in the best traditions of the Indian Army.

9. 9025630 Naik DARSHAN SINGH, 5th Bn.,

The Sikh Light Infantry. *(Posthumous)*

(Effective date of award—2nd November 1965)

On the night of 2nd/3rd November 1965, Naik Darshan Singh was commanding the leading Section of a Company of the Sikh Light Infantry Regiment, which was ordered to clear a bunker where Pakistani forces, notwithstanding the ceasefire, had sited a Browning Machine Gun. His approach lay over a most difficult and steep terrain which was enextensively mined, wired and completely dominated by small arms fire. On being told by one of his men that they had encountered a minefield, he led his men in a charge on the enemy. His left leg was blown off by a mine. He not only refused to be evacuated but continued crawling forward and exhorting his men to carry on with the charge so that the rest of his platoon and the Company could make an assault after them. On coming to the wire obstacles, he crawled forward and cut the wire. In this process another mine exploded wounding him severely. Unmindful of his wounds, he dragged himself forward to an enemy bunker and threw a grenade into it. Encouraged by his action, the few remaining men of his section charged another bunker and silenced the enemy Browning Machine Gun. By this time his entire section had become casualties, but the men had paved the way for the success of their Company in the operations. Naik Darshan Singh died shouting to the follow-up echelon to come by the route which had been cleared of mines by the charge of his section. He made the supreme sacrifice of his life for the success of his Company and displayed courage and devotion to duty of the highest order in the finest traditions of the Indian Army.

No. 10-Pres./66.—The President is pleased to approve the award of the BAR to MAHAVIR CHAKRA for acts of gallantry in the recent operations against Pakistan to:—

Squadron Leader JAG MOHAN NATH (3946), M.V.C.,

General Duties (Pilot).

(Effective date of award—1st September 1965)

During the recent operations against Pakistan, Squadron Leader Jag Mohon Nath, commanding officer of a Canberra

unit, undertook several missions over enemy territory and obtained vital information about the enemy. The missions, which were all in the nature of reconnaissance, entailed flying long distances over enemy territory and well defended airfields and installations, unescorted and during the day. Although, Squadron Leader Nath was fully aware of the risks he was running on every one of the missions, he chose to undertake them himself instead of detailing his Squadron pilots, until he was ordered to let his colleagues do some of them.

The information he brought back from his missions was of such vital importance that but for it our attacks on the enemy airfields and installations could not have been as successful or devastating as they were. In fact his missions enabled the Air Force to deliver its attacks on targets, the destruction of which was certain to hinder the war effort of Pakistan.

Squadron Leader Jag Mohan Nath displayed courage, determination and sense of duty of a very high order.

No. 11-*Pres.*/66.—The President is pleased to approve the award of the ASHOKA CHAKRA, CLASS II, for acts of conspicuous gallantry to :—

1. Shri JAI LAL GUPTA,

Assistant Electrical Engineer, Poonch.

(*Effective date of award*—*30th October* 1963)

On the 25th October 1963, the Hydel Channel feeding the Poonch Power House, coming through Pakistan-occupied Kashmir, was damaged by the Pakistanis, with the result that the border town of Poonch went without electricity. On 30th October 1963, civilian labourers were engaged under the supervision of Shri J. L. Gupta, Assistant Electrical Engineer, Poonch, to construct an alternative channel on the Indian side of the ceasefire line, but they had to withdraw owing to constant firing by Pakistani forces. Unmindful of the grave risk to his life from the wanton firing by the Pakistanis Shri Gupta led his men once again, along with Shri Khem Raj who was in charge of the Hydel channel, Poonch, and Shri Ghulam Din, Sarpanch of Village Dallan, and got the alternative channel constructed. Shri Gupta withdrew from the place only after the work had been completed and all the labourers had been safely returned to the base. It was due to the conspicuous courage and devotion to duty displayed by Shri Jia Lal Gupta that the work was completed and electricity restored to the town within a very short time.

2. Shri TILAK RAJ KHANNA,

Loco Foreman, Northern Railway,

Ferozepore.

(*Effective date of award*—*8th September* 1965)

On the 8th September 1965, the Locomotive Shed at Ferozepore Cantonment was heavily bombed by Pakistani planes. As a result, the Locomotive stores and oil godowns caught fire and the track and other installations were damaged. Shri Tilak Raj Khanna, Loco Foreman, was injured, but undeterred by his injury he arranged to extinguish the fire and remove the inflamable oil and petrol, even though the enemy planes continued to hover over the area.

By his timely action, he was able to limit the extent of the fire and to save the entire Locomotive Shed from destruction. Notwithstanding his personal injury, he remained continuously on duty throughout the night and on the following day, and thus set a fine example to the staff under him.

3. Shri PARTAPA,

Driver, Northern Railway, Barmer.

(*Effective date of award*—*9th September* 1965)

On the 9th September 1965, while working as Driver of a special goods train carrying vital Military Stores, Shri Partapa was injured as a result of shelling by Pakistani forces near the outer signal of Gadra Road. Notwithstanding his personal injury and incomplete disregard of his personal safety in the midst of enemy shelling, he remained at his post and brought his train to its destination.

By his courage and devotion to duty Shri Partapa inspired confidence in others and he was able to deliver vital military stores.

No. 12-*Pres.*/66.—The President is pleased to approve the award of the ASHOKA CHAKRA, CLASS III, for acts of gallantry to :

1. Shri KHEM RAJ,

Incharge of Hydel Channel,
Poonch.

2. Shri GHULAM DIN,

Sarpanch, Village Dhallan.

(*Effective date of award*—*25th October* 1963)

On 25th October 1963, the Hydel Channel feeding the Poonch Power House and coming from Pakistan occupied Kashmir was damaged by the Pakistanis with the result that the border town of Poonch went without electricity.

In order to construct an alternative channel on the Indian side of the ceasefire line, civilian labourers were engaged on the 30th October 1963 to work under the supervision of Shri Jia Lal Gupta, Assistant Electrical Engineer, Poonch. However, they had to withdraw due to constant firing by the Pakistan Army. At this stage, unmindful of the grave risk to their lives Shri Khem Raj, who was in charge of the Hydel Channel, Poonch and Shri Ghulam Din, Sarpanch of Village Dhallan, let the labour once again and got the alternative channel constructed and electricity was restored on the 2nd November 1963.

In this work, Shri Khem Raj and Shri Ghulam Din set an example of courage, and devotion to duty at the risk of their lives. Shri Ghulam Din remained undeterred even when he received a bullet injury.

3. No. 1407578 Naib Subedar LAHORA SINGH,

The Corps of Engineers. (*Posthumous*)

(*Effective date of award*—*2nd July* 1964)

On 2nd July 1964, Naib Subedar Lahora Singh who was attached to a Field Company for work, was operating a Dozer near Benakuli on the Joshimath-Mana Road. He had taken over the operation of the Dozer as the operators were not working properly and he wanted to set a personnal example. While he was operating the Dozer on a portion of the road, a retaining wall gave way under the left track without any warning. The machine started sliding down. The men standing near the machines shouted to him to leave the machine and jump off. Naib Subedar Lahora Singh had time to jump off, but with great courage, he continued to try to save the machine as it was sliding down. He remained at the controls of the machine till it upturned and dropped into the Alaknanda river and he was killed. Naik Subedar Lahora Singh displayed exemplary courage and devotion to duty in the best traditions of the Indian Army.

4. Second Lieutenant JAGDISH PRASHAD JOSHI (EC-54547),

The Regiment of Artillery.

(*Effective date of award*—*25th April* 1965)

On the night of 24th/25th April 1965, a vehicle towing a gun and loaded with 25 pounder ammunition caught fire whilst on the move in a convoy on the Gangtok-Nathula Road. The fire spread very quickly. Within a short period the vehicle was ablaze and the fire spread to ammunition boxes. Other vehicles towing guns and carrying ammunition were immediately behind the burning vehicle, and a number of living and storage bunkers and a mechanical transport park of another unit were only at a short distance away.

On hearing the fire alarm, 2/Lt. Jagdish Prasad Joshi rushed to the scene of fire. Unmindful of the grave risk to his life, he entered the burning vehicle and started unloading the burning boxes. His action inspired other men present to do the same. When the fire was intense, he alone continued to unload the burning ammunition boxes. Wrapping a blanket, he repeatedly went into the burning vehicle and removed a major portion of the ammunition. He continued this even when some of the ammunition had started burning. Thus he not only saved many lives, but also prevented serious damage to valuable Government property.

2/Lt. Jagdish Prashad Joshi displayed cool courage and exemplary devotion to duty in the best traditions of the Army.

5. Shri JAI DEV SHARMA,

Station Master, Northern Railway,

Sarna.

(*Effective date of award*—*8th September* 1965)

On the 8th September 1965, an Army tank, having been unloaded from a military special train, was being moved away, when the roadway subsided and the tank caught fire.

Noticing the fire and apprehending disaster, Shri Jai Dev Sharma immediately rushed to the spot and with complete disregard to his personal safety, arranged the removal of the balance of the train to a safe distance, thus, minimising the damage when the tank exploded. But for the timely action taken by Shri Jai Dev Sharma, the damage to train might have been extensive.

6. Shri CHETAN RAM,

Permanent Way Inspector on Special Duty,

Jodhpur Division, Northern Railway, Barmer.

(*Effective date award*—*11th September* 1965)

Shri Chetan Ram was posted at Gadra Road railway station from 11th September 1965. When the station was being subjected to bombing and shelling, he continued to move out on the railway line under his charge, making arrangements for special patrolling of railway track and ensuring that the track was properly maintained for the running of military special trains on the section. When the main line was damaged by an accident, he showed remarkable courage and devotion to duty in laying a diversion line despite constant danger from enemy action.

Shri Chetan Ram accompanied patrol trains almost every day right up to the front line not only to attend to the railway track, but also to supply much needed water to Army personnel in the desert area.

7. PB/SD/1148011 Sergeant PARTAP SINGH,

National Cadet Corps.

(*Effective date of award*—13*th September* 1965)

On 13th September 1965, four Pakistani planes bombed and strafed a goods train carrying diesel oil and other explosives and inflammable material at Gurdaspur railway station, setting fire to a wagon containing diesel oil. The burning oil threw out huge flames and the entire area surrounding the railway track was shourded by a thick cloud of smoke causing panic and confusion in the locality.

Collecting about 59 other NCC Cadets, Sergeant Partap Singh rushed to the scene of the fire. Unmindful of their personal safety, the cadets, under the inspiring leadership of Sergeant Partap Singh, set themselves to the task of detaching the unaffected wagons from the burning wagon and pushing them away to a safe distance. During this action, Sergeant Partap Singh displayed leadership, courage and initiative and set an inspiring example to the other cadets.

No. 13-*Pres.*/66.—The President is pleased to approve the award of the "SENA MEDAL"/"ARMY MEDAL" to the undermentioned personnel for acts of exceptional devotion to duty or courage :—

1. Major JAGAT MOHAN VOHRA (IC-4767), Deccan Horse (9th Horse).

Major Jagat Mohan Vohra was the Squadron Commander of the Deccan Horse during an attack on Khem Karan Distributory on 12th September 1965. His Squadron came under heavy fire by Pakistani forces and half of his force was knocked out. In spite of these losses, he attacked again and directed artillery fire on the enemy positions. In the process, he was wounded by enemy shell fire but he kept on fighting till he was ordered to pull back.

In this action, Major Jagat Mohan Vohra displayed commendable courage and devotion to duty.

2. Major RAJPAL SINGH (IC-12369),

1st Bn., The Brigade of the Guards.

Major Rajpal Singh was Company Commander in a battalion of the Brigade of Guards in the Kargil Sector in Jammu and Kashmir. On 5th June 1965 he was given the task of capturing two hill features in the second phase of the attack which was held by a strong enemy force. By the time the first phase of the attack was over, daylight had appeared and it had become more dangerous to complete the second phase of the attack. Knowing the situation well, Major Rajpal Singh ordered his Company to push the enemy out and complete the task. The attack was held up near a saddle by continuous and accurate fire from the enemy post, particularly from a light machine gun post. Regardless of his own safety, Major Rajpal Singh decided to destroy the light machine gun post himself. He told his Company to give covering fire and he started crawling towards the objective in spite of the enemy fire. He threw a grenade into the enemy post and repeated this time and again till the light machine gun was silenced.

This act of Major Rajpal Singh in the face of a determined enemy inspired his men to capture the objective.

3. Second Lieutenant SURENDER KUMAR NANDA (EC-56435), 1st Bn.,

The Brigade of the Gurads.

2/Lt. Surender Kumar Nanda was Platoon Commander in a battalion of the Brigade of Guards in the Kargil Sector in Jammu and Kashmir. On 5th August 1965, he was ordered to capture a hill feature where the enemy had a well sited section post. Due to heavy fire from this and two other features, his platoon was held up about 100 yards short of the objective. Not caring for his life, 2/Lt. Nanda charged ahead towards the enemy position. Inspired by this courageous act the platoon followed him. During this movement 2/Lt. Nanda was hit very badly in the thigh. Disregarding his wound, he crawled another 50 yards and kept firing at the enemy, until his platoon occupied the feature.

In his acion, 2/Lt. Nanda displayed courage, leadership and devotion to duty in the best traditions of the Indian Army.

4. Second Lieutenant RAJENDRA SINGH (EC-59373), 1st Bn., The Brigade of the Guards.

2/Lt. Rajendra Singh was leading a platoon in a battalion of the Brigade of the Guards on the night of 4th/5th June 1965. The battalion was ordered to attack Pakistani positions in Kargil in Jammu and Kashmir and 2/Lt. Rajendra Singh's Company was to capture Kala Pahar in the first phase. This feature is at a height of about 12,000 feet and the approach to it is extremely difficult. When the Company was about 100 yards from the objective, the advance was held up by continuous enemy light machine gun and medium machine gun fire. 2/Lt. Rajendra Singh took the initiative, crawled upto the enemy bunker and threw a grenade. In doing so he received a burst of enemy light machine gun on the right side of his face. Though severely wounded, he took another grenade in his left hand and lobbed it at the enemy. He was bleeding profusely and fell unconscious. But by his daring act, he had silenced the enemy light machine gun and this enabled his Company to secure its objective subsequently.

5. 2438488 Havildar JARNAIL SINGH, 16th Bn.,

The Punjab Regiment.

On 10th September 1965, Havildar Jarnail Singh, an officiating platoon Commander, was ordered to capture the home bank of Ichhogil Canal near Barki in the Lahore Sector, about 300 yards North of the Bridge over the Canal. As his platoon emerged out of the Barki village, it encountered a hail of bullets and an intense barrage by enemy artillery. In spite of well-directed fire from the enemy bunkers sited along the canal bank, he rallied his platoon and led the assault over an open patch of ground for about 600 yards. As soon as he captured the objective, he realised that one of his sections had gone to the ground midway. With superb courage he rushed back in the midst of enemy fire and personally led this section into the objective. On his return, his position was continuously bombarded by the enemy with artillery, mortar and tank fire from the far bank, but he steadfastly stuck to the objective. Later, when the enemy troops were trying to cross the canal by assault boats for a counterattack, he, on his own initiative, successfully engaged them and disrupted their plans.

But for his bravery and leadership, the company could not have captured the objective and held on to it.

6. 2751734 Lance Naik KESHAVRAO SALUNKE,

22nd Bn., The Maratha Light Infantry. (*Posthumous*)

Lance Naik Keshavrao Salunke was a member of a patrol party which was sent to serach and destroy Pakistani infiltrators who were reported to have been concentrating at Village Dhabrot in Jammu and Kashmir on 5th August 1965. He was leading the scout group of the patrol and when it was fired upon by an enemy force, approximately 100 in strength, from close range with medium machine guns, rifles and grenades. The scouts were well up the hill and the other members of the patrol were following them at a distance. Lance Naik Keshavrao Salunke realised that the only way to save the patrol was to launch an immediate assault on the enemy force. Undeterred by the heavy fire and the enemy strength, he and his scouts assaulted the enemy position, as a result of which the enemy force was disorganised and took to its heels. Soon the others of the patrol joined the scouts in the assault and 2 light machine guns, a rifle and a large stock of ammunition and equipment were captured. Lance Naik Keshavrao Salunke was killed in this action in showing great courage and devotion to duty.

7. 2450674 Lance Naik ANANT RAM,

19th Bn., The Punjab Regiment.

Lance Naik Anant Ram was a member of the assault echelon of a patrol party in the Uri Sector in Jammu and Kashmir. On 10th August 1965, when the party had occupied a patrol base, it came under heavy small arms and medium machine gun fire by Pakistani forces. One of the enemy light machine guns held up the advance of the assaulting echelon. With utter disregard to his personal safety, Lance Naik Anant Ram crawled up to the enemy light machine gun post, threw a grenade and snatched the light machine gun.

In this action, Lance Naik Anant Ram displayed courage and determination in the best traditions of the Army.

8. 5737111 Lance Naik PURNA BAHADUR GURUNG, 6th Bn., 8th Gorkha Rifles.

On 18th September 1965, a Company of a battalion of the Gorkha Regiment, in which a section was commanded by Lance Naik Purna Bahadur Gurung, was ordered to capture a bridge on the Upper Bari Doab Canal in the Lahore Sector, where a strong enemy platoon supported by a section of medium machine gun was firmly entrenched. Progress was slow and with great difficulty Lance Naik Purna Bahadur Gurung's section got across the Bridge but was pinned down by heavy and accurate medium machine gun fire. The Section suffered 3 casualties leaving this Non-Commissioned Officer and only his light Machine gun group. Lance Naik Purna Bahadur Gurung picked up the light machine gun of his section and firing from the hip, charged the medium machine gun post, killing three of the crew and silencing it. In doing so, he fell wounded. By his act of bravery, a firm foothold was established across the canal and the enemy force was routed.

9. 2745683 Lance Naik VISHVANATH BHOSLE,

17th Bn., The Maratha Light Infantry.

Lance Naik Vishvanath Bhosle was a member of the rifle section which was manning the post at Yak La (Sikkim). On 2nd October 1965, a Chinese force, in platoon strength, attacked the forward post without any warning. The post commander ordered the forward post to withdraw under covering fire of the light machine gun from the main post. Lance Naik Bhosle and Lance Naik Malunkar were the last to withdraw from the forward post. They managed to reach the south end of a lake about 300 yards from the main post when a burst from an enemy light machine gun hit Lance Naik Malunkar and he fell. Lance Naik Bhosle immediately took position behind a small boulder and, with

complete disregard for his own life, continued to fire at the enemy force. He was determined to stay behind and to prevent the enemy from capturing the body of his comrade. When another Lance Naik from the main post called out to say that he was coming to his assistance, Lance Naik Bhosle waved him back thinking that he might also be hit. Lance Naik Bhosle continued to stay with his comrade for over an hour until the arrival of a relief patrol. His bravery, determination and devotion to duty prevented the enemy from capturing the body of his fallen comrade.

10. 4153366 Sepoy SHER RAM,

The Kumaon Regiment.

At 1700 hours on 2nd May 1965, a patrol of the Kumaon Regiment clashed with a platoon of Pakistani troops who had intruded into our area in Pir Ki Tekri in Jammu and Kashmir. Two of our Jawans who had moved to a flank to engage the intruders more effectively were killed outright. The Pakistani intruders then charged the small group but Sepoy Sher Ram and another Sepoy, who were close behind, held their ground and beat back the charge with hand grenades causing the enemy troops to flee. Later Sepoy Sher Ram and his companion went forward to recover the dead bodies of the two Jawans. His companion was wounded as a result of concentrated enemy medium machine gun fire. In spite of this heavy fire, Sepoy Sher Ram evacuated one of the dead bodies and then went forward and evacuated his companion who was unable to move because of a spinal injury. After this, he went back for the third time to recover the second dead body. Just as he had lifted the body, the enemy fired a rifle grenade and wounded him in both feet.

The courage and devotion to duty displayed by Sepoy Sher Ram were in keeping with the highest traditions of the Army.

No. 14-*Pres.*/66.—The President is pleased to approve the award of the "VAYU SENA MEDAL"/"AIR FORCE MEDAL" to the undermentioned personnel for acts of exceptional devotion to duty or courage :—

1. Squadron Leader ARVIND DALAYA (4025),

General Duties (Pilot).

Squadron Leader Arvind Dalaya has been commanding a Helicopter Unit operating in the Jammu and Kashmir and Ladakh area since December 1963. He was given the task of forming a new unit, with only a couple of trained aircrew and technicians. He had also to undertake major commitments in the area, since his was the only Helicopter Unit there. He successfully completed all the commitments assigned to him and also raised the operational standard of the unit.

In June, 1964, he was asked to evacuate the causalties among members of a Nanda Devi expedition. He personally flew the helicopter and successfully evacuated the casualties.

In June 1965, when one of the helicopters of his unit had forced-landed at a height of about 15,000 ft. in the Karakoram mountains, he led a team of technicians to the scene of the accident and retrieved the damaged helicopter after changing its engine.

During the recent operations against Pakistan in the Sialkot sector, he led sorties in the forward areas to bring back our Army battle casualties in spite of enemy aircraft activities in the vicinity. Squadron Leader Arvind Dalaya has set a fine example of leadership and devotion to duty.

2. Squadron Leader KAILASH CHANDRA KHANNA (4722),

General Duties (Pilot).

On 10th September 1965, Squadron Leader Kailash Chandra Khanna took off from Halwara as No. 4 in a formation of four Gnat aircraft to provide air cover to two Canberra sections on a bombing mission in enemy territory. All went according to plan and the first Canberra section was escorted to its target in the Kasur area and brought back safely. A rendezvous with the second section was made and the four Gnats again proceeded to the target area.

As the two Canberras dropped their bombs, two enemy aircraft were reported. Just then Squadron Leader Khanna noticed that there was a malfunction in the fuel system and his low fuel level warning light indicated that, at the height and speed at which he was now flying, he had a little over 3 minutes' fuel in the aircraft. The nearest landing ground was nearly eighty miles away.

Not wishing to divide the formation leader's attention between the protection of Canberras and his own emergency, Squadron Leader Khanna decided not to inform the leader of his plight. Only when the Canberras had been escorted to the safety of our own territory did Squadron Leader Khanna call out his emergency.

He then took a timely and bold decision to gain altitude and switch off the engine to conserve the remaining fuel. Thereafter, he glided towards Halwara and re-lighted the engine on the circuit. As he was turning in finally to land the engine flamed out for lack of fuel but he carried out a successful forced-landing.

Squadron Leader Kailash Chandra Khanna displayed a sense of duty and discipline which were in the best traditions of the Air Force.

3. Squadron Leader BHAGAT SINGH BAKHSHI (4597),

General Duties (Pilot).

Squadron Leader Bhagat Singh Bakhshi took over as officer in charge of a helicopter detachment drawn from three units. The detachment carried out 567 sorties and flew 433 hours within a period of thirty six days from 18th August to 22nd September, 1965.

The aircraft operated immediately behind the lines carrying out supply-dropping, bombing and straffing. They evacuated eight hundred and thirty two casualties. They dropped a large number of bombs and fired many rounds of ammunition and conveyed large quantities of ammunition and supplies. This was of vital help to our advancing forces to sustain the newly captured picquets in Jammu and Kashmir.

On 31st August, 1965 when Squadron Leader Bakhshi was on an offensive mission, he had to crash-land his aircraft because of a technical failure at a height of about 10,000 feet in an area infested by Pakistani infiltrators. The crew escaped with only minor injuries thanks to his flying skill. He walked 18 miles helping the injured crew and organised the evacuation of those who could not walk.

Squadron Leader Bhagat Singh Bakhshi carried out three offensive sorties against the infiltrators, flying at low levels while attacking the targets. He also carried out thirty logistic sorties and thirteen sorties to evacuate casualties from quickly fabricated helipads within the range of enemy fire. These sorties were flown from an airfield which was under the constant threat of enemy air raids without any warning. Undeterred by such grave dangers, the officer accomplished his difficult tasks with great determination and zeal and displayed a high degree of professional skill and ability which were in the best traditions of the Air Force.

4. Squadron Leader PATRICK RUSSEL EARLE (3965),

General Duties (Pilot).

On 10th September, 1965 a formation of Mystere aircraft took off for an operational mission on the western border. When the formation reached the target area, a large number of enemy tanks were spotted and intensive anti-aircraft fire was encountered. Despite a concentrated barrage and against heavy odds Squadron Leader Patrick Russel Earle who led the formation to engage the enemy. When two planes of the formation had to abandon the attack because they were too close to turn in, Squadron Leader Earle and his No. 2 orbited at a low height to provide cover for a second attack. While doing so Squadron Leader Earle's aircraft was hit by anti-aircraft fire and there was a hole of about 4″ in diameter in the centre of the fuselage. The aircraft caught fire and the hole enlarged to about 12″ in diameter. Despite this, Squadron Leader Earle did not bale out but brought back the aircraft to base safely, with the fire warning light on all the time.

Squadron Leader Patrick Russel Earle displayed courage and professional skill of a high order.

5. Flight Lieutenant WISHNU MITTER SONDHI (5705),

General Duties (Pilot).

On 1st September, 1965, Flight Lieutenant Wishnu Mitter Sondhi was sub-section leader in the second section of Vampires which struck the enemy armour in Chhamb Sector. Fully aware that the first section was jumped by an enemy F-86 formation, he kept a sharp look out for the enemy aircraft even when attacking the enemy armour with rockets. Undaunted by the presence of enemy aircraft of superior performance, he delivered his rockets against the enemy tanks. He sighted a formation of F-86 aircraft diving on to his section, warned his leader and No. 2, and turned round with his wingman to face the enemy. In the ensuing air combat, he made a firing pass at an F-86 and registered several hits on it. Meanwhile his wingman warned him of other F-86s closing in astern and Flight Lieutenant Wishnu Mitter Sondhi had to break off to avoid being hit. His wingman was shot down and he alone of his section fought his way back to base. His cool courage and flying skill were in the best traditions of the Air Force.

6. Flight Lieutenant VINOD KUMAR VERMA (6528),

General Duties (Pilot).

On 10th September, 1965 a formation of Cystere aircraft took off for an operational mission on the western border. When the formation reached the target area, a large number of enemy tanks were spotted and intensive anti-aircraft fire was encountered. Despite a concentrated barrage and against heavy odds, attacks were carried out. No. 1's aircraft was severely hit during an attack and Nos. 1 and 2 returned to base. Nos. 3 and 4 went in for a second attack.

Although his aircraft was hit, Flight Lieutenant Verma continued the attack, along with No. 3. The emergency and auxiliary Sorvo system of Flight Lieutenant Verma's aircraft were damaged and both system pressures dropped to zero. He brought the damaged aircraft safely back to base with main system pressures dropping and even this went to zero just before touch-down. Flight Lieutenant Vinod Kumar Verma showed courage and determination and professional skill of a high order.

7. Flight Lieutenant SUBHASH MADANMOHAN HUNDIWALA (6351),

General Duties (Pilot).

Flight Lieutenant Subhash Madanmohan Hundiwala has been in a Helicopter Unit in Ladakh since November, 1963. Since then he has flown 430 hours on operational sorties in that area. In spite of the hazards of flying over difficult and mountainous terrain of Ladakh, he has always volunteered for difficult operational missions allotted to his unit.

On 18th May, 1965, Flight Lieutenant Hundiwala undertook four sorties in adverse weather conditions to evacuate army battle casualties from Kargil.

On 28th May, 1965, while on a sortie to evacuate a serious casualty from a place in the Karakoram ranges, he experienced a flame-out of the engine; yet by skilful handling of the helicopter, he carried out a successful forced landing on a helipad situated at an altitude of 15,000 feet.

Throughout his tenure of duties in Ladakh, this officer has successfully carried out difficult missions assigned to him and has displayed courage, professional skill and devotion to duty which are in the best traditions of the Indian Air Force.

8. Flight Lieutenant RANJIT KUMAR MALHOTRA (6513),

General Duties (Pilot).

Flight Lieutenant Ranjit Kumar Malhotra has been flying Alouette III Helicopters in Ladakh since June 1964 and has flown about 400 hours in Ladakh and other areas of Jammu and Kashmir. Despite difficult and mountainous terrain he has always volunteered for difficult operational missions and set a fine example to his colleagues.

In May and June 1965, in adverse weather conditions, he undertook twelve sorties to Kargil for the purpose of evacuating our army battle casualties. Again on 14th August, 1965, he undertook two sorties to evacuate army battle casualties from Naugam in Srinagar valley. During these sorties, he had to land at a place which was encircled by Pakistani infiltrators. They fired at him after he had landed; but with cool courage and presence of mind, he successfully evacuated the casualties from the encircled area. The courage and devotion to duty displayed by him are in the best traditions of the Indian Air Force.

9. Flight Lieutenant LALIT KUMAR DUTTA (6506),

General Duties (Pilot).

During the operations against Pakistan, Flight Lieutenant Lalit Kumar Dutta, a senior pilot of a Helicopter Unit, carried out eighty-one sorties and flew fifty seven hours under very adverse conditions and from quickly improvised helipads, just behind our advancing troops and within the range of enemy's small arms fire.

At great personal risk, Flight Lieutenant Dutta carried out eighteen offensive sorties, bombing and strafing the strongholds of infiltrators effectively. He flew twenty-five sorties evacuating sick and wounded soldiers, thus saving many valuable lives. He also flew thirty sorties to convoy ammunition and essential supplies for sustaining the forward picquets. He operated from an airfield which was under constant threat of enemy air raids without warning.

Flight Lieutenant Lalit Kumar Dutta has displayed a great sense of responsibility, courage and devotion to duty which are in the best traditions of the Indian Air Force.

10. Flight Lieutenant CHUHAR SINGH KANWAR (6532),

General Duties (Pilot).

During the operations against Pakistan, Flight Lieutenant Chuhar Singh Kanwar, a senior pilot of a Helicopter Unit, carried out fifteen offensive sorties against the infiltrators, which were very effective and of immense help to the troops engaged in the mopping up operation. He carried out forty-five logistic sorties and twenty casualty evacuation sorties in a period of thirty six days. He operated from quickly fabricated helipads, right behind the line of actual control and carried out four trial landings on these helipads. By evacuating casualties from the most forward areas, he saved many valuable lives. His supply missions were a life line for troops fighting in difficult terrain. He operated from an airfield which was under constant threat of enemy air raids without warning.

On 13th September, 1965, during an air raid, a helicopter was badly damaged. The engineering staff carried out some repairs; but there were still a number of navigational and functional limitations. Flight Lieutenant Kanwar volunteered to airtest the aircraft and finally ferried it to a safer airfield and saved it from further damage by enemy action.

On 22nd September, 1965, when Flight Lieutenant Kanwar landed at an improvised helipad with vital ammunition and essential supplies, the enemy started shelling the helipad. The officer unloaded the supplies undaunted by enemy shelling. With courage and presence of mind, he then took off quickly and brought the aircraft and aircrew safely to the base.

Flight Lieutenant Chuhar Singh Kanwar displayed flying skill and devotion to duty of a very high order which were in the best traditions of the Indian Air Force.

11. Flight Lieutenant PREMANANDA GOSWAMI (Aux. 30082),

General Duties (Pilot).

During the operations against Pakistan, Flight Lieutenant Premananda Goswami, Flight Commander of a Helicopter Unit, flew seventy sorties in a period of thirty-six days and completed sixty-one hours of flying. He flew twelve casualty evacuation sorties from quickly improvised helipads, just behind our advancing troops and within the range of enemy shells. The hilly terrain was very difficult and treacherous for helicopter operations. Undeterred by these difficulties and dangers, he carried out his mercy missions and saved many valuable lives. He also undertook sixty logistic sorties supplying and dropping ammunition and rations to forward posts at great personal risk. He operated from an airfield which was under constant threat of enemy air raids without warning.

On 22nd September, 1965, he landed at an improvised helipad with ammunition and supplies to sustain this picquet. The enemy started shelling the post. With courage and presence of mind, he took off while the other aircraft was still unloading. Disregarding his own safety he circled near the enemy positions to divert the fire and attention of the enemy to his own aircraft, in order to give time to the other aircraft to unload its cargo and save it from destruction.

Flight Lieutenant Premananda Goswami displayed courage, determination, and comradeship which were in the best traditions of the Indian Air Force.

12. Flight Lieutenant JOHN LEO DWELTZ (5707),

General Duties (Pilot).

During the operations against Pakistan, Flight Lieutenant John Leo Dweltz, Flight Commander of an Helicopter Unit, flew twenty offensive, thirty-six logistic, twelve casualty evacuation and four reconnaissance sorties within a period of thirty six days. He operated from quickly improvised helipads in difficult terrain with utter disregard for his personal safety. By evacuating casualties from the forward posts he saved many valuable lives. His supply-dropping missions helped to maintain the newly occupied picquets. He continued to operate from helipads within the enemy's shelling range and under constant threat of enemy air raids on his airfield without warning.

On 11th September, 1965, Flight Lieutenant Dweltz was detailed to attack a strong-hold of infiltrators at Raman Nallah. While he was bombing and strafing the enemy bunkers in a narrow valley, the infiltrators started firing at his aircraft with small arms. Undeterred by the enemy fire, he carried out his mission with determination.

On 15th September, 1965, the army reported strong enemy pressure on some of our posts in the Tithwal area and wanted the Air Force to destroy a rope bridge over the Kishan Ganga. The bridge ran through a narrow valley and the area was occupied by Pakistani infiltrators. Flight Lieutenant Dweltz made three runs over the bridge and dropped forty-eight bombs on the target. He set fire to both ends of the bridge and caused considerable damage to its centre portion, thus severing the line of communication of the enemy and relieving pressure on our picquets.

13. Flying Officer DILIP KAMALAKAR PARULKAR (7227),

General Duties (Pilot).

Soon after the commencement of the operations against Pakistan, Flying Officer Dilip Kamalakar Parulkar volunteered for operational duties and was attached to a fighter squadron. On his first mission, when he reached target area, he met very heavy enemy ground fire. With complete disregard to his personal safety, he went in to attack the ground target. During this mission his aircraft was hit by enemy fire and a bullet pierced the aircraft and injured his right shoulder. He informed his leader that his right arm had been disabled and that he was dropping out of the engagement. The leader advised him to eject himself if he found it difficult to fly but rather than lose his valuable aircraft he flew it back to base with his left hand and made a successful landing.

Flying Officer Dilip Kamalakar Parulkar showed commendable courage, skill and devotion to duty.

14. Flying Officer AMERJIT SINGH GILL (6147),

General Duties (Pilot).

Flying Officer Amerjit Singh Gill was one of a small number of Gnat pilots who were sent to the Chhamb sector to provide air cover for our close support aircraft and to establish air superiority. Unmindful of personal safety, he flew repeated missions in the area and engaged the enemy on a number of occasions. On 3rd September, 1965, he was engaged by Pakistani Sabres and an F-104, which fired air-to-

air guided missiles at him. With remarkable coolness and courage, he outmanouvred them all. He flew a total of 35 missions in the Chhamb, Pasrur and Sialkot sectors. He was instrumental in establishing the superiority of our Air Force. He showed commendable courage and readiness to face the enemy.

15. 208603 Sergeant SANSAR SINGH, Flight Engineer.

During the operations against Pakistan, Sergeant Sansar Singh, a Flight Engineer in a Helicopter unit, carried out ninety-three sorties and flew one hundred and four hours. He was one of the most willing workers and always volunteered to fly on operational missions He undertook sixteen offensive sorties against the strongholds of Pakistani infiltrators in Jammu and Kashmir at great personal risk. He went on forty-two casualty evacuation sorties and attended to the casualties while in flight and thereby saved many valuable lives. On several occasions he was called upon to convert a helicopter quickly from the offensive version to the casualty evacuation version. He carried out these tasks with commendable speed and without caring for his personal safety or comfort. His airfield was under constant threat of enemy air raids without warning and the forward helipads were within the range of enemy fire.

Sergeant Sansar Singh has displayed commendable zeal for operational flying, a keen sense of duty and unwavering courage in carrying out all the tasks entrusted to him.

No. 15-Pres./66.—The President is pleased to approve the award of the VIR CHAKRA for acts of gallantry in the recent operations against Pakistan to :—

1. 2942593 Havildar GIRDHARI LAL, 4th Bn.,

The Rajput Regiment (*Posthumous*).

(*Effective date of award—16th May* 1965)

On the 16th May 1965, Pakistani troops attacked one of our posts in the Kargil Sector (Jammu and Kashmir). This attack was repulsed by our troops and they were ordered to capture a dominating feature held by the enemy forces in depth, from where they were bringing down accurate 3-inch mortar, light machine gun and small arms fire on the leading troops. Without regard for danger Havildar Girdhari Lal, who was in the leading section, kept encouraging his men to advance. When one of the light machine gunner fell under the heavy fire, he picked up the gun and charged into an enemy bunker and killed its occupants but was himself killed in doing so.

In this action, Havildar Girdhari Lal displayed exemplary bravery and devotion to duty, in the best traditions of the Army.

2. 2435469 Naik BACHITTAR SINGH, 1st Bn., The Brigade of the I Guards (*Posthumous*).

(*Effective date of award—5th June* 1965)

On the 5th June, 1965, Naik Bachittar Singh, who was the Commander of the leading Section of a Guards battalion, led his Section to capture a Pakistani Post in the Kargil Sector in Jammu and Kashmir. When his platoon was about 100 yards from the objective, it was held up by heavy enemy light machine gun and medium machine gun fire. With great courage Naik Bachittar Singh charged towards the enemy. He was wounded by enemy fire but undeterred, he crawled towards the enemy post, threw grenades into it and kept firing till the enemy retreated and vacated the post. The retreating enemy continued firing, Naik Bachittar Singh returned the fire and killed two of them before he was hit in the head by a burst of light machine gun fire and killed. By his act of bravery he cleared the enemy post completely and the feature was captured without any further enemy opposition.

The courage and initiative displayed by Naik Bachittar Singh in the action were in the best traditions of the Indian Army.

3. Captain ARJAN SINGH NARULA (IC-12180),

6th Bn., The 5th Gorkha Rifles.

(*Effective date of award—12th August, 1965*)

On the 12th August 1965, Captain Arjan Singh Narula led a company of his battalion to Kalidhar, Jammu and Kashmir, to assist a Company of J & K Rifles and to prevent infiltrators from aproaching Balwinder suspension bridge, the only link with the rest of the theatre. He arrived in the evening and launched an attack the same night and cleared two points held by the enemy.

On the morning of 14th August 1965, a patrol of J & K Rifles was ambushed by the enemy. On hearing this, Captain Narula rushed a platoon to contact the enemy and himself followed with the other two platoons. Although the Company was short of ammunition, especially for 2-inch mortar and light machine guns, Captain Narula launched an attack on the infiltrators so as to keep the line of communication open. In this attack 20 infiltrators were killed and a large number fled. That evening and the next night Captain Narula's positions were heavily shelled, but the attacks were successfully repulsed.

By the 16th August 1965, his men were so exhausted that they could hardly move. Although exhausted himself he collected a section of volunteers and reached the J & K Rifles picquets where he managed to get some water for his men. This action encouraged his men and they continued to repulse the enemy attacks on 17th 18th and 19th August 1965, until the battalion joined them.

Throughout this operation from 12th to 20th August 1965, Captain Arjan Singh Narula, displayed outstanding leadership, courage and endurance.

4. Squadron Leader ANTHONY LOUIS MOUSINHO (4418),

General Duties (Pilot).

(*Effective date of award—1st September* 1965)

During the recent operations against Pakistan, Squadron Leader Anthony Louis Mousinho was the Flight Commander of an Operational Fighter Reconnaissance Squadron. In addition to other operational missions, he led his section on 11 missions against enemy ground positions and pressed home the attacks with courage and determination against a heavy barrage of enemy fire. He undertook dangerous reconnaissance missions in complete disregard of his personal safety. During one such mission he successfully located a tank train which was subsequently attacked by our aircraft, resulting in 25 Patton tanks being knocked out.

His exemplary courage and determination have inspired the men under his command to a high sense of devotion to duty.

5. Squadron Leader SUDESH KUMAR DAHAR (4425),

General Duties (Pilot).

(*Effective date of award—1st September* 1965)

Squadron Leader Sudesh Kumar Dahar was the leader of a Vampire force, which went in action on 1st September 1965 in the Chhamb sector, where a Pakistani force had crossed the border and attacked our positions with heavy armour. Squadron Leader Dahar led the first section which destroyed six enemy Patton tanks, one anti-aircraft gun position, several trucks and many enemy troops in that area. His section of four Vampire aircraft was attacked by anti-aircraft guns and also by Sabre jets. Skilfully handling the situation, he brought three aircraft safely back to base after a successful mission.

His complete disregard of his personal safety was a source of inspiration to the other pilots and his squadron continued to inflict crushing blows on the enemy, destroying enemy supply lines, petrol dumps, railway wagons, convoys and encampments.

The courage and determination displayed by Squadron Leader Sudesh Kumar Dahar were in the highest traditions of the Air Force.

6. Squadron Leader SUBE SINGH MALIK (4663),

General Duties (Pilot).

(*Effective date of award—1st September* 1965)

Squadron Leader Sube Singh Malik was engaged in operations against Pakistan as a flight commander of a Hunter squadron. He flew a total of 15 operational missions of which 11 were in close support of the army in the front line.

He led formations of Hunter aircraft on offensive air strikes on eight occasions and caused extensive damage and destruction to enemy tanks, vehicles and troops. He pressed home his attacks with determination and courage in spite of heavy enemy ground fire and, on some occasions, enemy interceptor aircraft. On one occasion the control surfaces of his aircraft were damaged but with skill he brought back his aircraft and landed safely at his base. On another occasion he pressed home his attack against a heavily defended target in spite of a warning received from his companion about enemy F-104 aircraft closing in. Undaunted, he completed his task in spite of the heavy odds and brought his formation safely back to base.

During another sorties near Harbanspura Railway station, his formation caused extensive damage to enemy armour and gun positions, in spite of heavy enemy anti-aircraft fire.

The courage and tenacity of Squadron Leader Sube Singh Malik were in the highest traditions of the Air Force.

7. Squadron Leader AJIT SINGH LAMBA (4877), General Duties (Pilot).

(*Effective date of award—1st September* 1965)

As a Hunter pilot, Squadron Leader Ajit Singh Lamba flew a total of 15 operational sorties, of which 11 were in close support of the army in the Kasur and Lahore sectors. On several of these missions he led formations of Hunter aircraft. He showed great skill and determination in seeking out enemy targets and pressing home his attacks in spite of intensive ground fire and the presence of enemy interceptor aircraft. In spite of heavy opposition, he successfully destroyed several enemy tanks and vehicles. His achievements in the destruction of enemy guns and armour near Harbanspura railway station was specially noteworthy because of the heavy defences surrounding these locations.

Throughout the operations Squadron Leader Ajit Singh Lamba showed a marked keenness for action and was always an immediate and ready volunteer for any mission. His courage and devotion to duty inspired other pilots and are in the finest traditions of the Air Force.

8. Flight Lieutenant SHARADCHANDRA NARESH DESHPANDE (5452),

General Duties (Navigator).

(*Effective date of award—1st September* 1965)

Flight Lieutenant Sharadchandra Naresh Deshpande was serving on the instructional staff of the Jet Bomber Conversion Unit as a navigation instructor when hostilities broke out between India and Pakistan. He volunteered for operational duties and carried out seven operational bombing missions over enemy territory.

Flight Lieutenant Deshpande was the navigator/bomb-aimer of the leading aircraft and carried out successful missions in spite of heavy enemy opposition and in total disregard of his own safety. During these bombing operations, he displayed courage, great professional skill and devotion to duty of a high order in the best traditions of the Air Force.

9. Flight Lieutenant CHANDRA SEKHAR DORAISWAMI (5601),

General Duties (Pilot).

(*Effective date of award—1st September* 1965)

During the operations against Pakistan, Flight Lieutenant Chandra Sekhar Doraiswami took part in 14 operational strike missions against the enemy ground positions. In all his attacks he displayed great determination in spite of heavy ground fire and enemy air opposition. Twice his aircraft was hit by enemy ground fire and damaged severely. Instead of returning to base, Flight Lieutenant Doraiswami continued on each occasion to press home his attacks in complete disregard of his personal safety and inflicted considerable damage on enemy armour and troops concentrations.

Throughout the operations Flight Lieutenant Chandra Sekhar Doraiswami displayed courage, determination and professional skill of a high order.

10. Squadron Leader JOHNNY WILLIAM GREENE (4093),

General Duties (Pilot).

(*Effective date of award—3rd September* 1965)

In the initial stages of the operations against Pakistan in the Chhamb Sector, a detachment of Gnats was sent to give cover to our ground attack aircraft and establish our superiority. Squadron Leader Johnny William Greene led missions repeatedly into this sector where the enemy was using missile equipped F-86 Sabre and F-104 Starfighters. He worked out tactics to combat them and, by his personal example and determination, infused confidence in the members of his formation.

On 3rd and 4th September, 1965, the formation led by him were in the first air combats with the enemy air force. Unmindful of the enemy's numerical superiority and radar advantage, he controlled and manouvred his formations with such skill that they succeeded in shooting down two enemy aircraft—the first in these operations. Subsequently, he led a number of formations giving air cover to Mystere and Canberra aircraft in attacks on ground targets. The success of these attacks was largely due to his bravery and leadership.

11. Wing Commander OM PARKASH TANEJA (3843), General Duties (Pilot).

(*Effective date of award—6th September* 1965)

During the operations against Pakistan, Wing Commander Om Parkash Taneja showed inspiring leadership and set a fine example as a Squadron Commander by leading nine strike missions over enemy territory. On 6th September 1965, he led his Squadron for the first mission into enemy territory and destroyed fuel wagons in the Gujranwala Sector. On 7th September, 1965 he led a formation of 12 aircraft of the Squadron on a dawn strike over Sargodha Airfield. He started up during an air raid warning, when our anti-aircraft guns were firing. Shortly after the air raid he took off from a damaged runway having no runway lights. Though it was still dark, he led his Squadron successfully at low level to the target. On subsequent days he led a number of strike sorties in the Lahore and Sialkot sectors, attacking and destroying enemy tanks, vehicle concentrations and gun and mortar positions in these sectors. By his example he inspired confidence and courage amongst the junior pilots and won the admiration of all serving under him.

12. Squadron Leader SHRI KRISHNA SINGH (3996), Accounts.

(*Effective date of award—6th September* 1965)

Squadron Leader Shri Krishna Singh was in charge of ground defence and security arrangements of an airfield when hostilities started with Pakistan. On 6th September 1965, over 60 Pakistani paratroopers, equipped with modern weapons and equipment, were air-dropped in the vicinity of the unit to carry out sabotage to our aircraft and installations. Squadron Leader Singh organised a mobile patrol and under his intelligent and able direction the patrol foiled the enemy's plan. Finding the airfield defences formidable, the paratroopers finally withdrew from the airfield and were captured by civil and army authorities.

On 7th September, 1965, when information was received that some paratroopers had been hiding near a village, Squadron Leader Shri Krishna Singh volunteered to lead a mobil armed patrol to apprehend them. During this operation, he was able to apprehend three paratroopers, including the officer in charge of the Pakistani Para contingent. On an extensive search made under his supervision, 70 parachutes and a considerable quantity of automatic weapons and other equipment were captured. This bold action on the part of Squadron Leader Shri Krishna Singh made the paratrooper attack on the airfields ineffective.

13. Squadron Leader BHUPENDRA KUMAR BISHNOI (4594),

General Duties (Pilot).

(*Effective date of award—7th September* 1965)

Squadron Leader Bhupendra Kumar Bishnoi arrived at Halwara on 7th September, 1965, for taking part in air operations against Pakistan. Within a period of 15 days, he carried out 16 operational missions of which seven were in close support of the army in the Kasur/Lahore sector.

When the enemy ran short of ammunition in the Kasur region Squadron Leader Bishnoi with a formation of four aircraft destroyed a train carrying ammunition at Raiwind Railway Station. The denial of this vital supply was a major factor in causing the enemy to withdraw its armour from this sector with heavy losses.

In his other offensive sorties he destroyed or damaged at least ten enemy tanks, armoured vehicles and gun emplacements. Although his aircraft was hit on three different occasions by the enemy ground fire, he pressed home his attacks every time.

Throughout these operations Squadron Leader Bhupendra Kumar Bishnoi displayed courage and leadership in the highest traditions of the Air Force.

14. Flight Lieutenant DIL MOHAN SINGH KAHAI (5272).

General Duties (Pilot).

(*Effective date of award—7th September* 1965)

Flight Lieutenant Dil Mohan Singh Kahai was the deputy leader of a Mystere formation which carried out a daring daylight raid on the very heavily defended Sargodha airfield on 7th September 1965. Despite the intense anti-aircraft fire, he dropped his bombs on four parked aircraft (one F-104 and three F-86) on the Operational Readiness Platform. Then he straffed two more F-86 aircraft and one more F-104 parked on the other Operational Readiness Platform.

On 11th September 1965, he flew as No. 2 in a two-aircraft bombing mission over artillery bunkers in the Lahore sector. The bombs dropped by him exploded directly over the gunkers and they were destroyed.

On 18th September 1965, flying again as the deputy leader in a four aircraft formation, Flight Lieutenant Kahai scored a direct hit on a gun position near Lahore airfield with rockets and knocked it out. On 19th September, 1965, he led a two aircraft formation and destroyed a Bailey Bridge over the Ichhogil canal.

The officer also flew a number of strike support missions in which he inflicted damage to enemy equipment and casualties on enemy troops. He also carried out armed patrol sorties near the airfield.

The calmness and resolute courage displayed by Flight Lieutenant Dil Mohan Singh Kahai during all these operational missions were a source of inspiration to other pilots and were in the best traditions of the Air Force.

15. Flight Lieutenant CHANDRA KRISHNA KUMAR MENON (5699),

General Duties (Pilot).

(*Effective date of award—7th September* 1965)

Flight Lieutenant Chandra Krishna Kumar Menon joined a Hunter Squadron at Halwara on 7th September 1965, to take part in operations against Pakistan. By the time the ceasefire came into force he had carried out eight operational sorties of which seven were in close support of the army.

On 8th September, 1965, he was detailed to lead of a four aircraft formation to engage targets in the Kasur-Lahore sector. His formation destroyed a supply train at Raiwind railway station. The train was carrying ammunition badly needed by the enemy forces in the Kasur region. The denial of this vital supply of ammunition was a major factor in causing the withdrawal of the enemy armour with heavy losses. During the same mission, a large number of tanks and gun emplacements were also successfully engaged and destroyed or damaged. At least six enemy tanks were destroyed on this occasion.

In these sorties, Flight Lieutenant Chandra Krishna Kumar Menon displayed professional skill and utter disregard for his personal safety in the best traditions of the Air Force.

16. Flight Lieutenant AMARJEET SINGH KULLAR (5854),
General Duties (Pilot).
(*Effective date of award—7th September 1965*)

Flight Lieutenant Amarjeet Singh Kullar joined a Hunter Squadron at Halwara on 7th September, 1965, during the operations against Pakistan. Within a fortnight he carried out eight operational sorties of which seven were in close support of the army.

On 8th September, 1965, he flew in a four aircraft formation which destroyed a supply train at Raiwind railway station. The train was carrying ammunition badly needed by the enemy forces in the Kasur region. The denial of this vital supply was a major factor in causing the withdrawal of enemy armour with very heavy losses.

During other operational sorties Flight Lieutenant Kullar destroyed or damaged at least six enemy tanks, armoured vehicles and gun emplacements. He carried out his attacks fearlessly against heavily defended enemy positions and his aircraft was hit by ground fire on three different occasions.

Throughout these operations Flight Lieutenant Amarjeet Singh Kullar displayed courage and leadership in the best traditions of the Air Force.

17. Squadron Leader JASBEER SINGH (4476),
General Duties (Pilot). (*Missing*).
(*Effective date of award—7th September 1965*)

Squadron Leader Jasbeer Singh was serving as a Flight Commander in a fighter squadron operating in the western sector during the operations against Pakistan.

On 7th September, 1965, Squadron Leader Jasbeer Singh was detailed as the leader of a strike mission against a high-powered Pakistani radar unit near the Gujranwala airfield, which was greatly hampering our air operations. As his formation was about to attack, Squadron Leader Jasbeer Singh observed four enemy Sabre jets approaching. He immediately warned the formation and undaunted by the interception by the enemy aircraft of superior performance and the intense ground fire, he pressed home his attack and inflicted severe damage on the radar station. In his final attack, when he had to approach the target very low, his aircraft was hit by ground fire and was soon crashing near the target. In this action, Squadron Leader Jasbeer Singh displayed great valour and unflinching devotion to duty, which were in the finest traditions of the Air Force.

18. 2537049 Lance Naik MADALAI MUTHU, The Regiment of Artillery.
(*Effective date of award—7th September 1965*)

Lance Naik Madalai Muthu, who was commander of the gun detachment at the Air Force Base, Kalaikunda, directed the fire of his gun skilfully and effectively and shot down a Pakistani Sabre jet on 7th September, 1965.

The performance of the gun detachment under this non-Commissioned Officer was most praiseworthy.

19. Flight Lieutenant VINOD KUMAR BHATIA (6497),
General Duties (Pilot).
(*Effective date of award—8th September 1965*)

During the operations against Pakistan Flight Lieutenant Vinod Kumar Bhatia was serving in an Operational Squadron in the Lahore Sector. He flew 18 operational sorties in that Sector.

On 8th September, 1965, Flight Lieutenant Bhatia flew as No. 2 in a formation of four Mystere aircraft on a ground attack strike mission. In the face of very heavy and concentrated enemy fire, Flight Lieutenant Bhatia, totally unmindful of the danger to which he was exposed, pressed home repeated attacks on the enemy tanks and gun positions and destroyed two tanks.

The courage and determination displayed by Flight Lieutenant Vinod Kumar Bhatia were in the best traditions of the Indian Air Force.

20. 1135608 Havildar (GD) RAM UJAGAR, The Regiment of Artillery.
(*Effective date of award—8th September 1965*)

On 8th September 1965, a Medium Battery was ordered to come into action near village Kangre in Sialkot Sector in Pakistan. As the guns were coming into action, an enemy light machine gun opened fire. The first of the enemy was extremely effective and causing heavy casualties to our men and equipment. Any move in the area was almost impossible. Meanwhile the enemy opened fire from other directions also. Havildar Ram Ujagar crawled up to the enemy light machine gun post, killed two men and captured the light machine gun. He then came back and organised the defence of the area and was thus able to save the Battery from further casualties. In this action Havildar Ram Ujagar displayed great courage and exemplary devotion to duty.

21. Flight Lieutenant PRAMOD CHANDRA CHO (5194),
General Duties (Pilot).
(*Effective date of award—11th September 1965*)

During the recent operations against Pakistan, Flight Lieutenant Pramod Chandra Chopra carried out 14 operational missions and displayed commendable enthusiasm in hunting for the enemy in the sky.

On 11th September, 1965, Flight Lieutenant Chopra flew as No. 3 in a four aircraft formation of Mysteres on a ground attack strike mission. The formation encountered heavy and concentrated enemy ground fire. Defying the barrage of anti-aircraft fire, Flight Lieutenant Pramod Chandra Chopra pressed home his attack and destroyed two enemy tanks in addition to several gun emplacements and vehicles.

His courage and determination, which inspired other pilots, were in the best traditions of the Indian Air Force.

22. JC-18114 Risaldar KARTAR SINGH, The Poona Horse, (17 Horse) (*Posthumous*).
(*Effective date of award—11th September 1965*)

On 11th September, 1965, during the battle for the capture of Phillora in Pakistan, Risaldar Kartar Singh was the point troop leader, when one of his tanks was suddenly hit and set on fire by enemy tanks at a range of approximately 600 yards. Risaldar Kartar Singh quickly appreciated that he was in an enemy ambush of tanks of approximately one squadron and recoilless guns. Disregarding his personal safety, he charged forward in his tank and shot 3 Patton tanks, thereby creating panic and confusion amongst the enemy troops. Under heavy enemy tank and artillery fire, he jumped out of his tank and rescued the injured crew from the burning tank and later resumed his advance with his two remaining tanks. Soon after, while going in for the assault on Phillora ridge, the squadron came under recoilless gun fire from the flank. He instantly changed direction and charged the recoilless gun position and silenced it.

On 14th September 1965, his Squadron was assigned the task of reducing Wazirwali enemy defences, comprising one company infantry and two troop of tanks. In the assault, as the leading troop leader, he repeated his earlier performance of rescuing the crew of a tank of his troop which had been set ablaze by enemy tank fire. Throughout this period he was subjected to intense small arms, mortar, tank and artillery fire. Having rescued the crew he was mortally wounded when entering his tank. Thus he laid down his life so that his comrades might live on.

Risaldar Kartar Singh displayed exemplary courage, determination and selfless devotion to duty in the best traditions of the Indian Army.

23. Wing Commander SURAPATI BHATTACHARYA (3974),
General Duties (Pilot).
(*Effective date of award—12th September 1965*)

Wing Commander Surapati Bhattacharya was the Flight Commander of an operational fighter squadron in the western sector when the hostilities with Pakistan broke out. He took over the command of the squadron on 12th September 1965. He led a large number of missions against enemy armour and troop concentrations in close support of the army. In the face of enemy ground fire and air opposition, he pressed home his attacks and succeeded in destroying a number of enemy tanks, armoured vehicles and troop concentrations. In every operational mission he undertook, he flew as the leader of the formation, and apart from the successes he achieved personally, he contributed to a great extent towards the successes achieved by the other aircraft of these formations.

By his personal example, he inspired other officers and airmen and instilled in them a spirit of confidence.

Wing Commander Surapati Bhattacharya displayed courage, determination and leadership of a high order in the best traditions of the Air Force.

24. Flight Lieutenant VINOD PATNEY (6125),
General Duties (Pilot).
(*Effective date of award—13th September 1965*)

During the operations against Pakistan, Flight Lieutenant Vinod Patney was serving in an Operational Squadron in a forward area. He flew 16 operational sorties within the short period.

On 13th September, 1965, he took part in a ground attack mission in the Kasur-Khem Karan Sector and flew as No. 3 in a four aircraft formation. During the attack, the formation met with heavy and determined ground fire from the enemy guns. One of our aircraft was shot down. Undeterred and undaunted by this, Flight Lieutenant Patney pressed home five effective attacks on different enemy targets and destroying 3 Patton tanks. The courage and initiative displayed by Flight Lieutenant Vinod Patney were in the best traditions of the Indian Air Force.

25. Squadron Leader SATISH NANDAN BANSAL (4014),
General Duties (Navigator).

(*Effective date of award—14th September* 1965)

On 13th and 14th September, 1965, a massive bomber raid was mounted against Peshawar airfield, Squadron Leader Satish Nandan Bansal was selected to lead and mark the target. The target was so deep in the heart of enemy territory that the aircraft had to operate from a forward base and to follow a direct route so as to ensure enough fuel for return to base.

Though clouds obscure the moon Squadron Leader Bansal decided to navigate at low level among the hills in order not to disclose the position of the bomber stream.

His navigation was so accurate that it needed only one alteration of course to take the aircraft to the centre of the airfield. When he dropped a flare to light up the area, the enemy put up a very heavy curtain of anti-aircraft fire. With courage and determination, he directed the aircraft through the hail of shells and tracers and placed the target indicating bomb most accurately. In order to compute the bombing index it was necessary to fly over the airfield again. There was no time to climb above the range of guns. Giving no thought to his own safety, Squadron Leader Bansal directed the pilot to fly through the inferno of shells and tracers again and found out the bombing index. This he passed to the bomber leader along with adequate warning to step up the bombing height. But for this some of the bombers might have been shot down.

During the operations against Pakistan, Squadron Leader Satish Nandan Bansal was a lead navigator in many bomber attacks. In all his missions he showed courage and singlemindedness of purpose in the best traditions of the Air Force.

26. Squadron Leader CHITRANJAN MERTA (4615),
General Duties (Pilot).

(*Effective date of award—14th September* 1965)

On 14th September 1965, Squadron Leader Chitranjan Mehta was detailed to attack and destroy enemy aircraft and installations at Bhagtanwala. He took off on the night of 14th September 1965, but half way to the target, all his navigation aids failed. The visibility dropped down to less than one mile and the enemy black-out was so effective that it became impossible to navigate visually. Squadron Leader Mehta immediately took a new route along the river Jhelum. He had to fly very close to a bridge which was guarded by the enemy with anti-aircraft guns. He skilfully avoided anti-aircraft fire and reached the target. As soon as he reached the airfield, the anti-aircraft guns from Sargodha airfield opened up a heavy barrage on him. To reconnoiter the airfield and to attack the targets, he had to stay over the target for at least 10 minutes. Heedless of the anti-aircraft fire and ignoring the risk of being intercepted by missile carrying fighter aircraft that were patrolling a few miles away, Squadron Leader Chitranjan Mehta carried out the reconnaissance successfully.

Squadron Leader Chitranjan Mehta carried out nine successful missions and in those he penetrated deep into enemy territory fearlessly by day and by night and inflicted heavy casualties on the enemy.

In this mission, Squadron Leader Chitranjan Mehta displayed cool courage, determination and skill of a high order.

27. Major BHAGAT SINGH (IC-13154), 6th Bn.,
The Brigade of the Guards (*Posthumous*)

(*Effective date of award—14th September* 1965)

Major Bhagat Singh led a platoon patrol deep into enemy territory in an area opposite Ringpain in Jammu and Kashmir on the night of 14th/15th September 1965. After an arduous march over extremely difficult terrain, came between two enemy posts. He cut the enemy's telephone communications with the adjoining posts, deployed one section against one of the enemy posts to stop enemy reinforcements and attacked the other enemy post with two sections. The enemy was holding this post with one platoon and one medium machine gun. Major Bhagat Singh took his two sections on either side of the enemy post within ten to fifteen yards of the enemy bunkers, when the enemy opened fire. Major Bhagat Singh himself shot two of the three enemy soldiers who came out of the post, threw a number of hand grenades and moved freely around the enemy position, without any regard to his personal safety in spite of heavy enemy medium machine gun fire. The firing continued for approximately half an hour and during the exchange of fire Major Bhagat Singh was mortally wounded. As daylight approached and the platoon was subjected to heavy mortar and medium machine gun fire from adjoining enemy picquets, Major Bhagat Singh ordered the withdrawal of the patrol. Due to his wounds and loss of blood, he felt weak and ordered the patrol back to its pre-arranged rendezvous, saying that he would follow them. However, he was unable to proceed any further, was surrounded by the enemy and died as he was being taken prisoner.

Major Bhagat Singh not only inflicted heavy casualties on the enemy but also sacrificed his life to save the patrol from further casualties. The courage, determination and unquenchable fighting spirit displayed by Major Bhagat Singh were in the best tradition of the Army.

28. 2444453 Lance Naik DEV RAJ, 19th Bn.,
The Punjab Regiment.

(*Effective date of award—14th September* 1965)

On the night of 14th/15th September 1965, a company of a Punjab battalion was ordered to occupy an area in the Uri Sector in Jammu and Kashmir. Lance Naik Dev Raj went with this company as medium machine gun gunner.

On 15th September 1965, when the enemy forces discovered our occupation of this position, they started firing on it with medium machine guns and other automatic weapons. One of the enemy medium machine guns was bringing down very heavy and accurate fire on our position. Lance Naik Dev Raj went forward, along with the detachment, to engage the enemy medium machine gun. He took over the command of the gun detachment when the Non-Commissioned Officer in charge had been wounded seriously. The gun was deployed in the open and the enemy was heavily shelling the area. Undaunted, Lance Naik Dev Raj stayed in the forward position to break up any further counter-attacks by the enemy. The enemy forces formed up again for counter-attack, coming along a covered approach and Lance Naik Dev Raj was hit by a burst. When the enemy forces were less than a hundred yards away from him, in spite of his wound he courageously engaged them and halted their advance. He beat back the enemy counter-attack almost single-handed. His action saved the entire company and the medium machine gun.

The bravery and devotion to duty displayed by this Non-Commissioned Officer are in the best traditions of the Indian Army.

29. Flight Lieutenant PRADYOT DASTIDAR (5456),
General Duties (Navigation).

(*Effective date of award—15th September* 1965)

On 15th September 1965, Flight Lieutenant Pradyot Dastidar was detailed as the navigator of a target-marking aircraft to lead a massive attack on Peshawar airfield. This mission was a difficult one and called for the highest skill and accuracy on the part of the navigator.

The route passed very near bridges that were defended by the enemy with anti-aircraft guns. There was hardly any moon light and the whole area was full of haze. The visibility was so bad that Flight-Lieutenant Dastidar saw the airfield only when he was directly overhead. As soon as he dropped a flare to see the target the anti-aircraft guns opened up a heavy barrage. Undaunted by the shells and tracers he made a steady run and marked the target for the bombing stream coming behind. Then he turned around to see his bomb, while the anti-aircraft guns were firing and shells were bursting around him. After sighting the target indicating bomb, he passed the bombing index to the leader of the stream. He left the vicinity of the airfield only after he had confirmed that the leader of the stream had received and understood the bombing index.

In this mission and in seven other missions, Flight Lieutenant Pradyot Dastidar displayed courage and skill of a high order.

30. Squadron Leader TEJ PRAKASH SINGH GILL
(4755), General Duties (Pilot).

(*Effective date of award—19th September* 1965)

During the operations against Pakistan, Squadron Leader missions in support of our ground forces in Sialkot, Chhamb, Lahore and Kasur Sectors. On two such missions on 19th Tej Prakash Singh Gill, the Flight Commander of an Operational Squadron, took part in as many as 21 ground attack and 21st September 1965, Squadron Leader T. P. S. Gill encountered a very heavy barrage of anti-aircraft fire. Instead of breaking off the attack Squadron Leader Gill pressed it home defiantly in utter disregard of his personal safety and destroyed a considerable amount of enemy armour and field guns.

During these missions Squadron Leader Tej Prakash Singh Gill displayed courage and leadership of a high order.

31. Wing Commander PETER MAYNARD WILSON
(3590), General Duties (Pilot).

(*Effective date of award—21st September* 1965)

Wing Commander Peter Maynard Wilson was in command of a bomber squadron. In addition to the bombing raids undertaken at night over various parts of Pakistan, his squadron was given the task of destroying the high-powered radar station near Badin in the Kutch area.

The radar station was heavilly defended by all calibres of anti-aircraft guns and it could also call upon its intercepter aircraft to defend it from any air attack. The nature of the target was such that it required extreme accuracy in bombing to achieve satisfactory results. It was, therefore, decided to undertake a low-level bombing raid in broad daylight so that the bomber crew could take full advantage of good visibility and achieve the utmost precision.

With full knowledge of the dangers involved, Wing Commander Wilson led his squadron and attacked the radar station with confidence and determination. In spite of very heavy opposition, he and his formation successfully destroyed the radar station which was so vital to the enemy.

The courage, leadership and skill displayed by Wing Commander Peter Maynard Wilson on this occasion were in the best traditions of the Air Force.

32. Captain SURENDRA SHAH (IC-13687), 4th Bn., The Kumaon Regiment.

(*Effective date of award*—*21st September* 1965)

On 21st September 1965, Captain Surendra Shah led his company which was given the task of capturing an important feature in Tithwal Sector in Jammu & Kashmir across the cease-fire line. The feature was held by Pakistani forces in more than company strength supported by the Browning machine guns. The approach was along a narrow ridge covered by enemy Artillery and over heavily wooded, steep and rocky ground. Captain Shah led his assaulting troops, despite enemy opposition. When the leading platoon was held up for some time due to enemy mines and the Platoon Commander was killed, Captain Shah went forward and guided his men to the objective.

The objective was assaulted twice. In the first assault Captain Shah's company suffered eight wounded and he received a small grenade wound in the stomach. Despite casualties Captain Shah pressed home the attack. He was wounded in the leg while leading the final assault and saw his men on to the objective. Later Captain Shah was present during the enemy counter-attacks and remained in full control of the situation despite his wounds. He directed the fire of his platoons and also the artillery and mortars. He was a source of inspiration to his men and refused to be evacuated until his wounded men had been evacuated. In this action one officer and 57 other Ranks of the enemy were killed and lot of arms and ammunitions was captured.

This young officer with less than 3 years' commissioned service, having taken command of this company a few days earlier, displayed outstanding courage, leadership and determination.

33. 2846968 Naik JAGDISH SINGH, 18th Bn., The Rajputana Rifles (*Posthumous*)

(*Effective date of award*—*21st September* 1965)

Naik Jagdish Singh was Section Commander in a Company which was assigned the task of eliminating an enemy position in the Khem Karan sector on 21st September, 1965. This position was held by a strong infantry platoon and was well supported by a troop of tanks and anti-tank guns. Just as our own Infantry assault went in, it was discovered that there were manned tanks in the enemy locality. Naik Jagdish Singh was given the task of destroying these tanks with Strim grenades. He skilfully moved around the first encountered tank and positioned himself advantageously and destroyed the tank. By now the enemy had started bringing down battery fire from a covering tank, and artillery fire. Regardless of his personal safety, Naik Jagdish Singh moved forward and with his Strim grenades destroyed the second tank. With determination, he now moved to destroy a third tank, but was killed by a burst from a Browning Machine. In this action, Naik Jagdish Singh displayed high courage and devotion to duty in the best traditions of the Army.

34. 4144564 Naik CHANDER SINGH, 4th Bn., The Kumaon Regiment.

(*Effective date of award*—*21st September* 1965)

Naik Chander Singh was a Section Commander in a battalion attack on 21st September 1965 on an important feature across the ceasefire line in the Tithwal Sector in Jammu & Kashmir. His company was to secure the Southern portion of the feature. This area held the hard core of the enemy defences. Naik Chander Singh's platoon was pinned down at a distance of about 30 yards from the forward defended localities. The enemy brought down heavy fire on his section, as a result of which one man was killed and four wounded. The greatest volume of fire was being brought down by an enemy light machine gun mounted in a bunker. With only two men left in his section Naik Chander Singh crawled forward from the right flank to within 10 yards of the enemy bunker. He now got up, rushed forward and threw a hand grenade into the enemy bunker killing its two inmates. He seized the light machine gun and pushed it out of the bunker and at the same time shouted to his platoon to advance. While doing so, he received a bullet in the chest and was wounded seriously. Even then he continued to encourage the men of his platoon. The two men of his section tried to help him but he refused aid and requested them to join the platoon.

This young Non-Commissioned Officer's disregard for his own safety and his courageous action were a source of inspiration to his platoon.

35. Major KANNIMEL THEKKATHIL MADHUSOOTHANAN PILLAY (IC-5300), The Regiment of Artillery.

(*Effective date of award*—*28th September* 1965)

On 28th September 1965, Major Kannimel Thekkathil Madhusoothanan Pillay was the affiliated Battery Commander with a battalion of Sikh Light Infantry. The battalion was ordered to clear two important hill features on Kalidhar in the Chhamb Sector, which Pakistani forces had, notwithstanding the ceasefire, encroached upon. During this attack Major Pillay provided most accurate and close fire support to our attacking troops. When our troops were unable to consolidate their position at Budhi Dhah, Major Pillay was given the command of the force. He immediately stabilised the situation and personally led the infantry forward. By his inspiring leadership, he was able to integrate the infantry and artillery and to gain a foot hold on the Kalidhar ridge.

On 30th September, 1965, Major Pillay was detailed as affiliated Battery Commander to a battalion of the Madras Regiment for an offensive measure on Malla feature. The accurate and speedy fire support which contributed largely to the capture of Malla, was entirely due to the initiative and courage displayed by him in registering all the targets in spite of heavy enemy shelling.

Again on 3rd/4th October, 1965, Major Pillay displayed commendable presence of mind and brought down accurate and timely artillery fire to repulse repeated counter-attacks on an important hill feature held by the Sikh Light Infantry battalion and in Mahar battalion.

Throughout these operations Major Kannimel Thekkathil Madhusoothanan Pillay displayed courage, leadership, and remarkable initiative, which were in the best traditions of the Indian Army.

36. Major ANJAPARAVANDA THIMAIAH GANAPATHY (IC-12621), 6th Bn., The Sikh Light Infantry.

(*Effective date of award*—*4th October* 1965)

On 4th October, 1965, Major Anjaparavanda Thimaiah Ganapathy, was commanding a company of a battalion of the Sikh Light Infantry Regiment. The battalion was ordered to clear a point on Kalidhar, Jammu & Kashmir, which, notwithstanding the cease fire, had been encroached upon by Pakistani forces.

Major Ganapathy led his company in the face of stiff enemy opposition from entrenched positions supported by heavy artillery, mortar and Browning machine gun fire. Though his company strength was reduced to fifty per cent due to heavy casualties, it succeeded in dislodging the enemy from key positions and the preliminary objective of the battalion was achieved. In spite of heavy enemy shelling, Browning machine gun fire and small arms fire, he moved about fearlessly to encourage his men to achieve the objective.

In this action, Major Anjaparavanda Thimaiah Ganapathy displayed courage, initiative and devotion to duty of a high order.

37. 4443729 Sepoy DHARAM SINGH, 6th Bn., The Sikh Light Infantry.

(*Effective date of award*—*4th October* 1965)

On 4th October 1965, a company of the Sikh Light Infantry Regiment, in which Sepoy Dharam Singh was serving, was ordered to clear an encroachment on a feature near Kalidhar in Jammu & Kashmir, which had been made by Pakistani forces notwithstanding the ceasefire. When its advance was held up due to a minefield, which was covered by enemy medium machine gun fire and shelling, Sepoy Dharam Singh volunteered and crossed the minefield to give a lead to the others. His gallant act inspired them in achieving the objective in time.

Subsequently, during the counter-attack launched by the enemy, he killed two enemy soldiers who closed in on him. In this action Sepoy Dharam Singh displayed commendable courage and devotion to duty.

38. Major PRAVHAKAR SHANTARAM DESHPANDE (IC-3990), The Regiment of Artillery.

(*Effective date of award*—*10th October* 1965)

Major Parvhakar Shantaram Deshpande was the Battery Commander in direct support of a battalion. The battalion was engaged in clearing encroachments which had been made by Pakistani forces in the Barmer Sector, notwithstanding the ceasefire. During the second phase of the operations, our advancing column came under heavy fire from enemy tanks, machine guns and mortars. Major Deshpande reacted quickly from his observation post and brought down the fire of his battery on the enemy force. His position was completely exposed, but without regard to his personal safety, he continued to engage so that the troops he was supporting could withdraw to a safe area. He was wounded twice but refused to be evacuated and continued to direct the fire of the battery for over two hours. Subsequently mortar bomb fell next to him and he was seriously wounded and had to be evacuated. The courage and devotion to duty displayed by Major Deshpande was a source of inspiration not only to his unit but also to the Infantry he was supporting.

Major Pravbhakar Shantaram Deshpande displayed courage, devotion to duty and leadership of a very high order in keeping with the finest traditions of the Indian Army.

39. Captain SANSAR SINGH (IC-14605), 7th Bn., The Sikh Regiment.

(*Effective date of award—2nd November* 1965)

On the night of 2nd/3rd November, 1965, a Battalion of the Sikh Regiment in which Captain Sansar Singh was commanding a Company was ordered to clear a hill feature in Mendhar Sector, Jammu & Kashmir which had been encroached upon by Pakistani forces notwithstanding the cease-fire. The enemy was occupying strongly built bunkers flush with the ground. The enemy position had well-coordinated fire of a large number of small arms, Browning machine guns supported by rocket-launchers, mortars, and artillery. All approaches to the position led through extensive minefields and barbed wire obstacles. To get on to the objective, it was necessary to climb precipitous cliffs. Despite the arduous approach to the objective, the fortified enemy position and the formidable enemy opposition, Captain Sansar Singh led his company's assault onto the feature, exhorting his men to attack. Captain Sansar Singh displayed complete disregard to his personal safety, inspiring leadership and great courage in achieving the objective.

40. JC-18170 Subedar PIARA SINGH, Sikh Light Infantry (*Posthumous*).

(*Effective date of award—2nd November* 1965)

On the night 2nd/3rd of November 1965, Subedar Piara Singh was commanding a platoon in a Battalion of the Sikh Light Infantry Regiment. The battalion was ordered to clear a feature in Mendhar Sector in Jammu & Kashmir, which had been encroached upon by Pakistani forces, notwithstanding the ceasefire. His objective was a group of bunkers which were covering the approach to the ultimate objective of the battalion. This approach lay through a minefield and wire obstacles. He led the assault through the minefield in the course of which he lost twenty five men due to mines and artillery fire. Undaunted by these losses and with total disregard for his own safety, he led the charge on the enemy bunker from where a light machine gun was enfilading the other platoon. After silencing the light machine gun, he proceeded to the next bunker from where one 83 mm. rocket launcher was firing and holding up further advance. As he threw a grenade into the bunker, both his legs were blown up by 83 mm rocket, but the grenade he threw killed the occupants of the bunker. A few minutes later he also died, but after capturing his objective and exhorting his few remaining men to exploit further. In this mission Subedar Piara Singh displayed leadership and indomitable courage and made the supreme sacrifice in the best traditions of the Indian Army.

No. 16-*Pres.*/66.—The President is pleased to approve the award of the "VISHISHT SEVA MEDAL"/"DISTINGUISHED SERVICE MEDAL", *CLASS II*, to the undermentioned personnel for distinguished service of the exceptional order :—

1. Brigadier SIRI NIWAS PUNJ (IC. 2096), Engineers.
2. Lieutenant Colonel BHIMRAO VENKATRAO SHIVANE (IC-3813), Engineers.
3. Wing Commander KRISHNA DANDAPANI (3583), General Duties (Pilot).
4. Squadron Leader RAWA PRITPAL SINGH (4051), Technical Signals.
5. Squadron Leader LAKHMIR SINGH (4941), Technical Signals.

No. 17-*Pres.*/66.—The President is pleased to approve the award of the "VISHISHT SEVA MEDAL"/"DISTINGUISHED SERVICE MEDAL", *CLASS III*, to the undermentioned personnel for distinguished services of a high order :—

1. Flying Officer VED PRAKASH MEHTA (6591), Administrative and Special Duties.
2. Flying Officer DARA PHIROZE CHINOY (7199), General Duties (Pilot).
3. Pilot Officer ALEX PUTHENVEEDE MAMMEN (6800), Technical Engineering.
4. 12549 Warrant Officer DORAISWAMY IYER RAMAKRISHNAN, Electrician-I.
5. 25261 Warrant Officer REGHBIR SINGH, Fitter-I.
6. 16653 Warrant Officer BHASKARAN NAIR, Fitter Armourer.
7. 30541 Warrant Officer GOPAL NILAKANTH JOSHI, Fitter-I.
8. 36317 Flight Sergeant DATTA RAMBHADRA VARMA.
9. 19172 Flight Sergeant KANAI LAL MUKERJEE, Fitter Armourer.
10. 39277 Flight Sergeant AMOLAK SINGH, Fitter Armourer.
11. 44153 Flight Sergeant NARAYANAN CHANDRASEKHARAN, Fitter Armourer.
12. 25876 Flight Sergeant PRITAM SINGH MAJHAIL, Fitter-I.
13. 203441 Sergeant PURAN SINGH, F-II-A.
14. 37779 Sergeant BRAHMI GOVINDRAM, F-II-E.
15. 400206 Sergeant DILIP KUMAR MUKERJEE, F-II-E.
16. 204006 Flight Sergeant SEETHARAMAN AYYASWAMY, F-II-A.
17. 222454 Corporal KALARICKAL KURIAN PHILLIP, Electrician-I.
18. 218570 Corporal MADAYI PURHIYAPURAYIL JAYARAM, F-II-E.
19. 401264 Corporal BRAHMANPALLI KESARI RAO, F-II-A.
20. 401332 Leading Aircraftsman EANJUNEYULU MALLIKARJUNA, F-II-E.
21. 216853 Leading Aircraftsman THANUVAN GOPINATHAN, Radar Mechanic.
22. 256725 Aircraftsman SIKANDAR GULAB KULKARNI, Radar Operator.
23. 9310745 Sepoy PRITAM SINGH, Defence Security Corps.

Y. D. GUNDEVIA, Secy. to the President.

PLANNING COMMISSION

Panel on Welfare of Backward Classes

New Delhi, the 31st January 1966

No. SW/17(15)/64.—In partial modification of Resolution No. SW/17(15)/64, dated the 5th March 1965, it is hereby notified that the name of Shri K. L. Balmiki, M.P., may be added to the list of members of the Panel on Welfare of Backward Classes.

2. The other contents of the Resolution will remain unaltered.

ORDER

ORDERED that a copy of this Notification be communicated to all concerned.

ORDERED also that the Notification be published in the Gazette of India for general information.

G. R. KAMAT, Secy.

MINISTRY OF COMMERCE

New Delhi, the 22nd January 1966

No. 12/3/66-*E.Pty.*—In exercise of the powers conferred by sub-rule (1) of rule 133-V of the Defence of India Rules, 1962, the Central Government is pleased to order that all property in India, movable and immovable, belonging to, or held by, or managed on behalf of, Messrs. Mohammedin (India) Private Limited, 29, Colootola Street, Calcutta, shall vest in the Custodian of Enemy Property for India.

P. K. J. MENON, Jt. Secy.

RESOLUTION

Customs Tariff, Import Trade Control and Central Excise Tariff Nomenclature

New Delhi, the 1st February 1966

No. 1(54)*TRC*/66.—In modification of the Resolution of the late Ministry of International Trade No. 10(8)/63 GATT, dated the 17th March 1964, the Government of India have decided to entrust the Tariff Revision Committee with the revision of the Import Trade Control Schedule and the Central Excise Tariff Schedule.

2. Accordingly, the aforesaid Resolution shall be further amended as indicated below :—

(1) *For* the words "Customs Tariff", appearing as the subject of Resolution, the following words shall be *substituted* :—

"Customs Tariff, Import Trade Control and Central Excise Tariff Nomenclature".

(2) In paragraph 4, after sub-paragraph (5), the following sub-paragraphs shall be inserted :—

"(5A) to examine the classification of commodities in the Import Trade Control Schedule and make recommendations for its revision, taking into account in particular :—

(a) the proposed Import Tariff Schedule and the need for consistency between the interpretation of the Tariff and the Import Trade Control Schedules;

(b) the need for correlation of the Import Trade Control Schedule with the statistical classification of commodities in the import and export trade, so as to facilitate the framing of Imports Trade Control policy in greater detail.

(5B) to scrutinize the nomenclature adopted in the Central Excise Tariff Schedule (*viz.* the First Schedule to the Central Excises and Salt Act, 1944), and to suggest suitable amendments thereto; in doing so, the Committee will :—

(a) examine the desirability of achieving a closer alignment between the Customs Import Tariff Schedule and the Central Excise Tariff Schedule with a view to—

(i) ensuring as far as practicable, uniformity in the interpretation and administration of the two Schedules, and

(ii) facilitating the removal of doubts and difficulties in the levy of countervailing duties;

(b) examine also the question whether, and to what extent, the Central Excise Tariff Schedule can be aligned, for statistical purposes, with the system adopted for the maintenance of statistics of import and export trade."

(3) The following sentence shall be added at the end of paragraph 5 :—

"Similarly, the Committee will be concerned with the nomenclature and not with the rate structure as such of the Central Excise Tariff Schedule".

(4) The following words shall be added at the end of paragraph :—

"or such extended period as Government may decide".

ORDER

ORDERED that a copy of the Resolution be communicated to all concerned.

ORDERED also that the Resolution be published in the Gazette of India, for general information.

A. V. VENKATESWARAN, Jt. Secy.

AMENDMENT

New Delhi, the 3rd February 1966

No. 26(1)-*Tar*/63.—In the Committee of Inquiry set up to review the working of the Tariff Commission, Bombay, under the Government of India Resolution No. 26(1)-Tar/63, dated the 22nd January, 1966, published in the Gazette of India, the following persons have also been included as members of the Committee :—

Members

(i) Dr. D. T. Lakdawala,
Department of Economics,
University of Bombay,
Bombay.

(ii) Dr. K. S. Krishnaswamy,
Economic Adviser,
Planning Commission,
New Delhi.

ORDER

ORDERED that the Amendment be published in the Gazette of India for general information and copy thereof communicated to all concerned.

S. BANERJEE, Dy. Secy

MINISTRY OF PETROLEUM AND CHEMICALS

(Department of Petroleum)

RESOLUTION

New Delhi, the 1st February 1966

No. 10i(26)/65-*PPD*.—The Government of India have carefully considered the Report of the Working Group set up on 12-5-1964 under the Chairmanship of Shri J. N. Talukdar, formerly Chief Secretary, Government of West Bengal, to advise on the manner of determining ex-refinery and landed prices of petroleum products in the future and on other connected matters.

2. In this consideration, Government have taken particular note of two important factors that have been emerging of late, *viz., firstly*, the increasing production of crude oil in the country and the growth of indigenous refining capacity based on both local and imported crudes and, *secondly*, as a consequence, the steady and substantial diminution in the import of finished products and changes in the terms and conditions of such imports. These developments require, amongst other things, that producers of indigenous crude oil are assured of an adequate price consistent with the costs of exploration and production in the country. The practice followed hitherto has been to price indigenous crude delivered to the consumer on the basis of parity with the discounted and fluctuating prices of imported crude, from time to time. On crude imports, Government have been making efforts, with a fair measure of success, to secure prices that are in keeping with world market conditions. The establishment of import prices at fair and reasonable levels is important for the conservation of the country's foreign exchange resources, apart from being justified on purely commercial considerations. Government will, therefore, continue to work towards this objective with all the means at their disposal, as occasion requires. But in this situation, a modification of the existing practice of pricing indigenous crude is called for, as it does not provide an economic base for the conduct of oil exploration and production operations in the circumstances prevailing in the country. In other words, it is necessary to grant a measure of protection to indigenous crude producers and assure them of a price that is in keeping with the cost of their operations from time to time. Consistent with such crude costs, and in order to maintain the economics of refining operations at reasonable levels, ex-refinery product prices must be re-fixed appropriately. This would not, however, affect the policy of importing products, to the extent imports may be needed, on the best available terms.

3. After a careful study on the foregoing lines, Government have taken the following decisions :—

(i) Until further orders, the producers of indigenous crudes will, save in the cases in which a different basis for price fixation may exist under any agreement between Government and the producer, receive a price that is not less than the landed cost (exclusive of import duty, if any) calculated on the basis of the full posted f.o.b. prices of analogous crudes imported from the Middle East. Users of indigenous crude will be required or requested, as the case may be, to accept this price basis. If and when new circumstances arise, Government will reconsider the price basis now laid down.

(ii) Ex-refinery prices of bulk refined products in the cases of all refineries in the country, and landed prices, when applicable, will be fixed on the basis of import parity starting from full (*i.e.* undiscounted) f.o.b. postings at Abadan (at the lowest of Platt's) as on 18-5-65.

(iii) There will be levied on imported crude a protective import duty at a level determined by the related circumstances prevailing from time to time.

4. The recommendations of the Working Group in respect of the prices of bulk refined products, bitumen, lubricants, greases and specialities have been considered by Government against the above background and it has been decided to adopt and apply them with effect from the 1st February 1966, subject to the following modifications :—

(a) In the case of Bulk Refined Petroleum Products (including Bitumen), the basic ceiling selling prices will be determined on 'import parity', subject to f.o.b. postings (without any discounts) at Abadan (at the lowest of Platt's in respect of Bulk Refined Products) as on the 18th May 1965 being adopted as the basis; no variations from the postings as on that date will be allowed except when Government is satisfied that changes are justified.

(b) The requirements of Working Capital computed by the Group will be recalculated (with due regard to the rates of central duties of excise and customs and wharfage in force on the 1st December 1965) at 1/6th of the annual value of sales.

5. The current basic ceiling selling prices of Bulk Refined Petroleum Products (and Bitumen) to the consumers will remain unaltered, but there will be certain variations in the rates of Additional (Non-recoverable) Duties leviable under the Ministry of Finance (Department of Revenue) Notification No. 99/65, dated 26-6-1965, issued under the Mineral Products (Additional Duties of Excise and Customs) Act, 1958 (No. 27 of 1958) to allow for changes in the various elements in the build up of ceiling selling prices.

6. The existing system of 'block control' on marketing and distribution charges and profit of the oil marketing companies in respect of Lubricants/Greases/Specialities will be continued at the ceiling rates recommended by the Working Group but there will be a change in the rate of Additional (Non-recoverable) Duty applicable to these products in terms of the Notification of 26-6-1965, mentioned in para 5 above.

7. The decisions herein contained about the prices of oil products will remain in force till 31-12-1967, to begin with, and Government may extend their validity for a further period or periods.

8. In regard to some of the other recommendations of the Working Group, the decisions of Government will be announced in due course.

ORDER

ORDERED that a copy of this Resolution be communicated to all State Governments and Union Territory Administrations, Lok Sabha and Rajya Sabha Secretariats and the concerned Ministries and Departments of the Government of India.

ORDERED also that the Resolution be published in the Gazette of India for general information.

P. R. NAYAK, Secy.

MINISTRY OF INDUSTRY & SUPPLY

RESOLUTION

New Delhi, the 2nd February 1966

No. 6-4/65-*CemJ.*—With a view to examining the various matters relating to the development of the asbestos cement products industry, keeping them under constant review and making suitable recommendations to Government, the Government of India have decided to constitute a Panel under the Chairmanship of Dr. S. P. Varma, Industrial Adviser, Directorate General of Technical Development, New Delhi.

The Panel will consider *inter-alia* the following :

(a) availability of raw materials for the industry particularly asbestos fibre;

(b) complete substitution or part-substitution of imported fibre by indigenous fibre and measures necessary to bring about a sizeable reduction in the import bill for fibre;

(c) requirement of capital machinery for the industry, their indigenous availability and import of machinery, where necessary, with a view to assimilating new techniques developed abroad which may result in the increased use of indigenous fibre;

(d) diversification of production for the manufacture of special types of asbestos cement products, especially those which have not yet been manufactured in the country;

(e) training programme for the industry and research and development; and

(f) possible substitutes for asbestos cement products (*e.g.* asphaltic roofing sheets) as well as use of asbestos cement products as substitute for other products (*e.g.* G.I. Sheets).

The personnel of the Panel is as follows :—

Chairman

1. Dr. S. P. Varma, Industrial Adviser, Directorate General of Technical Development, New Delhi.

Members

1. Shri H. D. S. Hardie, Managing Director, Asbestos Cement Ltd., Mulund, Bombay & Managing Director, Hindustan Feredo Ltd.
2. Shri B. Kejriwal, General Manager, Hyderabad Asbestos Cement Products Limited, 128/48, Malcha Marg, Chanakyapuri, New Delhi-11.
3. Shri V. N. Somani, Shree Digvijay Cement Co. Ltd., Doon House, Ahmedabad.
4. Shri M. C. Basu, Mineral Economist, Indian Bureau of Mines, Nagpur.
5. Shri S. Malhotra, Officer on Special-Duty, Directorate General of Supplies and Disposals, New Delhi.
6. Shri S. N. Sachdev, Joint Director, Traffic (Transportation)-I, Railway Board, New Delhi.

Member-Secretary

1. Shri N. Biswas, Development Officer (Asbestos Products) Directorate General of Technical Development, New Delhi.

ORDER

ORDERED that a copy of the Resolution be communicated to all concerned and that it be also published in the Gazette of India for general information.

R. NATARAJAN, Under Secy.

MINISTRY OF HEALTH & FAMILY PLANNING

RESOLUTION

New Delhi, the 29th January 1966

No. F. 15-11/64-*LSGIII.*—In partial modification of this Ministry's Resolution No. F. 15-11(WS)/64-PH(WS&PHC) LSGIII, dated the 4th October 1965, the term of the Committee set-up for preparing a draft model enactment for setting up Statutory Water and Drainage Boards for Governments, has been extended by three months from the 1st February 1966.

ORDER

ORDERED that this Resolution be communicated to All the members, L.S.G. and P.H. Departments of All State Governments/Union Territories, All Ministries, Prime Minister's Sectt./the Private Secretary to the President Cabinet Secretariat, Comptroller and Auditor General, Planning Commission, Department of Parliamentary Affairs, Dte.G.H.S., C.M.P.O., for information.

GIAN PRAKASH, Jt. Secy.

RESOLUTION

New Delhi, the 1st February 1966

No. F. 14-47/65-*FPIII.*—In partial modification of this Ministry's letter No. 27-2/63-FP, dated the 11th August 1963, the Government of India are pleased to reconstitute the Family Planning Communication Research Committee which will now consist of the following :—

Chairman

1. Prof. P. C. Mahalanobis, F.R.S. Hony. Statistical Adviser, Cabinet Secretariat, King George Avenue, New Delhi.

Members

2. Shri S. N. Ranade, Principa Delhi School of Social Work, University of Delhi, Delhi.
3. The Financial Adviser, Ministry of Health.
4. Director, Central Health Education Bureau, Dte. G.H.S.
5. Representative of the Ford Foundation in India.
6. The Commissioner, Family Planning Dte. G.H.S.

Member-Secretary

7. Lt. Col. B. L. Raina, Director, Central Family Planning Institute, New Delhi.

The Members of the Committee may coopt additional Members for *ad-hoc* purpose.

The functions of this Committee will continue to be :—

(i) to advise on and coordinate family planning communication research programme;

(ii) to review the progress of family planning communication research,

(iii) to examine and recommend the proposals for family planning communication research referred to it;

(iv) to suggest other measures in furtherance of the objectives of the scheme, and

(v) to recommend applicants for grant of fellowships for family planning communication research.

Non-official members of this Committee shall be entitled to the grant of Travelling and Daily Allowances for visiting Communication Action Research Centres and for attending the meetings of the Committee as are admissible to an officer of the highest grade in Class I of the Central services. Members of the Committee who are Government Servants will draw Travelling and Daily Allowances as admissible to them from the source from which they get their pay.

ORDER

ORDERED that the copy of the Resolution be communicated to all concerned.

ORDERED also that the Resolution be published in the Gazette of India for general information.

B. MUKERJEE, Secy.

MINISTRY OF FOOD, AGRICULTURE, COMMUNITY DEVELOPMENT AND COOPERATION

(Department of Agriculture)

New Delhi, the 28th January 1966

No. 7-2/66-*LD.*—In terms of Rule V(2) of the Rules and Regulations of the Central Council of Gosamvardhana, the Government of India are pleased to nominate Shri P. Govinda Menon, Minister in the Ministry of Food, Agriculture, Community Development & Cooperation as Vice-President of the Council *vice* Shri Shah Nawaz Khan.

K. C. SARKAR, Under Secy.

RESOLUTIONS

New Delhi, the 31st January 1966

No. 6-5/64-*Econ.Py.*—The Government of India have decided that Dr. P. K. Mukherjee, Director, Programme Evaluation Organisation, Planning Commission, New Delhi, be included in the Panel of Economists constituted in the Government of India in the Ministry of Food and Agriculture (Department of Agriculture) Resolution No. 6-5/64-C(E) dated 25-9-64 as amended by Notification No. 6-5/64-Econ.Py

dated 30-4-65 and Resolution No. 6-5/64-Econ.Py dated 29-11-65, in place of Dr. J. P. Bhattacharjee, who has resigned from the Panel for taking up an assignment with the Food and Agriculture Organization.

The Government of India have also decided that Shri J. S. Sarma, Economic and Statistical Adviser, Ministry of Food & Agriculture, New Delhi be included in the Panel of Economists.

ORDER

ORDERED that the Resolution be communicated to all concerned.

ORDERED also that the Resolution be published in the Gazette of India for general information.

No. 6-20/65-*Genl.II*.—The Government of India have decided that:

1. Professor A. Abraham, Head of the Department of Botany and Dean, Faculty of Science, University of Kerala, Trivandrum.
2. Dr. K. Ramakrishnan, Associate Dean, Agricultural College and Research Institute, Coimbatore.
3. Dr. D. Sundareson, Animal Geneticist, Punjab Agricultural University, Ludhiana.

will also be members of the Panel of Agricultural Scientists constituted under this Ministry's Resolution No. 6-32/64-C(G) dated the 17th August 1964.

ORDER

ORDERED that a copy of the resolution be communicated to all the Ministries and Departments of the Government of India, all the State Governments and Union Territories, Planning Commission, Cabinet Secretariat, Prime Minister's Secretariat, Comptroller and Auditor General of India, President's Secretariat, Lok Sabha Secretariat, Rajya Sabha Secretariat, Parliament Library (5 copies), all Members of the Panel of Agricultural Scientists, Directors of Agriculture and Animal Husbandry in all States and Union Territories, all Attached and Subordinate Offices under the Ministry of Food & Agriculture (Department of Agriculture).

ORDERED also that the Resolution be published in the Gazette of India for general information.

B. SIVARAMAN, Secy.

(Department of Food)

RESOLUTION

New Delhi, the 15th January 1966

No. XVII(ix)-FY(T)/66.—The Government of India have had under consideration for some time past the need for setting up a committee to deal with the various aspects of fisheries statistics required to meet the operational needs of this Ministry and the State Fisheries Departments. It has now been decided to constitute a Standing Technical Committee on fisheries statistics in the Department of Food, as under:

Chairman

1. Fisheries Development Adviser.

Members

2. Economic & Statistical Adviser, Ministry of Food & Agriculture.
3. Statistical Adviser, Institute of Agricultural Research Statistics.
4. Representative of the Central Statistical Organisation, Deptt. of Statistics, Cab. Sectt.
5. Representative of the Dte. of National Sample Survey, Deptt. of Statistics Cab. Sectt.
6. Representative of the Agricultural Division of the Planning Commission.

Convener

7. Statistician in Charge of the fisheries statistics in the Deptt. of Food.

The committee will advise the Department of Food on the problems relating to concepts, definitions, classification and methodology for collecting, tabulating and analysing the operational fisheries statistics required by the Department of Food for its normal administrative purposes. It will also provide necessary guidance to the Statistical Cell being set up in the Department of Food and also to the Statistical Cells in the State Fisheries Department with regard to their programmes for development of fisheries statistics. The committee shall meet as and when found necessary.

ORDER

ORDERED that a copy of the Resolution be communicated to all State Governments, all Ministries and Departments of the Government of India, Cabinet Secretariat, Prime Minister's Secretariat, Indian Trade Commissioners, All Indian Embassies, High Commissioner for India in London, Director General of Commercial Intelligence and Statistics, Calcutta, High Commissioner for India in Pakistan, all Universities in India.

Ordered also that it be published in the Gazette of India.

GODWIN ROSE, Jt. Secy.

MINISTRY OF EDUCATION

New Delhi-1, the 3rd February 1966

No. F. 2-6/63-*PE*-2.—In continuation of the Ministry of Education Notification of even number dated the 18th September, 1965,

Shri G. P. BHALLA,
President,
Railway Sports Control Board,

is nominated on the Board of Governors of the National Institute of Sports, Patiala as *ex-officio* member till 24-7-1966 *vice* Shri Hardyal Singh retired.

R. L. ANAND, Under Secy.

(Department of Social Welfare)

New Delhi-1, the 5th February 1966

No. F. 1-100/65-*SW*-3.—The Central Social Welfare Board was re-constituted for a period of 3 years *vide* Ministry of Education Notification No. F. 1-20/62 SW-3, dated the 7th February 1963. The life of the re-constituted Board, therefore, expires on the 6th February 1966. Pending its further re-constitution, the Government of India are pleased to announce the extension of the term of the Board, as constituted on the date of issue of this notification, for a period of one month *i.e.* up to the sixth March 1966.

V. P. AGNIHOTRI, Dy. Secy.

MINISTRY OF IRRIGATION & POWER

RESOLUTION

New Delhi, the 2nd February 1966

No. DW.V.515(7)/63.—The problem of coastal erosion and measures necessary to tackle it on a scientific and co-ordinated basis has been engaging the attention of the Government of India for some time past. The problem is acute in Kerala and a long stretch of coastline is already affected there. In order to initiate, guide and implement the programme envisaged in Kerala in this behalf the Government of India, in consultation with the Government of Kerala have decided to set up a 'Beach Erosion Board'.

2. The composition of the Beach Erosion Board shall be as follows:—

Chairman

1. Chairman, Central Water & Power Commission, New Delhi.

Members

2. Development Adviser (Ports), Ministry of Transport and Aviation, New Delhi.
3. Dr. M. Manohar, Professor and Head of the Deptt. of Civil Engineering, Maulana Azad College of Technology, Bhopal.
4. Director, Central Water and Power Research Station, Poona.

Member-Secretary

5. Chief Engineer (Anti-sea erosion work to be nominated by the Kerala Government).

3. The Board will hold its meetings at such places as may be determined by the Chairman and may invite to its meetings such other person or persons as it may consider necessary. The meetings of the Board will be convened as often as necessary, but at least twice a year.

4. The Board may appoint such Committees or sub-Committees as it may consider necessary for any specific purpose.

5. The functions of the Board will be—

(i) To organise and co-ordinate collection, compilation, evaluation and publication of data relating to various natural phenomena and coastal processes which affect the coastline.

(ii) To promote and co-ordinate research into and development of designs of coastal engineering works.

(iii) To review and give technical approval to coastal protection works drawn up by the State Government and other authorities costing cover Rs. 5 lakhs each.

(iv) To arrange for technical assistance in the conduct of beach erosion studies and undertaking of protective works;

(v) To arrange for the training of personnel engaged in coastal engineering; and

(vi) To take such other steps as the Board may consider necessary for tackling the problem of coastal erosion in an economic and co-ordinated manner.

ORDER

ORDERED that this Resolution be communicated to all the State Governments and Union Territories, the Private and Military Secretaries to the President, Prime Minister's Secretariat, the Comptroller and Auditor General of India, the Planning Commission and the Ministries of Transport & Aviation, Defence, Education, Finance (Deptt. of Exp.) and (Deptt. of Coordination), Home Affairs, Railways, Works, Housing and Urban Development for information.

ORDERED that the Resolution be published in the Gazette of India and that the State Governments be requested to publish it in the State Gazettes for general information.

K. P. MATHRANI, Secy.

PRINTED IN INDIA BY THE MANAGER, GOVERNMENT OF INDIA PRESS FARIDABAD AND PUBLISHED BY THE MANAGER OF PUBLICATIONS, DELHI, 1966